



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ तैतालीसवां अंक जनवरी-मार्च, 2023

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ तैतालीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका
(जनवरी-मार्च, 2023)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124



सरकारी कामकाज हिंदी में करना
कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

आप शुरू तो कीजिए धीरे-धीरे
आपको लगने लगेगा ये तो बहुत
ही आसान है।





लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ तैतालीसवां अंक (जनवरी-मार्च, 2023)

अनुक्रमणिका

	पृ.सं.		पृ.सं.
पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5	5. वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाती हिंदी	25
पाठकों के नाम संदेश	6	डॉ. लाखा राम	
आपके पत्र	7	6. ऊर्जा संरक्षण	27
		सुश्री पूजा सिंह मंडल	
		7. आइये दर्शन करें श्री कृष्ण जन्मभूमि के	30
		ललित कुमार वर्मा	
		8. राष्ट्र के निर्माण में नारी का योगदान	36
		सुश्री सं.ग. श्रीमती	
		9. प्रकृति तथा मानव का संबंध	39
		सुश्री राजकुमारी शर्मा	
		10. मराठा नवजागरण और राष्ट्रीय प्रतिरोध	43
		प्रदीप तिवारी	
		11. ग्रीष्म ऋतु में पथ्य और अपथ्य भोजन	45
		हीरा बल्लभ भट्ट	

लेख

1. राजभाषा हिंदी प्रगति की ओर
संजीव कुमार
2. हिंदी कथा साहित्य और समाज
मेहरबान सिंह नेगी
3. भारत माता
जगदंबा प्रसाद शुक्ला
4. स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका
सुश्री विदुषी वत्स

	पृ.सं.		पृ.सं.
		कहानी	
12. भूत	47	20. आस्था अमात्य की	65
संजय कुमार सिंह		सुश्री आरती शर्मा	
		21. पतंग	66
		सुश्री मीना कुमारी	
		22. यादों के फूल	66
13. दुआ	52	केदारनाथ प्रसाद	
संदीप भसीन		23. मैं पिता	67
14. वह कौन है?	53	मुनीष भाटिया	
राजकुमार		24. मेरे पापा	68
15. कुछ पल ठहर तो सही	54	सुश्री ज्योति यादव	
पंकज अरोड़ा		25. दो बेटियों की माँ	69
16. गजल	55	सुश्री कुसुम लता	
धर्मवीर भारती		26. संकल्प	70
17. महारानी अहिल्या देवी	56	श्रीमती सोनिया बाफिला	
बनवारी लाल सोनी		27. बचपन	71
18. गजल	62	अंजीत कुमार	
सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'		28. शब्द असरदार होते हैं	72
19. आओ खेलें होली	63	सुमित कुमार	
नवीन 'एकान्त' दैया			



स्वत्वाधिकार

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन

“लेखापरीक्षा प्रकाश”

(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

एक सौ तैतालीसवां अंक
(जनवरी-मार्च, 2023)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

सुश्री रीमा प्रकाश

अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री भवानी शंकर

महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अनिल कुमार पिलानी

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

सुश्री मीनाक्षी

सहायक प्रशासन अधिकारी

श्री हीरा बल्लभ भट्ट

सलाहकार

रचना चयन समिति

श्री अनिल कुमार पिलानी

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री मीनाक्षी

सहायक प्रशासन अधिकारी

सुश्री रेखा

सहायक प्रशासन अधिकारी

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेसंस

जी-194, सेक्टर-2, बवाना, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

संपादकीय

हिंदी पत्रिका का एक सौ तैतालीसवां (जनवरी-मार्च, 2023) अंक जो गद्य और पद्य विधाओं से सराबोर है, आपके समक्ष प्रस्तुत है। विश्व में किसी भी देश की पहचान उसकी भाषा और संस्कृति से ही होती है, राजभाषा के बिना संस्कृति मूक होकर लगभग मृतप्राय हो सकती है। शायद इसलिए संपूर्ण विश्व में प्रत्येक देश की अपनी एक विशेष राजभाषा या राष्ट्रभाषा या मातृभाषा और संस्कृति है, जिससे अन्य देशों में उसका वर्चस्व बना रहता है। यह भी सत्य है कि यदि कोई देश अपनी मूल भाषा का त्याग कर दूसरे देश की भाषा पर आश्रित होता है तो वह देश सांस्कृतिक रूप से पराधीन ही हो जाता है, क्योंकि बचपन से ही हम जिस भाषा में संस्कारित होते हैं, वही भाषा हमारे मानसिक विस्तार और विकास की सीमा तय करती है।

भाषा भाव और विचार की संवाहक है। देश के सामाजिक परिवेश काल और स्थान के साथ भाषा का स्वरूप भी निरंतर परिवर्तनशील रहता है या यूँ कहा जाये कि भाषा निरंतर विकसित होती रही है।

हमारी राजभाषा हिंदी जो काफी लम्बी कालावधि से अस्तित्व में है तथा विभिन्न सौपानों और स्वरूपों तथा अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए इसके संघर्षों का लम्बा सफर तय करते हुए अपने आज के इस स्वरूप में हमारे समक्ष है। हिंदी को इसके संघर्ष में हमारा योगदान यही रह सकता है कि हम इसका प्रयोग निरंतर करते रहें और लेखापरीक्षा प्रकाश पत्रिका के माध्यम से न केवल नवल लेखक, लेखिकाओं, कवि, कवयित्रियों की रचनाएं पाठकों तक पहुंचती है अपितु हिंदी के प्रति हम अपने कर्तव्य का निर्वहन भी कर पा रहे हैं। यह प्रयास भले ही सागर में बूँद के समान हो परंतु इन्हीं प्रयासों से हम हिंदी को राजभाषा के आधिकारिक दर्जे के साथ-साथ शायद भविष्य में कभी राष्ट्रभाषा का सम्मान भी दिलाने में सफल हो सकते हैं।

इस अंक में भी कुछ नये रचनाकारों ने अपनी रचनाएं सांझी की हैं तथा अपने विचार प्रखर रूप से प्रस्तुत किये हैं। प्रधान संपादक के रूप में सभी रचनाकारों से मेरा अनुरोध है कि आप हिंदी की अधिकाधिक श्रेष्ठ रचनाएं इस पत्रिका के जरिये पाठकों तक पहुंचायें तथा पाठकगण भी अपने विचार, सुझाव हमें भेजते रहें जिससे पत्रिका के स्वरूप को उत्कृष्ट बनाया जा सके।

आपका शुभाकांक्षी

भवानी शंकर

प्रधान संपादक

नई दिल्ली

अस्वीकरण — पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के नाम संदेश

प्रिय पाठकवृन्द,

विभागीय त्रैमासिक पत्रिका का एक सौ तैतालीसवां अंक (जनवरी-मार्च, 2023) आपको सौंपते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है। हम अपने विभागीय और विभागेत्तर रचनाकारों की भावात्मक एवं सुरुचिपूर्ण रचनाओं को 'लेखापरीक्षा प्रकाश' में समाविष्ट कर अपने पाठकों के मनोरंजन एवं ज्ञानवर्धन का प्रयास करते हैं।

हमें इस बात की प्रसन्नता है कि हमारे पाठकों के पत्रों के माध्यम से जो प्रतिक्रिया प्राप्त होती हैं उससे पता चलता है कि आप पत्रिका की रचनात्मकता को आत्मसात करते हुए इसका पठन रुचिपूर्वक कर रहे हैं। आपके पत्र आपकी अभिरुचि, भावों की अभिव्यक्ति और विशेषकर राजभाषा के प्रति आपके अथाह प्रेम को दर्शाते हैं। यही अभिरुचि और प्रेम आपको लेखक बनने की क्षमता प्रदान कर सकता है।

विभागीय कार्यप्रणाली के लेख विशेष रूप से आमंत्रित हैं। रचनाकारों से अनुरोध है कि रचना प्रेषित करते समय ध्यान रहे कि रचना संतुलित, सारगर्भित, स्पष्ट एवं रचनाकार के विवेकानुसार उत्कृष्ट तथा मूलकृति हो। रचना के अन्त में स्वरचित एवं अप्रकाशित होने का प्रमाण-पत्र हस्ताक्षर करके साथ में एक पासपोर्ट साईज की फोटो अवश्य प्रेषित करें। हम अपने क्रमिक अंकों में आपको उत्कृष्ट एवं सारगर्भित सामग्री पेश करते रहेंगे।

जय हिन्द – जय भारती

नई दिल्ली

आपका शुभाकांक्षी
(अनिल कुमार पिलानी)
संपादक

आपके पत्र

विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है।

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ इकतालीसवां अंक प्राप्त हुआ, इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। यह अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय हैं। इस अंक में प्रकाशित सुश्री राजकुमारी शर्मा द्वारा लिखित 'हिंदी पखवाड़े की महत्ता', श्री योगेश कुमार मिश्र द्वारा लिखित 'जीवन में श्री राम और श्री कृष्ण', श्री बी.एस. चौहान द्वारा लिखित 'अनुभूति' और श्री रमेश वर्मा द्वारा लिखित 'माँ' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
तमिलनाडु, चेन्नई

उत्कृष्ट श्रेणी के संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई।

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ इकतालीसवें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं। रचनाओं के मध्य छाया चित्र अत्यंत सार्थक, सुंदर एवं विषयानुकूल हैं। 'स्वतंत्र भारत @ 75 : ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भर, 'विश्व स्तर पर हिंदी का महत्व', 'देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका', 'भारत में जनसंख्या नियंत्रण कानून की प्रासंगिकता', 'एक भारत श्रेष्ठ भारत', 'आत्मनिर्भर भारत' एवं 'माँ' आदि रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। उत्कृष्ट श्रेणी के संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हमारे विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

त्रैमासिक गृह ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ इकतालीसवें अंक के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल के माध्यम से सहर्ष प्राप्त हुई। पत्रिका की साज-सज्जा, आवरण पृष्ठ समेत कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित चित्र अत्यंत ही मनमोहक हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं न केवल उच्चकोटि की हैं अपितु ज्ञानवर्धक व प्रेरणादायी भी हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ हमारे विभाग के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. लेखा अधिकारी (हि.अ.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.)
बिहार, पटना

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं।

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के इकतालीसवें अंक की ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। सुश्री राजकुमारी शर्मा द्वारा रचित लेख 'हिंदी पखवाड़े की महत्ता', श्री प्रदीप तिवारी का लेख 'भाषा का सवाल

कितना प्रासंगिकता', सुश्री अनुराधा सूद की रचना 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' एवं श्री हीरा बल्लभ भट्ट द्वारा रचित लेख 'मुख्यालय में' सर्वाधिक रोचक एवं सराहनीय हैं। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-।।)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ इकतालीसवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। पूर्व अंकों की भांति इस अंक में भी समाहित सभी रचनाएं श्रेष्ठ, ज्ञानवर्धक एवं उच्चकोटि की हैं। विशेषकर श्री अभय राम सिंह का लेख 'क्रांतिकारियों का बसंती चोला', श्री प्रशांत त्रिम्बक कपाले की कहानी 'नई सुबह', श्री बी.एस. चौहान की कहानी 'अनुभूति', सुश्री सुमेधा अमर की कविता 'आत्मनिर्भर भारत', सुश्री अनुराधा सूद की कविता 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' एवं श्री केदार नाथ प्रसाद की कविता 'गुलमोहर यादों के' आदि सराहनीय हैं। पत्रिका के कुशल एवं सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। कार्यालय परिवार पत्रिका की अविरल प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता है।

वरिष्ठ लेखाधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)-।
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

पत्रिका अपने पूर्व अंकों की तरह बहुत ही उच्चकोटि के बेहतरीन ज्ञान तथा मनोरंजन से भरे हुए रचनाओं को समाहित किए हुए हैं।

‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ इकतालीसवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक हैं। पत्रिका अपने पूर्व अंकों की तरह बहुत ही उच्चकोटि के बेहतरीन ज्ञान तथा मनोरंजन से भरे हुए रचनाओं को समाहित किए हुए हैं, इसके लिए पत्रिका परिवार एवं संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई। वैसे तो सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं पर विशेष रूप से लेखों में श्री विनय कुमार गर्ग का ‘स्वतंत्र भारत @ 75 : ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भरता’ में बिन्दुवार तरीके से देश की आजादी की यात्रा में विभिन्न क्षेत्रों में हुए विकास और चुनौतियों का उल्लेख किया है। श्री अभय राम सिंह के लेख ‘क्रांतिकारियों का बसंती चोला’ में देश के लिए वीरों के बलिदान में बसंत रंग के महत्व को बखूबी बताया गया है। इसके अलावा, श्री महेश म. जयसिंघानी का ‘खुशहाल जीवन जीने के मूलमंत्र’, श्री प्रदीप तिवारी का ‘भाषा का सवाल कितना प्रासंगिक’, श्री योगेश कुमार मिश्र का ‘जीवन में श्री राम और श्री कृष्ण’, श्री लाखा राम का ‘भारत में जनसंख्या कानून की प्रासंगिकता’ आदि लेख भी उल्लेखनीय हैं। कहानियों में श्री प्रशांत त्रिम्बक कपाले की कहानी ‘नई सुबह’ में संघर्ष से कामयाबी के सफर को दिखाया गया है, जो हृदयस्पर्शी है तथा श्री बी.एस. चौहान की कहानी ‘अनुभूत’ और श्री संजय कुमार सिंह की कहानी ‘चल उड़ जा रे पंछी’ भी मार्मिक हैं। कविताओं में सुश्री सुमेधा अमर की कविता ‘आत्मनिर्भर भारत’ में हमारे

देश की विविधता के साथ उपलब्ध संसाधनों का प्रयोग करते हुए आगे बढ़ने का संदेश बखूबी दिया गया है। इसके अतिरिक्त श्री अमित कुमार की ‘जीवन – एक सफर’, श्री केदार नाथ प्रसाद की ‘गुलमोहर यादों के’, श्री रमेश वर्मा की ‘माँ’ आदि कविताएं अत्यंत ही सराहनीय हैं। श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया के यात्रा वृत्तांत ‘आंखों देखी बाबा आदम की धरती – अफ्रीका (भाग-4)’ अफ्रीका की एक सुंदर छवि प्रस्तुत करने में सफल हुई है। पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को एक बार पुनः साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

लेखा अधिकारी (प्रशा. हि.से.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं. हक.)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पत्रिका की आंतरिक साज-सज्जा काफी आकर्षक है।

हिंदी पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ इकतालीसवें अंक की ई-प्रति लिंक के माध्यम से प्राप्त हुई है, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पत्रिका की आंतरिक साज-सज्जा काफी आकर्षक है। प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। विशेष रूप से श्री विनय कुमार गर्ग की रचना स्वतंत्र भारत @ 75 : ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भर प्रेरक हैं। सुश्री राजकुमारी शर्मा की रचना ‘हिंदी पखवाड़े की महत्ता’ हिंदी भाषा के महत्व के साथ-साथ कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाए जाने के उद्देश्य को भी वर्णित करती है। सौर ऊर्जा पर आधारित सुश्री नेहा यादव का लेख न केवल ज्ञानवर्धक है बल्कि सभी को प्रदूषण रहित सौर ऊर्जा पर आधारित उपकरणों के साथ

उपयोग हेतु प्रेरित भी करती है। सुश्री सं.ग. श्रीमती की रचना 'विश्व स्तर पर हिंदी का महत्व' वैश्विक स्तर पर हिंदी की महत्ता को प्रतिष्ठित करती है। श्री अमित कुमार की कविता 'जीवन – एक सफर' जिंदी में आने वाली चुनौतियों का साहस के साथ सामना करने की प्रेरणा देती है। मन की गहराइयों से रचित श्री रमेश वर्मा (बनारसी) की कविता 'माँ' अत्यंत हृदयस्पर्शी बन पड़ी है। श्री हीरा बल्लभ भट्ट की रचना एवं प्रकाशित चित्र मुख्यालय में हिंदी पखवाड़ा के सफल आयोजन को प्रदर्शित करते हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं।

मुख्यालय द्वारा प्रकाशित ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ इकतालीसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं। श्री विनोद कुमार शर्मा की 'देश की सर्वमान्य भाषा हिंदी', श्री संजय कुमार सिंह की 'चल उड़ जा रे पंछी', श्री अमित कुमार की 'जीवन – एक सफर' एवं श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया की 'आंखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका (भाग-4)' रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका को

सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशा.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
पंजाब, चण्डीगढ़

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट, बोधगम्य, रोचक तथा संग्रहणीय हैं।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ इकतालीसवें अंक की प्राप्ति हुई है, अतः आपको बहुत-बहुत साधुवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट, बोधगम्य, रोचक तथा संग्रहणीय हैं। ये रचनाएं राजभाषा से संबंधित नीतियों के अनुपालन तथा प्रचार-प्रसार हेतु बनाये गये विविध कार्यक्रमों में यह बहुत ही उपयोगी एवं सहायक हैं। पत्रिका में सम्मिलित सुश्री नेहा यादव का लेख 'सौर ऊर्जा : ऊर्जा का अक्षय स्रोत', सुश्री आरती शर्मा का लेख 'कार्यालयों में बिजली की फिजूलखर्ची और उससे संबंधित कुछ प्रश्न-क्या-के माध्यम से', श्री संजय कुमार सिंह की कहानी 'चल उड़ जा रे पंछी' तथा श्री अमित कुमार की कविता 'जीवन एक सफर' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल प्रकाशन के लिए पुनः बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रभारी अधिकारी (रा.भा.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
राजस्थान, जयपुर

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है।

‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ इकतालीसवें अंक का ई-संस्करण अग्रेषित करने हेतु सहर्ष धन्यवाद। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देती हैं। सभी रचनाएं सुरुचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं इसमें प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक हैं। पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत लुभावना है एवं पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानियां, कविताएं एवं यात्रा वृत्तांत भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाले हैं। विशेषकर सुश्री नेहा यादव का लेख ‘सौर ऊर्जा : ऊर्जा का अक्षय स्रोत’, श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया का यात्रा वृत्तांत ‘आंखों देखी बाबा आदम की धरती: अफ्रीका’, श्री रमेश वर्मा की कविता ‘एक भारत, श्रेष्ठ भारत’ तथा श्री बी.एस. चौहान की कहानी ‘अनुभूति’ अति प्रभावी हैं। इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी को बधाईयां एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, केन्द्रीय
चेन्नै

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाश हेतु हार्दिक बधाई।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ इकतालीसवें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं

रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर सुश्री सुमेधा अमर, वरिष्ठ उप महालेखाकार की रचना ‘आत्मनिर्भर भारत’, सुश्री अनुराधा सूद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना ‘एक भारत, श्रेष्ठ भारत’ तथा सुश्री नेहा यादव, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक का लेख ‘सौर ऊर्जा : ऊर्जा का अक्षय स्रोत’ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)- II,
महाराष्ट्र, नागपुर

पत्रिका के निरंतर श्रेष्ठ प्रकाशन एवं संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाईयां।

‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ इकतालीसवें अंक जो ई-मेल के माध्यम से प्रेषित मुख्यालय की बेवसाइट से डाउनलोड कर प्राप्त की गई। पत्रिका के इस अंक के प्रेषण के लिए सहर्ष सधन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं रोचक हैं। पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं के मध्य रचनानुसार छायाचित्र अत्यंत सार्थक हैं। पत्रिका में विशेषकर ‘खुशहाल जीवन जीने के मूल मंत्र’ एक परिपूर्ण व्यक्तित्व विकास से परिपूर्ण तथा जीवन को दिशा देने वाला लेख है। ‘सौर ऊर्जा – ऊर्जा का अक्षय स्रोत’ जानकारी पूर्ण और विचारणीय लेख है। ‘कार्यालयों में बिजली की फिजूलखर्ची ...’ बिजली के बचत पर सोचनीय लेख है जिस पर अमल

करना समय की मांग है तथा जरूरत भी है। कहानी के क्षेत्र में 'अनुभूति' उत्कंठावर्धक रोचक कहानी है। 'नई सुबह' पर्यावरण के प्रति सजगता निर्माण करने वाली छोटी परंतु प्रेरक और अच्छी कहानी है। कविताओं की श्रेणी में 'आत्मनिर्भर भारत', 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' और 'माँ' उल्लेखनीय हैं। पत्रिका के निरंतर श्रेष्ठ प्रकाशन एवं संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाईयां। इस पत्रिका में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों को बधाईयां और हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि. उप महालेखाकार (प्रशा.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.-।।।),
महाराष्ट्र, नागपुर

पत्रिका के आवरण पृष्ठ एवं इनमें समाहित छाया चित्र आकर्षक एवं विषय अनुकूल हैं।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ इकतालीसवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इस हेतु सादर धन्यवाद। निर्देशानुसार उक्त ई-संस्करण का लाभ उठाने के लिए इस कार्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी गण को लिंक प्रेषित कर दिया गया है। पत्रिका के आवरण पृष्ठ एवं इनमें समाहित छाया चित्र आकर्षक एवं विषय अनुकूल हैं। रचनाकारों द्वारा लिखित समस्त रचनाएं एवं लेख ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित पत्रिका परिवार को सफल प्रकाशन हेतु आत्मिक बधाई प्रेषित हैं।

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
छत्तीसगढ़, रायपुर

सदैव की भांति इस अंक की सभी रचनाएं उच्च स्तरीय, बहुआयामी, सुसंपादित और मन-आत्मा पर गहरा प्रभाव डालने वाली हैं।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ इकतालीसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई। अतः आभार स्वीकार करें। ई-पत्रिका का प्रकाशन पर्यावरण की दृष्टि से आवश्यक एवं वर्तमान में प्रासंगिक दोनों ही हैं, अतः इस संबंध में आपका संपादक मंडल विशेषरूप से बधाई का पात्र है। सदैव की भांति इस अंक की सभी रचनाएं उच्च स्तरीय, बहुआयामी, सुसंपादित और मन-आत्मा पर गहरा प्रभाव डालने वाली हैं। पत्रिका की छपाई, साज-सज्जा और रचनाएं प्रेरणास्पद, सौंदर्य बोध से युक्त एवं ज्ञानवर्धक हैं और साथ ही पत्रिका के मुख्य आवरण पृष्ठ बड़ी ही सुंदरता से चयनित किये गये हैं। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं उच्चकोटि की हैं, लेकिन कुछ रचनाएं अनायास ही ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं। पत्रिका में संकलित श्री विनय कुमार गर्ग जी द्वारा रचित 'स्वतंत्रत भारत @ 75: ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भर', सुश्री राजकुमारी शर्मा की रचना 'हिंदी पखवाड़े की महत्ता', डॉ. लाखा राम की 'भारत में जनसंख्या नियंत्रण कानून की प्रासंगिकता', सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा' की 'गजल' तथा सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम' की 'गजलें' विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका के संपादक मंडल व रचनाकारों को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई। यह पत्रिका इसी प्रकार 'नभ स्पर्श दिप्तम' के प्रतिमान को साकार करती रहे। आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के

उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगन्धा' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चण्डीगढ़

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, शिक्षाप्रद तथा रुचिकर हैं।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' की हिंदी त्रैमासिक पत्रिका के एक सौ इकतालीसवें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं पठनीय, शिक्षाप्रद तथा रुचिकर हैं। श्री विनय कुमार गर्ग द्वारा रचित 'स्वतंत्रता भारत @ 75: ईमानदारी के साथ आत्मनिर्भर' हमें ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, चरित्रवान, उच्च नैतिक मानक, कार्य की उच्चतम गुणवत्ता, प्रमाणिक और आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करती हैं। सुश्री राजकुमारी शर्मा द्वारा रचित 'हिंदी पखवाड़े की महत्ता' के द्वारा कार्यालय में हिंदी पखवाड़े को मनाने के पीछे कारण और आयोजित की जाने वाली

विभिन्न प्रतियोगिता के बारे में बताया गया है। श्री अभय राम सिंह द्वारा रचित 'क्रांतिकारियों का बसंती चोला' अदम्य साहस और शौर्य का प्रतीक है। श्री योगेश कुमार मिश्र द्वारा रचित 'जीवन में राम और श्री कृष्ण' जीवन में आध्यात्म और सर्वशक्तिमान की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। सुश्री आरती शर्मा द्वारा रचित 'कार्यालयों में बिजली की फिजूलखर्ची और उससे संबंधित कुछ प्रश्न-क्या-के माध्यम से बिजली के दुरुपयोग न करने की अपील की गई है। श्री अमित कुमार द्वारा रचित 'जीवन – एक सफर' हर परिस्थितियों में सफर तय करने की सीख देता है। सुश्री लीना दरियाल 'सत्यम' द्वारा रचित 'गजलें' बहुत अच्छी लगी। पत्रिका के सुंदर प्रकाशन एवं उसकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिए इस कार्यालय की ओर से शुभकामनाएं।

वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I),
महाराष्ट्र, मुम्बई



राजभाषा हिंदी प्रगति की ओर



संजीव कुमार
वरिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

भाषा हमारे विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। भारत विभिन्न भाषाओं और बोलियों वाला अद्भुत देश है। हिंदी सभी भारतीय भाषाओं के आपसी सौहार्द और अनेकता में एकता का प्रतीक है। किसी भी राष्ट्र, समाज और सभ्यता की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है। भाषा केवल संवाद की ही नहीं अपितु संस्कृति और संस्कारों की संवाहक भी होती है। एक लोकतांत्रिक राष्ट्र की शासन और प्रशासनिक व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य सभी नागरिकों का कल्याण होता है। इस उद्देश्य के लिए भाषा की महत्ता बहुत बड़ी होती है। हिंदी को जब संवैधानिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया जा रहा था, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी की व्यापकता और सार्थकता को जानने के बाद ही हिंदी को राजभाषा का दर्जा

दिया था। सरकार के कार्यों की जानकारी आम नागरिकों तक पहुंचाने के लिए, सरकारी कामकाज में आम नागरिकों की बोलचाल की भाषा होना बहुत जरूरी है। हिंदी भाषा ने निरंतर प्रगति की है। इस भाषा में वह गुण विद्यमान हैं, जो एक प्रगतिशील भाषा में होने चाहिए। संविधान में संवैधानिक रूप से 22 भाषाओं को मान्यता प्राप्त है। हिंदी ने उन सभी भाषाओं के शब्दों को अपने आप में समाहित किया और करती रहेगी, जिनका प्रचलन लोगों के बीच आम है। नए-नए शब्दों को समाहित करने के गुण, बदलते समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने का उत्साह इसकी जीवंतता का प्रमाण है। हिंदी के इसी समावेशी गुण के कारण ही संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर 1949 के दिन हिंदी को संवैधानिक रूप से भारत संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया।

किसी भी राष्ट्र के विकास, प्रशासन एवं जनमानस की समस्याओं के प्रभावी निराकरण हेतु उस राष्ट्र की बोली और समझी जाने वाली भाषा जब एक होती है, तब राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है एवं जनमानस खुशहाल रहता है। वर्तमान में हिंदी मात्र प्रशासन की ही भाषा नहीं बल्कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा भी बन गई है। वित्त और कारोबार के क्षेत्र में हिंदी की जड़ें मजबूत हुई हैं। एक समय था जब भारत की राजभाषा हिंदी अंग्रेजी के पीछे चल रही थी। परन्तु हिंदी के प्रगतिशील गुण ने इसके महत्व को बहुत अधिक बढ़ा दिया, जिसे राजभाषा हिंदी का विकास कहा जा सकता है। इसके लिए हिंदी भाषी लोगों की तरह हिंदीतर प्रदेशों के लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किसी भी देश की उन्नति सही दिशा में हो तो उस देश की राजभाषा तथा

मातृभाषा की अनदेखी करना मुश्किल होता है अर्थात् देश के विकास के साथ अपनी भाषा का भी विशेष महत्व है। दूसरे शब्दों में हिंदी का विकास भारत के अपने विकास पर निर्भर है। वैश्विक बाजार में अगर भारत की भूमिका बढ़ेगी तो निश्चित रूप से हिंदी का क्षेत्र भी बढ़ेगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि राजभाषा हिंदी अपनी सीमाओं से बाहर आ चुकी है। अब अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की भाषा बन रही है। हिंदी राजभाषा से एक नई वैश्विक भाषा के रूप में बदल रही है। कंप्यूटर और मोबाइल के आ जाने के बाद पूरे विश्व में सूचना क्रांति आ गई। लोग घर बैठे ही इंटरनेट पर विश्व की, कहीं की भी जानकारी प्राप्त करने लगे हैं। शुरुआत में कंप्यूटर और इंटरनेट केवल अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध थे, लेकिन विश्व में हिंदी भाषा की बढ़ती प्रतिष्ठा/मांग को दृष्टिगत रखते हुए अब फेसबुक, गूगल सर्च और ट्विटर ने हिंदी को विशेष महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

आज दुनिया में तेजी से हिंदी का वर्चस्व बढ़ रहा है। वर्ष 1900 से 2021 के दौरान अर्थात् 121 वर्ष में हिंदी के बढ़ने की गति 175.52 प्रतिशत रही है। यह अंग्रेजी की गति 380.71 प्रतिशत के बाद सबसे तेज रही है। भारत

जैसे-जैसे प्रगति के पथ पर बढ़ा इसके साथ विशेष रूप से हिंदी की मांग भी बढ़ी। वर्तमान में दुनियाभर में 64.6 करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं। यह संख्या उन 53 करोड़ लोगों के अलावा है, जिनकी मातृभाषा हिंदी है। गूगल पर सात वर्ष में हिंदी सामग्री 94 प्रतिशत की दर से बढ़ी है तथा गूगल पर 10 लाख करोड़ पृष्ठ हिंदी में उपलब्ध हैं। दुनिया में 10 सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले अखबारों में शीर्ष 6 हिंदी भाषी हैं। भारत से बाहर 260 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। उपर्युक्त सभी बातें दुनिया में हिंदी का तेजी से बढ़ता वर्चस्व दर्शाता है। भाषा का व्यवहारिक होना बहुत आवश्यक है। यदि भाषा व्यवहारिक नहीं है तो उसका प्रचार-प्रसार व विकास असफल हो सकता है। हिंदी के अलावा जिन भाषाओं के शब्दों का प्रचलन आम लोगों के बीच सामान्य हो गया है। उन शब्दों को देवनागरी स्वरूप में अपनाने/समाहित करने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। हिंदी भाषा ने इसे बखूबी किया और आगे भी करती रहेगी। उदाहरणतः रेल को 'लोहपथगामिनी' और लीवर को 'यकृत' कहने की कोई जरूरत नहीं होनी चाहिए। भाषा जितनी सहज, सरल और सुगम होगी उसका विकास उतनी तेजी से

होगा। सोचने की प्रक्रिया अपनी मातृभाषा में ही होती है, इसलिए नेल्सन मंडेला ने कहा था — यदि आप किसी व्यक्ति से उसकी भाषा में बात करते हो तो वह उसके दिमाग में जाती है। अनुसंधान अपनी भाषा में हो तो देश की ज्यादा से ज्यादा युवा पीढ़ी की ऊर्जा का प्रयोग देश की प्रगति में किया जा सकता है।

बिना अंग्रेजी के मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई असंभव समझी जाती है, परन्तु मध्य प्रदेश पहला ऐसा राज्य बन गया है, जहां देश में पहली बार हिंदी में एम.बी. बी.एस. की पढ़ाई होगी, यह एक बहुत बड़ा निर्णय है तथा बहुत से लोगों को अंग्रेजी की मानसिकता से आजादी दिलाएगा। ऐसे बहुत से देश हैं जो अपनी मातृभाषा में मेडिकल की पढ़ाई करवा रहे हैं जैसे यूक्रेन, रूस, जापान, चीन, कीर्गीस्तान तथा फिलीपींस। हिंदी के प्रगतिशील गुण ने ही इसे संभव बनाया है। सभी बुद्धिजीवियों व पढ़े-लिखों का यह नैतिक व संवैधानिक दायित्व बनता है कि वे हिंदी के विकास के लिए कृत संकल्प हों। हम सब को मिलकर हिंदी भाषा को इसी तरह प्रगति के पथ पर ले जाना है ताकि विश्व पटल पर हिंदी को वही प्रतिष्ठा मिले जो अंग्रेजी को मिलती है।

हिंदी कथा साहित्य और समाज



मेहरबान सिंह नेगी

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)

भूखण्ड 191 (एफ 2), सेक्टर 4

वैशाली, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201010

हिंदी कथा साहित्य का इतिहास बहुत पुराना है। ऋषि-मुनियों, तपस्वियों, मनीषियों एवं मूर्धन्य विद्वानों द्वारा समाज के हितार्थ रचित वैदिक-पौराणिक कथाओं को साक्षर समाज पढ़ता और निरक्षर वर्ग समकालीन विद्वान कथावाचकों के मुखरविन्द से परम्परागत तौर पर आदि काल से अब तक सुनता आया है। आपने भी कई दन्त कथाएं जो अपनी दादी-नानी से सुनी थीं उन्हें आप भूल चुके हैं या उन्हें संवाहक के रूप में अगली पीढ़ी तक हस्तांतरण कर नवजीवन प्रदान करने में अब तक असफल रहे हैं। कुछ कथाएं जो अलिखित रूप में प्रचलन में थीं उनमें से कुछ को लेखकों ने लोक कथाओं के रूप में स्थान देकर अमरत्व प्रदान किया है।

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल, गद्य साहित्य की भरमार के कारण, गद्य काल के नाम से भी जाना जाता है। आधुनिक कथा साहित्य गद्य विधा में होने के कारण खूब पढ़ा जा रहा है। आपने भी उनमें से कुछ चयनित रचनाओं पर आधारित रचनात्मकता से चित्रित नाटकों, धारावाहिकों, चलचित्रों, आदि को विभिन्न उपलब्ध श्रव्य-दृश्य माध्यमों पर देखा-सुना होगा।

हिंदी कथा की साहित्यिक कृतियों के सोपान से मानव समाज पुरातन काल से लाभान्वित होता आ रहा है जिसमें वैदिक-पौराणिक कथाओं के अतिरिक्त कई जातक कथाएं और अन्य कथाएं भी सम्मिलित हैं। कथा साहित्य के प्रमुख रूप — कहानी और उपन्यास दोनों ही मानवीय संवेदना, यथार्थता, सामाजिकता, राष्ट्रीयता, युगीन आधुनिकता अथवा भावात्मकता से परिपूर्ण होते हैं। हिंदी कथा साहित्य मूलतः भावात्मक होता है और संवेदनशील पाठक कथा वस्तु के अनुसार भावों में बह जाता है। मानवता या भक्ति की शक्ति पर आधारित कथाएं पाठकों को विशेष आकर्षित करती आ रही हैं। लेखक की लेखनी जीवन की किसी समस्या को केंद्र में रख कर आगे बढ़ती है। प्रबुद्ध रचनाधर्मी रचना के चरम उत्कर्ष पर विमर्श प्रस्तुत करता है या कतिपय बार पाठकों के चिंतन-मंथन हेतु उनके विवेक पर छोड़ देता है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। विद्वानों का मत है कि कथाएं, कथा वस्तु में निहित संवेदनाओं के माध्यम से मानव को मानवीय गुणों से युक्त बनाती हैं। भारत के नागरिकों को ज्ञान के प्रकाश के माध्यम से मानवीय मूल्यों से परिचित करवाने, सुसंस्कृत बनाने और अपने

देश को विश्व गुरु के प्रतिष्ठित पद तक पहुंचाने में लेखकों, कथावाचकों और कथा साहित्यकारों के योगदान के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। भावात्मकता से परिपूर्ण कथाओं में समेकित संदेश, गद्य विधा में होने के कारण, सामान्य जन मानस तक अत्यंत आसानी से पहुंचता है और उनके हृदय को छू लेता है।

कथा लेखन, कथा वाचन और उनके नाट्य रूप में मंचन अलग प्रकार की ललित कलाएं हैं। इन कलाओं में चन्द लोग ही निपुण होते हैं। इसी प्रकार कथा पाठन, कथा श्रवण और नाट्य रूप में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दर्शन अलग-अलग अभिरूचियां हैं। लोग अपनी अभिरूचि के अनुसार अपने मन पसंद की ललित कलाओं में दक्ष लोगों की कथाएं पढ़ने, सुनने या नाट्य रूप में देखने में अधिक रुचि लेते हैं और लाभान्वित भी होते हैं।

कथा साहित्य जिन माध्यमों से समाज तक पहुंचता है उन्हें प्रसार की दृष्टि से तीन प्रमुख श्रेणियों में बांटा जा सकता है — **भाष्य—श्रव्य, पाठ्य और श्रव्य—दृश्य**। कथाओं के प्रसार के हर माध्यम की अपनी उपयोगिताएं, विशेषताएं और सीमाएं होती हैं। जहां पाठ्य कथाओं का लिखित होना स्वाभाविक है वहीं भाष्य—श्रव्य तथा श्रव्य—दृश्य कथाएं अलिखित और लिखित दोनों ही रूपों में हो सकती हैं। लेकिन, अधिकांश कथाएं अब लिखित रूप में ही होती हैं और उपरिलिखित माध्यमों से समाज तक पहुंचती हैं।

भाष्य—श्रव्य माध्यम — भाष्य—श्रव्य एक प्राचीनतम माध्यम है। जनश्रुतियों के माध्यम से कहानियाँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचती रही हैं जिससे निरक्षर समाज भी लाभान्वित हुआ। कथाओं के भाष्य—श्रव्य माध्यम में कम से कम दो व्यक्ति होते हैं —

एक कथा सुनाने वाला और दूसरा सुनने वाला। लेकिन, इसमें श्रोताओं की संख्या एक से अधिक हो सकती है।

भारत के ग्रामीण समाज में जनश्रुतियों पर आधारित कहानियों को सुनने—सुनाने की परम्परा प्रचलित थी। आमतौर पर लोग जाड़े की रातों में रात्रि भोज के उपरांत किसी ग्रामीण की बैठक में एकत्र हो जाते। वे अंगीठी जलाते, कोई हुक्का गुड़गुड़ाते, कोई तकली कातते, रस्सियां बनाते, स्वेटर बुनते और अन्य आग तापते हुए कहानियां सुनते थे। गांव में महिला—लोक एवं पुरुष—लोक में साक्षरों की संख्या कम थी और मनोरंजन के साधन भी अल्प मात्रा में उपलब्ध थे तो गांवों में रात्रिभोज के उपरांत संध्याकालीन कचहरियां लगा करती थी। उस कालखण्ड में मनोरंजन के साधनों के अभाव में, ज्ञान के प्रसार के साधन के रूप में, भाष्य—श्रव्य माध्यम की बहुत महत्ता थी।

इसके अतिरिक्त धार्मिक प्रवचनों के दौरान भी विद्वान कथावाचक किसी संदर्भित भाव को समझाने के लिए और प्रवचन में रोचकता लाने के लिए संदर्भ के अनुसार कई कहानियों के सार व उद्धरणों का भी समावेश करते आ रहे हैं। प्राचीन काल में निरक्षर समाज में ज्ञान के प्रकाश के प्रसार का यह एक अच्छा माध्यम था। भारत, विश्व गुरु के पद पर इसीलिए विराजमान था क्योंकि कि भारत में ज्ञान के भण्डार का प्रचार और प्रसार अन्य वैश्विक राष्ट्रों से अधिक था। दया, धर्म और मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण कथा वार्ताओं के श्रवण से भारतीय समाज में संस्कार थे, समाज सभ्य और सुसंस्कृत था। भारत में दया को धर्म के मूल के रूप में माना जाता है इसलिए कहते हैं दया धर्म का मूल है। जिस प्रकार नीति के कुछ उपदेशों ने धर्म का रूप लिया वैसे ही सभ्यता ने भी आगे चलकर संस्कृति

का रूप धारण किया। सुसंस्कृत समाज की चेतना के मूल में ज्ञान का प्रसार ही तो था।

भाष्य—श्रव्य कथाओं का अपना ही आनन्द होता है। कथा वाचक या कथा वार्ताकार कथा सुनाते समय स्वरों में आवश्यक उतार—चढ़ाव और संदर्भानुसार संवेदनी भाव भंगिमा के साथ प्रस्तुत करते हैं तो श्रोताओं पर इसका ऐसा प्रभाव पड़ता है कि उनकी वार्ता सुनने की जिज्ञासा बनी रहती है। प्रस्तुतकर्ता अपने श्रोताओं के मुखमण्डल पर संवेदनी भाव भी पढ़ सकता है। आपने भी कथा सुनाते या सुनते समय कई संवेदनशील श्रोताओं को विषय वस्तु के भावानुसार रोने, हंसने, आश्चर्य, क्रोध, रोष, जोश, देशभक्ति, उदासीनता, भक्ति, आदि के भावावेश में पाया होगा।

श्रोता कथा सुनते हुए हुंकारा लगाता रहता है। इससे विदित होता है कि वह समुचित ध्यान से सुनकर आनन्द ले रहा है। कथा वार्ताकार और श्रोता के मध्य सीधा संपर्क होने के कारण श्रोता को एक विशेष सुविधा होती है कि यदि कोई बात ठीक से समझ न आई तो वह अपने मनोज प्रश्न के स्पष्टीकरण हेतु तत्काल प्रश्न दागता है। ऐसा कब/क्यों/कैसे हुआ? श्रोता प्रश्नों और पूरक प्रश्नों के उत्तर तत्काल पाता है और वार्ताकार आगे बढ़ जाता है। कई कथावाचक शिक्षक की तरह लक्षित वर्ग से समयांतर पर संवाद स्थापित कर रोचकता प्रदान करते हैं अथवा उन्हें कितना समझ आया है इसकी प्रतिपुष्टि भी करते रहते हैं।

जनश्रुतियों के माध्यम से जीवित परम्परागत दन्त कथाएं अलिखित होती हैं। इन कथाओं का अलिखित रूप होने के कारण एक अक्षमता यह है कि इनका जीवन लिखित कथाओं के सापेक्ष कम होता है और इस श्रेणी की कई कथाओं की तो उनके संवाहकों के

बैकुण्ठ गमन के साथ ही अल्पमृत्यु हो जाती है। हमारी पीढ़ी के लोगों का अनुभव है कि जो दन्त कथाएं हमने बचपन या किशोरावस्था में सुनी थीं उनमें से कई कथाएं विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्ति के कगार पर हैं।

पाठ्य माध्यम — इस माध्यम में किसी लिपि में लिखित कहानी होती है जिसे हम भाषा कहते हैं। लेखक अपनी बात लिखित कथा के माध्यम से पाठक तक पहुंचाता है। यदि पाठक जिस लिपि में कथा लिखी है उस भाषा को पढ़ना जानता है तो अपनी सुविधा के अनुसार पढ़ सकता है।

अति पुरातन काल में प्रकाशन (प्रिंट मीडिया) और आधुनिक श्रव्य—दृश्य मीडिया का आविष्कार ही नहीं हुआ था। मुद्रण माध्यम के प्रचलन में आने के उपरांत पढ़े—लिखे लोग अपनी भाषा में कथा साहित्य पढ़कर आनन्द लेते आ रहे हैं। यदि किसी अनपढ़ को लिखित कथा साहित्य का आनन्द लेना हो तो वह पढ़े—लिखे व्यक्ति के सामने बैठकर शब्दशः कथा का पाठ या कण्ठस्थ कथा का सार सुन लेता है। एक बार सुनने के बाद निरक्षर भी संपर्क भाषा के माध्यम से दूसरे व्यक्तियों को कथा सुना सकता है।

श्रव्य—दृश्य माध्यम — कथा साहित्य में निहित संदेश या सार किसी समुदाय तक पहुंचाना हो तो प्रायः श्रव्य—दृश्य माध्यम की नाट्य विधा का सहारा लिया जाता है। पुराने समय में **नाट्य माध्यम** होता था जो आधुनिक वैश्विक समाज में भी काफी प्रचलन में है। लोग हास्य—व्यंग्य, एकांकी नाटक, नाटक, रामलीला, रासलीला, स्वांग आदि का मंचन करते आ रहे हैं। इससे कथाओं के प्रसार में वृद्धि और दर्शकों के ज्ञान में समृद्धि हुई है।

आधुनिक समाज में सामाजिक मीडिया अपनी बढ़ती उपयोगिता एवं उपलब्धता के कारण महत्वपूर्ण माध्यम

बन चुका है। श्रव्य-दृश्य माध्यम में उपलब्ध मदों की संख्या और उसी अनुपात में उनके उपयोगकर्ताओं की संख्या बढ़ती जा रही है। श्रव्य-दृश्य माध्यम की जन-जन तक पहुंच है और यह माध्यम प्रभावी भी है। वे छोटे-छोटे बच्चे जो मातृभाषा भी पूरी तरह नहीं जानते, वे भी अन्य भाषाओं में निर्मित कार्टूनों के माध्यम से कथा साहित्य का पूरा आनन्द लेते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि भाषा की प्रासंगिकता भी श्रव्य-दृश्य माध्यम से गौण हो जाती है। इसमें भावभंगिमा की प्रधानता होती है। शिक्षा शास्त्रियों का मत है कि श्रव्य-दृश्य की प्रभावकारिता अन्य माध्यमों के सापेक्ष बहुत अधिक होती है और मानस-पटल पर देर तक बनी रहती है। आधुनिक युग में शिक्षण-प्रशिक्षण में श्रव्य-दृश्य माध्यमों का उपयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है।

कथा साहित्य में अनुभव और अनुभूति की बातें होती हैं। अनुभव प्राप्त करने से पहिये का अन्वेषण पुनः करने की आवश्यकता नहीं होती है। साहित्य मानव

को निर्णय लेने के लिए भी सक्षम बनाता है अतएव सुनने, लिखने और पढ़ने-लिखने की आदत डालें। समाज में कई घटनाएं हैं जो स्वयं एक कहानी हैं अथवा आप कभी किसी बुजुर्ग से सुनी किसी लोक कथा को अपनी लेखनी की धार से निकसित अमृत पान करा सकते हैं।

इस लेख के संदर्भवश एक संस्कृत का श्लोक प्रस्तुत है:-

येषां न विद्या न तपो न दानं,
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युलोके भुविभार भूता,
मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।

अर्थात् ऐसा मनुष्य जिसके पास न विद्या है, न तपस्या है, न ही दान है, न ज्ञान है, न शील है, न ही कोई गुण और धर्म है वह इस मृत्युलोक की धरा पर भार बनकर मनुष्य रूप में वन्य पशु की भांति विचरण कर रहा है।



भारत माता

जगदंबा प्रसाद शुक्ला
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
मध्य प्रदेश, भोपाल

आजादी का अमृत महोत्सव पूरे देश में हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है और लोग भारत-माता की जय के नारे लगाते हुए दिखाई देते हैं। हम याद करें जब आजादी का आंदोलन जोरों पर था, राष्ट्रीय नेता जगह-जगह देश में घूमते थे, भाषण देते थे। ऐसी ही एक सभा में जब पंडित जवाहरलाल नेहरू पहुंचे तो जनता 'भारत माता की जय' के नारे लगाने लगी। नेहरू को कुछ सूझा और उन्होंने जनता से मुखातिब होकर पूछा, "यह भारत माता कौन है? आप किसके नारे लगा रहे हैं?" लोगों को कोई उत्तर देते नहीं बना। नेहरू ने आगे व्याख्या करते हुए बताया, दरअसल भारत माता कोई और नहीं है हिंदुस्तान की जनता है और वह जनता आप हो। आप ही हो भारत माता? यह कहते हैं कि मैंने महसूस किया लोगों के चेहरे पर चमक आने लगी। एक विश्वास जागने लगा जैसे कि उन्होंने कुछ

नया पा लिया है, भारत को खोज लिया है।

(इसी बात से प्रेरित होकर नेहरू ने अपनी एक प्रसिद्ध किताब का नाम 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' रखा। इस पर 'श्याम बेनेगल' ने एक सीरियल बनाया बाद में नाम विवादित होने पर इस सीरियल का नाम 'भारत-एक खोज' रखा गया)। भारत उस समय अंगड़ाई ले रहा था और आगे वह राष्ट्र के रूप में संगठित होने के लिए बेचैन होने वाला था।

राष्ट्र एक आधुनिक अवधारणा है जिसे पूंजीवाद ने पैदा किया और नकली लोकतंत्र की गोद में पला बढ़ा है। दरअसल जब मध्यवर्ग सशक्त हुआ और व्यापारिक पूंजी बढ़ने लगी तो राजाओं पर दबाव बना कि पूंजीपतियों को सहूलियत दी जाए, कर कम किए जाएं। इसमें सामंतवाद के शोषण में फंसी हुई खेतिहर जनता का साथ मिला। राजा के किले ढहने लगे

और फ्रांस जैसे कई देशों में राजतंत्र खत्म हो गया। अब यह सोच विकसित हुई कि अभी तक जो निष्ठा राजा के प्रति थी वह कहां व्यक्त की जाए? आखिर वह कौन से तत्व हैं जो हमें आपस में जोड़ते हैं? "स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व" की बात जनता को आकर्षित करने लगी। यहीं से राष्ट्रवाद आता है और इसके प्रतीक के रूप में "राष्ट्र देवी" का उदय होता है।

भारत में राष्ट्र की अवधारणा बहुत देर में आई। गांधी के राजनीति में आने से पहले (1905) बंगाल में बड़ा आंदोलन चला जो बंगाल के विभाजन के कारण जोर पकड़ता गया। यह सांप्रदायिक विभाजन था इसे बंग भंग आंदोलन कहते हैं। जनता में आक्रोश था और इसके विरोध में रविंद्र नाथ टैगोर ने 'आमार सोनार बांग्ला' नामक गीत लिखा था जो बाद में बांग्लादेश का राष्ट्रगान बना। उन्हीं के भतीजे

‘अवनींद्र नाथ ठाकुर’ जो एक मशहूर कलाकार थे उन्होंने भारत माता का एक चित्र बनाया जिसमें भारत माता दुर्गा की तरह चार हाथों वाली थी, जिनके एक हाथ में कपड़ा था जो बंगाल के वस्त्र उद्योग, दूसरे हाथ में गेहूं की बाली जो किसान और समृद्धि, तीसरे हाथ में एक माला जो आध्यात्मिक शांति और चौथे हाथ में किताब थी जो ज्ञान का प्रतीक थी। भारत माता का चेहरा तेज और शांति का अद्भुत समन्वय था जो सन्यासिनी के भेष में थी। फिर ऐसा क्या हुआ कि भारत माता ने अपना स्वरूप धीरे-धीरे बदल लिया और वह शेर पर सवार हो गई और हाथ में हथियार ले लिया, इसकी भी एक अलग कहानी है।

दरअसल हमारी इन सभी माताओं की शुरुआत ‘स्टेचू ऑफ लिबर्टी’ वाली माता से होती है। 1789 में जब फ्रांस की क्रांति हुई उस समय “स्वतंत्रता समानता और बंधुत्व” वहां का नारा बना। राजा को गुलेटिन पर चढ़ा दिया गया। लोकतंत्र ने अपना स्वरूप पाना शुरू किया। उस समय स्वतंत्रता को “स्टेचू ऑफ लिबर्टी” के रूप में कल्पना की गई। “एक माता जो आजादी की मशाल लिए हुए खड़ी थी” इसे पहले पेरिस में “पॉन्ट डे

ग्रेनेल” नामक स्थान पर स्थापित किया गया जो बाद में एफिल टावर के प्रसिद्धि के तले दब गई। जब अमेरिका, ब्रिटेन से स्वतंत्र हुआ तो फ्रांस के लोगों ने अमेरिका को स्टेचू ऑफ लिबर्टी गिफ्ट किया जो न्यूयॉर्क हार्बर पर लगी हुई है। वह पहले वाले की अनुकृति थी और नकली वाली असली से ज्यादा मशहूर हो गई। उसी तर्ज पर जर्मनी ने “जर्मनिया” देवी ब्रिटेन में ‘ब्रिटानिया’ देवी की कल्पना होती है। ब्रिटानिया देवी विधिवत शेरों पर सवार हैं और उन्हीं कलाकारों ने कल्पना से ब्रिटानिया देवी की

अनुकृति भारत माता बना दी जो शेरवाली माता बन गई।

राष्ट्र लोगों को तभी जोड़ सकता है जब लोगों के बीच में आर्थिक, सामाजिक भेदभाव कम हो। लोग आपस में लगाव महसूस करते हों और बाहरी खतरे के समय एकजुट हो जाते हों। धर्म के आधार पर राष्ट्र नहीं बनाया जा सकता है और ना ही यह सफल होगा। यह अधिनायकवाद का ही दूसरा रूप होगा जोकि राजा महाराजा के दौर में हुआ करता था। यह छद्म रूप राजतंत्र से भी बदतर होता है।



स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका



श्रीमती विदुषी वत्स
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, नई दिल्ली

हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा मानी जाती है। यह भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। संसार की उन्नत भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक व्यवस्थित व सबसे अधिक सरल भाषा है। हिंदी राजभाषा, राष्ट्रभाषा और मातृभाषा के सोपानों को पार कर विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है।

हिंदी शब्द की व्युत्पत्ति को संस्कृत के सिंधु शब्द से लिया गया है। सिंध, सिंधु नदी और उसके आसपास की भूमि को माना जाता है। यह शब्द ईरानी में जाकर हिंदू, हिंदी और फिर हिंद हो गया और धीरे-धीरे मूल रूप में मानव जिन विचारों और भावों को परंपरा से संचित करता आया है, वही भाषा में लिपिबद्ध होकर साहित्य में संचित होते हैं। ज्ञानराशि के कोष में संचित कोष का नाम ही साहित्य है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शब्दों में “हिंदी ने देश की एकता, अखंडता और भाषाई सद्भावना का एकीकरण करने में ऐतिहासिक रूप से अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके अनुसार कोई देश तब तक स्वतंत्र नहीं है, जब तक कि वह अपनी भाषा में नहीं बोलता।”

महान कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान के शब्दों में भी भारत की एकता और स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान देने वाली रानी लक्ष्मीबाई पर

“बुंदेले हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।”

महान वीर रस के कवि श्याम नारायण पांडेय ने भी राजा महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक पर लिखी कविता में कहा है —

“रण—बीच चौंकड़ी भर—भर कर
चेतक बन गया निराला था
राणा प्रताप के घोड़े से
पड़ गया हवा का पाला था।”

कवि भूषण के शब्दों में —

साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।

कवि बिस्मिल अजीमाबादी के शब्दों में —

“सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है ज़ोर कितना बाजु—ए—कातिल में है।”

मेरा रंग दे बसंती चोला, माए रंग दे
मेरा रंग दे बसंती चोला

जैसे राष्ट्र भक्ति से ओत प्रोत कविताओं ने भारत के युवाओं में स्वतंत्रता के लिए प्रजापति की भूमिका का निर्वाह किया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नारे “जय हिंद, दिल्ली चलो”, “तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा” और बंगाल के सियासी आंदोलन में “वन्दे मातरम्” का शब्द घोष आज भी युवाओं के मन को आंदोलित करता है।

स्वतंत्रता संग्राम में लिखे गये गीत जैसे –

“विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा”

“जय भारत माता रहे तिरंगा
हाथ में तेरे सदा ही लहराता”

“हम स्वतंत्र भारत के स्वतंत्र बाल हैं”

“हंस हंस देंगे प्राण हम भारत की संतान”

“हम वीर सिपाही, हम भारत के”

“वतन की राह पर वतन के नौजवान शहीद हों”

जैसे ओजस्वी देशभक्ति से ओतप्रोत कविताओं ने युवाओं को नई दिशा प्रदान की।

हिंदी पत्रकारिता व समाचार पत्र, स्वतंत्रता संग्राम के रीढ़ की हड्डी थे जिसने नए-नए राष्ट्रवादी सिद्धांतों को जन चेतना देकर जनमानस को जगाया। **गणेश शंकर विद्यार्थी** ने 1910 में “प्रताप” नामक पत्रिका का शुभारंभ किया जो क्रांतिकारी विचारों के लिए युवाओं का मुखर पत्र रहा जिसने अंग्रेज़ मुक्त भारत का नारा दिया।

“प्रभा और प्रताप” नामक पत्रिकाओं ने भारतीयों के हृदय में अंग्रेजी के प्रति घृणा का भाव उत्पन्न किया।

सुन्दरलाल की हिंदी पुस्तक “भारत में अंग्रेजी राज” से ब्रिटिश सरकार इतनी भयभीत हो गई कि पुस्तक को प्रतिबंधित व जब्त करने के आदेश दिए। फिर भी आज़ादी के मतवालों द्वारा उसकी हजारों प्रतिलिपियां वितरित हो गई। 1921 में महात्मा गांधी द्वारा “नवजीवन”, 1923 में “मतवाला” जिसमें सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेव प्रसार सेठ, विश्व पूजन सहाय, बेचैन शर्मा जैसे प्रतिष्ठित हिंदी लेखकों के योगदान से निर्भीक तथा ओजस्वी लेखों द्वारा युवाओं में आत्मविश्वास और आत्मसम्मान का भाव पैदा किया तथा “पराधीन सपने सुख नहीं” के मुहावरे को चरितार्थ करने का बल दिया।

महात्मा गांधी गुजराती, सी. गोपालाचारी मद्रासी, राजाराम मोहन रॉय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर व देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय जैसे महान व क्रांतिकारी दार्शनिक बंगाली थे व बाल गंगाधर तिलक मराठी थे। इन सभी ने स्वाधीनता का संदेश जनमानस में पहुंचाने हेतु हिंदी को ही चुना। बालगंगाधर तिलक ने ‘गीता रहस्य’ में भगवद् गीता में कर्मफल रहस्य हिंदी में लिखकर तथा गणेश उत्सव द्वारा जनमानस में एकीकरण तथा स्वतंत्रता के भाव का बीजारोपण किया और ये नारा ‘स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा’, में घर-घर तक पहुंचाया। “नमक सत्याग्रह” आंदोलन के समय महात्मा गांधी ने जनमानस को आंदोलन में भाग लेने के लिए हिंदी भजन का आग्रह किया क्योंकि महात्मा गांधी जानते थे कि जनमानस की भावना को जनमानस की भाषा में ही अभिव्यक्त किया जा सकता है क्योंकि भाषाबद्ध साहित्य जीवन में उदासीनता का राग नहीं सुनाता व मनुष्य को भाग्य के सहारे बैठने नहीं देता। तब पंडित दिगंबर पुलास्कर ने तुलसीकृत रामचरितमानस व वाल्मीकि कृत रामायण जैसे कालजयी काव्य-कृतियों के चरित के नायक श्री राम को चुना तथा ‘रघुपति

राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम' की धुन को सर्वप्रथम बार गाते हुए आजादी के मतवाले स्वतंत्रता संग्राम में टूट पड़े।

भारत आते ही महात्मा गांधी ने जिन आंदोलनों का नेतृत्व किया उनमें 'हिंदी आंदोलन' प्रमुख ही नहीं बल्कि शीर्ष पर ही रहा। गांधी जी ने हिंदी को भारतीय स्वतंत्रता की वाणी व आत्मरक्षा की संज्ञा दी। "कस ली है कमर अब तो कुछ करके दिखायेंगे।

अशफारखुल्लाह खान के शब्दों में "आजाद ही हो लेंगे या सर कटा देंगे"

"जय हिंद जय हिंद कहते गये वो
और शहादत की धारा में बहते गये वो"

रविंद्रनाथ टैगोर द्वारा लिखे गये राष्ट्रगान में "पंजाब सिंध गुजरात मराठा द्रविड़ उत्कल बंग" ने भारत का एकीकरण किया।

"वीर तुम बड़े चलो धीर तुम बड़े चलो"
सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो।"

फहरी ध्वजा, फड़की भुजा,
बलिदान की ज्वाला उठी,
निज जन्मभू के मान में,
चढ़ मुंड की माला उठी।

सुमित्रानंदन पन्त ने कहा है – ज्योतिभूमि, जय भारत देश

इकबाल ने कहा है – सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा।

बंकिमचंद्र चटर्जी का देश प्रेम से ओत-प्रोत गीत "वन्देमातरम" ने लोगों की रगों में उबाल ला दिया।

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी कवियों, लेखकों, आलोचकों तथा भारतीय जनमानस का विशेष योगदान रहा।



वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाती हिंदी



डॉ. लाखा राम

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

हिंदी सही मायनों में विश्व की प्राचीन, समृद्ध एवं सरल भाषा है जो प्रत्येक भारतवासी को वैश्विक स्तर पर मान-सम्मान दिलाती है। आज विश्वभर में 80 करोड़ से भी ज्यादा लोग हिंदी बोलते हैं और दुनियाभर के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है। इंटरनेट पर भी हिंदी का चलन दिनों-दिन तेजी से बढ़ रहा है। डिजिटल माध्यम से हिंदी समाचार-पत्र पढ़ने वालों की संख्या करीब चौदह करोड़ से अधिक का अनुमान है।

विश्वभर की भाषाओं का इतिहास रखने वाली संस्था एथ्नोलॉग के द्वारा जब हिंदी को दुनियाभर में सर्वाधिक बोली जाने वाली तीसरी भाषा बताया जाता है तो सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। अब भारत में बहुत सारी बहुराष्ट्रीय कंपनियां हिंदी का भी उपयोग करने लगी हैं। भारत में ई-कॉमर्स साइटें भी ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों तक अपनी पहुंच बनाने के लिए हिंदी में ही अपनी ऐप लेकर आ रही हैं। ब्लॉग, ट्विटर आदि पर हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है। आज फिल्म, विज्ञापन, प्रकाशन तथा सोशल मीडिया ने हिंदी के संवर्धन के लिए अवसर बढ़ाया है और भारत ज्ञान कोश, हिंदी विकीपीडिया, हिंदी कविता कोश आदि ने हिंदी के लिए प्रचुर साहित्य सामग्री उपलब्ध कराई है।

फिजी के प्रधानमंत्री ने 15 फरवरी 2023 को फिजी के नांदी शहर में 12वें हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिंदी फ्रॉम ट्रेडिशनल नॉलेज टू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' रखा गया। इसमें 50 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इससे दूसरे देशों में भी हिंदी की लोकप्रियता बढ़ेगी। गर्व की बात है कि विश्व हिंदी सम्मेलन के तहत फिजी के राष्ट्रपति ने हिंदी को दिल की भाषा कहा। फिजी के शिक्षा मंत्रालय ने बारहवीं कक्षा तक हिंदी अनिवार्य करने की तैयारी कर ली है।

दुनियाभर में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए वातावरण निर्मित करने के उद्देश्य से विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किए जाने की परंपरा 1973 में राष्ट्रीय प्रचार समिति, वर्धा द्वारा प्रारंभ की गई थी। पहली बार यह सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया। इसमें 30 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। तत्पश्चात भारत के बाहर मॉरीशस, यूनाइटेड किंगडम, त्रिनिदाद, अमेरिका इत्यादि देशों में भी विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह हिंदी भाषा का सबसे बड़ा सम्मेलन है, इसमें विश्वभर से हिंदी प्रेमी एकत्रित होते हैं। कहने को तो हिंदी सिर्फ एक भाषा है परंतु वास्तव में यह भारत की पहचान है। यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं

संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक है।

हिंदी को समृद्ध करने में देश के विद्वानों के साथ-साथ अनेक विदेशी एवं प्रवासी भारतीयों की भी अहम भूमिका रही है। इसी कड़ी में वे भारतवंशी लोग भी हैं, जो गिरमिटिया मजदूर के रूप में लगभग 175 वर्ष पूर्व मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम पहुंचे थे। वे लोग बहुत विद्वान तो नहीं थे, लेकिन अपने साथ रामायण, हनुमान चालीसा की पोथियां एवं आल्हा आदि ले गए थे। इन गिरमिटिया मजदूरों के रूप में विभिन्न देशों में हिंदी तो पहुंची ही, उसका विस्तार भी हुआ।

भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने तंत्र की स्थापना के साथ ही भारत में प्रचलित अनेक भाषाओं और बोलियों की एक समन्वित भाषा के सृजन के लिए जॉन गिल क्राइस्ट के नेतृत्व में देशी भाषाओं की एक समन्वित भाषा का सृजन किया, जिसे 'हिंदुस्तानी भाषा' का नाम दिया गया। उन्होंने 'डिक्शनरी ऑफ इंगलिश एंड हिंदुस्तानी' की रचना की। जॉन गिल क्राइस्ट का यह ग्रंथ तत्कालीन अंग्रेजों को हिंदी सिखाने के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ। उनकी ही तरह फ्रांस के विद्वान गार्सा द तासी की भी विश्व में हिंदी के महत्व को रेखांकित करने में अहम भूमिका है। उनकी फ्रेंच भाषा में लिखी गई पुस्तक 'हिंदुई' और 'हिंदुस्तानी साहित्य का इतिहास' हिंदी साहित्य की प्रथम कड़ी मानी जाती है। फ्रेडरिक पिंकाट भी ब्रज भाषा में हिंदी कविता लिखते थे। उन्होंने अनेक ग्रंथों के साथ 'हिंदी मेनुअल' का लेखन किया। इसी कड़ी में अंग्रेज अधिकारी के रूप में भारत आए जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने हिंदी साहित्य पर अनेक शोध किए, जिसके लिए तत्कालीन अंग्रेजी सत्ता ने उन्हें 'फादर ऑफ लैंग्वेज ऑफ अवर टाइम' की उपाधि से सम्मानित किया। इसी प्रकार जापान की प्रोफेसर तोशियो तनाका, तोमियो मिजोकामि और रूस के वारान्निकोव,

डॉ. ल्युदमिला एवं पोलैंड के प्रोफेसर ब्रिस्की की हिंदी को विश्व में स्थापित करने में अहम भूमिका रही। आज सिंगापुर, आस्ट्रेलिया और खाड़ी सहित अनेक देशों के विद्वान लगातार हिंदी को बढ़ावा दे रहे हैं।

सोशल मीडिया पर संयुक्त राष्ट्र ने 2018 से हिंदी में संदेशों का आदान-प्रदान शुरू किया। इसके लिए वर्ष 2018 में भारत सरकार ने वैश्विक मंच पर हिंदी को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र से एक समझौता किया था। वर्ष 2020 में इसे पांच वर्ष के लिए बढ़ाया गया। 12 जून 2022 को संयुक्त राष्ट्र ने एक प्रस्ताव पारित करके अपने महत्वपूर्ण संचार और संदेशों को हिंदी में भेजने और प्रसारित करने का फैसला किया। हिंदी की वैश्विक उपस्थिति बढ़ाने और उसकी तरफ विश्व का गंभीर ध्यान आकर्षित करने के लिए और सुधार की जरूरत है।

यह बात सही है कि भारत जैसे बहुआयामी देश के विद्यार्थी जब हिंदी भाषा में अपनी पढ़ाई करेंगे, तभी लोगों की समस्याओं को ठीक प्रकार से समझ पाएंगे और उनकी सच्ची सेवा कर सकेंगे। भारतीय छात्र हिंदी में चिकित्सा और तकनीकी शिक्षा का अध्ययन करके निःसंदेह अपनी प्रतिभा का और अच्छी तरह प्रदर्शन कर पाएंगे। चिकित्सा और इंजीनियरिंग की शिक्षा के पश्चात् विज्ञान, वाणिज्य एवं न्याय की शिक्षा भी हिंदी में होनी चाहिए। इस कदम से न केवल हिंदी की उन्नति होगी बल्कि भारत विश्व में शिक्षा के बड़े केंद्र के रूप में उभरेगा।

पिछले कुछ वर्षों में तकनीकी के विकास और इंटरनेट की सुगम उपलब्धता के कारण हिंदी का भले ही प्रसार बढ़ा है, लेकिन अब भी यह प्रसार उस स्तर तक नहीं पहुंचा है जहां इसे होना चाहिए था। इसलिए हिंदी को अपनाएं और उसे अधिक प्रफुल्लित करने में अपना योगदान दें। सशक्त और समर्थ भारत का सपना देखते हुए इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

ऊर्जा संरक्षण

सुश्री पूजा सिंह मंडल

हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)

हरियाणा, चण्डीगढ़

मनुष्य विकास की राह पर तेजी के साथ अग्रसर है, उसने समय के साथ खुद के लिए जीवन में सुख के सभी साधन एकत्रित कर लिये हैं। कारखाने, रेलगाड़ी, मोटर-गाड़ियां, हवाई जहाज, कार, दो पहिया वाहन, जेसीबी आदि सभी की खोज वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों द्वारा ही संभव हुआ है। प्रकृति से हमें ऊर्जा के बहुत से स्रोत प्राप्त होते हैं, हमारे दैनिक जीवन में ऊर्जा के स्रोतों का बहुत अधिक मात्रा में उपयोग किया जाता है। ऊर्जा के स्रोतों से हम सभी का जीवन सरल हो गया है। हम सभी के पास ऊर्जा स्रोत के बहुत से संसाधन मौजूद होते हैं जैसे लकड़ी, कोयला, पेट्रोल आदि। इन सभी स्रोतों को एक ही बार उपयोग में लाया जा सकता है। इनका उपयोग पुनः नहीं कर सकते हैं क्योंकि इनकी मात्रा सीमित है।

आज के समय में सभी के जीवन में ऊर्जा संरक्षण जरूरत बन गई है।

ईंधन प्रकृति द्वारा मनुष्य को दिया गया एक अनमोल तोहफा है। ईंधन पर मनुष्य हर तरह से निर्भर रहता है, इनकी मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मानव अपने जीवन को आरामदायक बनाने के लिये दिन-प्रतिदिन नये-नये उपकरणों की खोज करने में लगे हैं।

मनुष्य के जीवन में दिन-प्रतिदिन ईंधन की जरूरतें कुछ ज्यादा ही बढ़ती जा रही हैं। पहले गर्मियों के दिनों में पंखे का उपयोग होता था लेकिन समय के साथ जनसंख्या में जैसे-जैसे बढ़ोतरी हुई, वैसे-वैसे तापमान बढ़ने से अधिक गर्मी होने की वजह से अब लोग ज्यादातर ए. सी. का उपयोग करने लगे हैं।

ऊर्जा संरक्षण का अर्थ क्या है?

ऊर्जा संरक्षण का अर्थ है ऊर्जा की बचत करना। हमें ऊर्जा का उपयोग कम से कम करना चाहिए। किसी भी कार्य को पूरा करने के लिये कम ऊर्जा का

उपयोग कर सकते हैं। जैसे-अगर आप कार से कहीं आते-जाते हैं, उसकी जगह पर साइकिल या स्कूटी से आ-जा सकते हैं और कार में लगने वाले ईंधन की बचत की जा सकती है। और उस ऊर्जा का उपयोग ना करके उसका संरक्षण करना चाहिए।

ऊर्जा संरक्षण के नियम

इस नियम के अनुसार ऊर्जा को न तो उत्पन्न किया जा सकता है और न ही ऊर्जा को नष्ट किया जा सकता है। इसे केवल एक रूप से दूसरे रूप में बदला जा सकता है। इसे ही ऊर्जा संरक्षण का नियम कहा जाता है। अर्थात् यदि किसी क्रिया को करने में जितनी ऊर्जा लुप्त होती है, उतनी ही ऊर्जा दूसरे रूपों में उत्पन्न हो जाती है। ऊर्जा को किसी भी रूप में समाप्त नहीं किया जा सकता है।

1841 में जुलियस रोबर्ट मेयर ने ऊर्जा संरक्षण के नियम का प्रतिपादन किया था, इन्हें ऊर्जा

संरक्षण के नियम का जनक भी कहा जाता है।

उदाहरण

— यदि मोटर के द्वारा किसी यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदला जा सकता है।

— जनरेटर के माध्यम से यांत्रिक ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदला जा सकता है।

— हीटर के द्वारा हम यांत्रिक ऊर्जा को ऊष्मा ऊर्जा में बदला जा सकता है।

ऊर्जा संरक्षण कब मनाया जाता है?

देश भर में प्रतिवर्ष 14 दिसम्बर को ऊर्जा संरक्षण दिवस के रूप में मनाया जाता है। ऊर्जा संरक्षण दिवस के दिन ऊर्जा के महत्व को समझाने के लिये इसे उत्सवपूर्वक मनाया जाता है। जैसे-जैसे जनसंख्या में वृद्धि हो रही है, वैसे-वैसे ऊर्जा की जरूरत भी बढ़ती जा रही है। इसलिए हर वर्ष ऊर्जा संरक्षण दिवस पर लोगों को ऊर्जा के महत्व के बारे में सभी को जागरूक करने के लिये हर वर्ष ऊर्जा संरक्षण दिवस मनाते हैं।

ऊर्जा का उपयोग लोगों को सोच समझ कर करना चाहिए, जहाँ तक

संभव हो सके तो ज्यादातर प्राकृतिक ऊर्जा का ही उपयोग करके काम चलायें।

हम सभी के जीवन में इस्तेमाल किये जाने वाले ऊर्जा के कुछ ऐसे स्रोत होते हैं, जिनका एक बार उपयोग करने पर उसको पुनः उपयोग में नहीं लाया जा सकता है, जैसे पेट्रोल, कोयला, डीज़ल, लकड़ी आदि। ये सभी प्रकार के साधन 40–50 वर्षों तक रहते हैं। हम सभी के जीवन में ऊर्जा संरक्षण का बहुत महत्व होता है, इसलिए हमें ऊर्जा का बचाव करना चाहिए।

ऊर्जा संरक्षण से ऊर्जा का बचाव

जब आप कमरे में होते हैं तभी बल्ब, लाइट और पंखा चलाएं अगर बाहर जायें तो बंद करके जायें तभी ऊर्जा की बचत की जा सकती है। ट्यूब लाइट और बल्ब और अन्य प्रकार के उपकरणों को अच्छी तरह से साफ करते रहना चाहिये। ऊर्जा की बचत करने के लिये सीएफएल बल्ब का उपयोग करना चाहिए, फ्रिज़ का दरवाज़ा काम पड़ने पर ही खोलना चाहिए बार-बार फ्रिज़ को खोलने-बंद करने से बिजली की खपत बढ़ती है।

खाना पकाते समय कूकर का ढक्कन बंद करके ही खाना पकाएं। प्रेशर कूकर का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करने से ऊर्जा की बचत की जा सकती है। जब भी खाना पकाने के लिये रसोई घर में जाते हैं तो खाना बनाने से पहले सारी सामग्री इकट्ठा कर लें फिर खाना बनायें ताकि सामान ढूँढने के दौरान ऊर्जा की खपत को बचाया जा सके।

देश भर में पेट्रोल की कीमत बढ़ रही है, कई जगहों पर 1 लीटर पेट्रोल 100 रुपए में मिलता है। हम सभी को सार्वजनिक वाहनों का उपयोग अधिक करना चाहिए। साथ ही कार आदि को नियत समय के अंदर ही सर्विस कराते रहना चाहिए, जिससे वाहन की इंजन दक्षता सही से काम करती रहे और कार अधिक मात्रा में पेट्रोल भी नहीं खाती है। क्योंकि ज्यादा दिन तक सर्विस न कराने की वजह से कार, बाइक में अधिक मात्रा में पेट्रोल लगने लगता है क्योंकि उसकी खपत बढ़ने लगती है, जिसके कारण से पेट्रोल ज्यादा लगने लगता है।

दैनिक जीवन में ऊर्जा संरक्षण

ऊर्जा एक प्रकार का प्राकृतिक संसाधन है, जो सीमित मात्रा में है।

पूरी दुनिया में सिर्फ 1% भाग जहां से ऊर्जा उत्पादित होती है या ऐसा कह सकते हैं कि दुनिया के सिर्फ 1% भाग में ही ऊर्जा पाई जाती है। ऊर्जा संसाधनों को पुनः नवीनीकरण प्रक्रिया से नहीं गुजारा जा सकता। मतलब ऐसा कह सकते हैं कि ऊर्जा संसाधनों को पुनः उपयोग में नहीं लाया जा सकता है। इसलिए ऐसा कहा जाता है कि आने वाले 40 साल के पश्चात् ऊर्जा के संसाधन पूरी तरह से खत्म हो जाएंगे।

दैनिक जीवन में ऊर्जा संरक्षण के तरीके

घर में ऊर्जा संरक्षण — व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में ऊर्जा संरक्षण के तरीकों में सबसे पहले घर से ऊर्जा संरक्षण करना सीखना होगा।

— घर में जब जरूरत नहीं है तब लाइट का उपयोग बिल्कुल ना करें एवं घर में पंखा बंद रखें।

— जहां कम रोशनी की जरूरत है, वहां कम वॉल्ट का बल्ब लगाएं।

— ठंडी हवा के लिए एयर कंडीशनर का प्रयोग करने की बजाए अपने घर के आस-पास पेड़-पौधे लगाएं।

— कपड़े वाशिंग मशीन में धोने की बजाय अपने हाथ से धोएं और धूप में सुखाएं।

आज के समय में आपने देखा होगा कि व्यक्ति पैदल चलने की बजाय हर जगह पर बाइक या कार का प्रयोग करता है। ऐसे में आपको साइकिल का प्रयोग करना चाहिए या पैदल चलकर अपने छोटे-बड़े काम पूरे करने चाहिए ताकि ऊर्जा की बचत की जा सके।

कृषि कार्यों में ऊर्जा संरक्षण

इसके अलावा कृषि कार्यों में भी व्यक्ति ऊर्जा को संरक्षित कर सकता है। खेती-बाड़ी के कामकाजों में भी ऊर्जा का दुरुपयोग बहुत ज्यादा हो रहा है।

जहाँ जरूरत है, वहां तो ऊर्जा का उपयोग होना ही चाहिए लेकिन हद से ज्यादा दुरुपयोग करना भी भविष्य के लिए नुकसानदायक है। ऐसे में जहां पर आवश्यकता नहीं है, वहां कृषि उपकरणों का ज्यादा प्रयोग नहीं करना चाहिए।

निष्कर्ष

आज टेक्नोलॉजी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है और टेक्नोलॉजी को बढ़ाने के लिए ऊर्जा का प्रयोग भी दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। लेकिन ऐसे में हमें ऊर्जा का प्रयोग कम करने का प्रयास करना चाहिए। तभी आने वाली पीढ़ी ऊर्जा की कमी जैसी समस्या से बच पाएगी।



आइये दर्शन करें श्री कृष्ण जन्मभूमि के



ललित कुमार वर्मा

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवायें)
सातवीं मंजिल, ए-ब्लॉक, रक्षा कार्यालय कॉम्प्लैक्स
अफ्रीका एवेन्यू, नई दिल्ली-110066

अगरा से मथुरा लगभग 55 कि.मी. की दूरी पर है। मथुरा स्थित श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर के गर्भगृह को भगवान श्री कृष्ण का जन्म स्थल माना जाता है। यहां द्वारिकाधीश मंदिर, कुसुम सरोवर, गीता मंदिर इत्यादि भी दर्शनीय है।

श्री कृष्ण जन्म स्थान मथुरा में मंदिर निर्माण के बारे में विद्वान कई प्राचीन मंदिरों का वर्णन करते हैं। इनमें छः मंदिर प्रमुखतया गिने जाते हैं। प्रथम मंदिर – श्रीकृष्ण के प्रपौत्र वज्रनाभ द्वारा मथुरा शासनकाल में बनवाया गया था जो काफी वर्षों बाद नष्ट हो गया। द्वितीय मंदिर – जन्म स्थान के पुराने शिला लेख में ब्राह्मी लिपि के अनुसार ईसा पूर्व 80–57 के महाक्षत्रय सोडास के राज्यकाल में वसु नामक एक व्यक्ति ने श्रीकृष्ण जन्म स्थान पर एक मंदिर,

तोरणद्वार व वेदिका का निर्माण कराया था जो बाद में विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा नष्ट कर दिया गया था। तृतीय मंदिर – 400 ई. के लगभग सम्राट विक्रमादित्य के शासनकाल में बना। जिसे महमूद गजनवी ने सन् 1017 में तोड़ा और लूटा। चतुर्थ मंदिर – सम्वत् 1207 (सन् 1150) में मथुरा के शासक महाराज विजयपाल देव के शासनकाल में जज्ज नाम के एक व्यक्ति ने एक मंदिर बनवाया जिसे सिकन्दर लोदी के शासनकाल अर्थात् सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में नष्ट कर दिया गया। पंचम मंदिर – जहांगीर के शासनकाल में ओरछा के राजा वीरसिंह जूदेव बुन्देला ने एक मंदिर बनवाया जिसे औरंगजेब ने 1669 में नष्ट कर दिया। षष्ठम मंदिर – वर्तमान श्रीकेशवदेव मंदिर का निर्माण 6

सितम्बर 1958 को हुआ जो श्री मदनमोहन मालवीय, श्री जगमोहन बिडला इत्यादि के सहयोग से बना था।

मथुरा के ठाकुर द्वारिकाधीश मंदिर की स्थापना करीब दो सौ वर्ष पूर्व हुई थी। इसकी स्थापना के बाद से प्रतिवर्ष सावन की तिथि से एक माह तक राजाधिराज नित्य प्रति सोने व चांदी के हिण्डोलों में दर्शन देते हैं। इन हिण्डोलों का निर्माण ठाकुरजी के अनन्य भक्त हरगुलाल बेरीवाला ने सन् 1942 से बनवाना शुरू करवाया था जो 1947 में, पांच वर्षों के अंतराल में बनकर तैयार हुए थे। इन्हें बनारस के कारीगरों ने एक लाख तोला चांदी व दो हजार तोला सोना से तैयार किया था। अलग-अलग 103 टुकड़ों में बने इन हिण्डोलों में 1947 में श्रावण शुक्ल तृतीया को

ठाकुरजी को विराजमान किया गया था। इन हिण्डोलों को उनके गृह से बाहर निकालने व सजावट इत्यादि में काफी लोग मदद करते हैं। राजाधिराज बाजार में स्थित द्वारिकाधीश मंदिर के अलावा वृंदावन के प्रसिद्ध बांके बिहारी मंदिर में भी हरियाली तीज यानि श्रावण शुक्ल तृतीया के दिन वर्ष में केवल एक बार ठाकुरजी सोने व चांदी के कई मन भारी हिण्डोलों में विराजते हैं।

मथुरा के द्वारिकाधीश मंदिर में भगवान कृष्ण और राधा जिन सोने और चांदी के बने तीन विशाल झूले में दर्शन देते हैं, उनमें से दो झूले चांदी के हैं व तीसरा सोने से बना है। श्रावण माह में मंदिर में फलों, पत्तियों, फूलों, कपड़ों आदि से बने झूलों को भी स्थापित किया जाता है और उन्हें विभिन्न अवसरों पर प्रदर्शित किया जाता है।

मथुरा से वृंदावन लगभग तेरह कि. मी. की दूरी पर है। मथुरा, गोवर्धन, गोकुल इत्यादि तीर्थ स्थानों की यात्रा के लिए प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं तो वृंदावन कैसे अच्छा रह सकता है। यह वास्तव में मंदिरों की नगरी है। बताया जाता है कि वृंदावन में पांच हजार से अधिक मंदिर हैं और

इनमें से अधिकतर मंदिर परिवारों द्वारा बनाये गये हैं। कुछ तो काफी ऐतिहासिक महत्व के भी हैं। कहा जाता है कि कृष्ण भगवान ने अपना बचपन यहीं बिताया था।

वृंदावन चौराहे से आगे रिव्शा इत्यादि नहीं जाते हैं। यहां से पैदल ही मार्ग के दोनों किनारे पर स्थित मंदिरों, भवनों को देखते निहारते हुए आगे बढ़ने इस कारण भी आनन्द विभोर कर देता है कि हजारों वर्षों पूर्व इसी भूमि पर भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी लीला से न केवल मन मोह लिया था अपितु जन सामान्य की दिन प्रतिदिन की कठिनाईयों को भी हर लिया था। मथुरा से वृंदावन जाते समय सड़क मार्ग के दोनों ओर वृक्ष, लताओं, पुष्पों को देखने मात्र से ही ऐसा लगता है मानो हम उसी युग में

पहुंच गये हों जहां कभी भगवान श्रीकृष्ण बाल गोपालों, राधा के संग विचरण किया करते थे। इन वृक्ष, लताओं, पुष्पों से स्वतः ही एक नाता—सा जुड़ जाता है, जो फिर ताउम्र आंखों में घूमते रहते हैं।

यहां राधाबाग स्थित कात्यायिनी मंदिर को देश के 57 शक्ति पीठों में से एक माना जाता है, कहा जाता है कि यहां माता सती के केश गिरे थे।

यहां कई अन्य मंदिर भी हैं जिनमें रंगेजी मंदिर, गोविन्द मंदिर, ठाकुर बांके मंदिर, पागल बाबा मंदिर शामिल हैं। ठाकुर बांके बिहारी मंदिर के दर्शन को आवश्यक माना गया है। ठाकुर बांके बिहारी मंदिर में ठाकुरजी के बालस्वरूप की सेवा की जाती है। होलिका दहन के बाद चैत्र मास की द्वितीय तिथि से



मथुरा के द्वारिकाधीश मंदिर का मनोरम दृश्य

ठाकुरजी के दर्शन हेतु ग्रीष्म कालीन सेवा शुरू हो जाती है जिसमें पट सुबह एक घंटा पहले पौने आठ बजे व सायंकाल एक घंटा देरी से साढ़े नौ बजे यानि एक घंटा देरी से बंद होते हैं। दर्शन के साथ-साथ भोग राग की सेवा में भी बदलाव होता है। राजभोग आरती के साथ दोपहर बारह बजे बंद होते हैं जबकि पहले अपराह्न एक बजे बंद होते थे। तीसरे पहर मंदिर के पट साढ़े पांच बजे खुलते हैं। राजभोग व शयनभोग दर्शन बंद होने से पांच मिनट पूर्व आरती की जाती है। दीपावली तक मंदिर में दर्शनों का क्रम यही रहता है।

राधा गोविंद देव मंदिर के बारे में कहा जाता है कि पहले यह सात

मंजिला था परन्तु औरंगजेब ने इसके ऊपरी चार मंजिलों को इसलिए तुड़वा दिया था क्योंकि सात मंजिलों से दीपकों का प्रकाश दिल्ली तक पहुंचता था।

राधा रमण मंदिर की भी विशेष मान्यता है। रंग लक्ष्मी मंदिर में सोने जवाहरात जड़ित लक्ष्मी व रंगनाथ ठाकुर के विग्रह हैं। इस मंदिर के अलावा अन्य बने इस मंदिर के भीतर स्थित मंदिरों के कलश भी सोने के हैं। राधा गोविंद मंदिर की वास्तुकला बेजोड़ है तो राधा वल्लभ मंदिर की कलात्मक देखते बनती है। ठाकुर मदन मोहन मंदिर की कलात्मकता देखते बनती है। ठाकुर मदन मोहन मंदिर वृंदावन के प्राचीन

मंदिरों में से एक गिना जाता है। राधा दामोदर मंदिर के बारे में कहा जाता है कि यहां वह गिरिराज शिलाखंड है जिसे भगवान कृष्ण ने सनातन गोस्वामी को यह कहते हुए दिया था। इस शिलाखंड की चार परिक्रमा करने मात्र से ही गोवर्धन की सप्त कोसी परिक्रमा का फल मिलेगा। राधा माधव मंदिर काफी विशालता लिए हैं व कहा जाता है कि इसके अंदर कत्थूर शैली के कई छोटे मंदिर हैं। वृंदावन शाह जी मंदिर के खम्भे टेढ़े मेढ़े होने के कारण इसे टेढ़े खम्भे वाला मंदिर भी कहा जाता है।

बताया जाता है कि इस मंदिर के एक कमरे में बहुमूल्य व प्राचीन कलात्मक वस्तुएं, भित्ति चित्र, मुगल काली सौंदर्य सामग्री रखे हुए हैं जो आम जनता को बसंत पंचमी, श्रावण मास की त्रयोदशी व चतुर्दशी को दिखाये जाते हैं।

गोपेश्वर महादेव को वृंदावन का कोतवाल कहा जाता है। यहां वंशीवट मार्ग में गोपेश्वर महादेव का मंदिर है। यहां प्रातःकाल शिवलिंग की पूजा अर्चना होती है तो शाम को शिवलिंग को गोपी रूप में सजा धजाकर पूजा जाता है।

यमुना के किनारे लाल पत्थर से बना युगल किशोर मंदिर भी अपनी



बांके बिहारी मंदिर, वृंदावन का दृश्य

बेजोड़ वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। यह 1563 में बनाया गया था। कहा जाता है कि पहले यहां पर कुषाणकालीन कृष्ण की प्रतिमा थी जिसे बाद में राजस्थान के नीम का थाना स्थान में ले गये थे।

इनके अलावा यहां बिड़ला मंदिर, राधा गोपीनाथ मंदिर, कात्यायिनी पीठ मंदिर, टिकरी वाला मंदिर, तराथ मंदिर, श्याम सुन्दर मंदिर, मीराबाई मंदिर, लटुरिया हनुमान मंदिर, राधा गोकुलानन्द मंदिर आदि भी हैं, जहां सैकड़ों श्रद्धालु रोजाना पहुंचते हैं।

गोवर्धन परिक्रमा में सबसे पहले दानघाटी मंदिर इसके सामने ही लक्ष्मीनारायण मंदिर के दर्शन होते हैं। गोवर्धन परिक्रमा पथ में आन्धौर से होते हुए पूंछेरी गांव पहुंचा जाता है जो आन्धौर से लगभग तीन कि.मी. की दूरी पर है। यहां परिक्रमा पथ पर ही लोठा जी का मंदिर है। कहा जाता है वे श्रीकृष्ण जी के दोस्त थे और बचपन में वे दोनों साथ में कुश्ती करते थे पर जब द्वारका जाने के लिए श्रीकृष्ण को ब्रजभूमि छोड़ना पड़ा तो उन्होंने लोठा जी से भी साथ चलने के लिए कहा पर उन्होंने साथ चलने से मना कर दिया और कहा कि जब तक वे वापस ब्रजभूमि नहीं लौटेंगे, तब तक अन्न पानी ग्रहण नहीं करेंगे।

तब श्रीकृष्ण ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि वे बिना खाये भी तन्दरुस्त रहेंगे। हालांकि श्रीकृष्ण भगवान कभी दोबारा ब्रजभूमि वापस नहीं आये पर लोगों का विश्वास है कि वे एक दिन लोठा जी से मिलने जरूर ब्रजभूमि वापस आयेंगे। यहाँ लोठा जी की मूर्ति की पूजा श्रद्धालु कर आगे बढ़ते हैं।

जगह—जगह पर श्रद्धालु दंडवत परिक्रमा, दूध परिक्रमा, सोहनी सेवा परिक्रमा, एक सौ आठ दण्डवत परिक्रमा करते हुए आगे बढ़ते हैं।

दण्डवत परिक्रमा में श्रद्धालु जमीन पर छाती रखकर हाथों को आगे रखते हुए वहां पर एक पत्थर रखकर हाथों को आगे रखकर उठते हैं और फिर जहां पर पत्थर

रखा हुआ था वहां पर लेटकर हाथों को आगे बढ़ाकर इस प्रक्रिया को करते हुए आगे बढ़ते हैं। इसमें लगभग आठ दिन का समय परिक्रमा करने में लगते हैं। दण्डवत परिक्रमा करने वाले श्रद्धालु रात को वहीं विश्राम करने के उपरांत फिर अगले दिन वहीं से परिक्रमा (दण्डवत) शुरू करते हैं। इस परिक्रमा में एक बार आगे बढ़ने पर पीछे जाना वर्जित होता है। कई श्रद्धालु 108 दण्डवत परिक्रमा भी करते हैं। 108 दण्डवत परिक्रमा में श्रद्धालु एक पत्थर की तरह 108 पत्थर आगे रखते हैं, जिसमें एक पत्थर आगे रखने के बाद दण्डवत होना पड़ता है व इस तरह एक ही जगह पर 108 पर यह प्रक्रिया दुहराने के बाद तब अगला कदम बढ़ाया जाता है। इस परिक्रमा में



राधा गोविंद देव जी मंदिर, वृंदावन का दृश्य

कई साल लग जाते हैं क्योंकि एक दिन में पन्द्रह मीटर से अधिक आगे नहीं बढ़ा जा सकता है। जगह-जगह पर ऐसे पत्थरों का ढेर भी देखा जा सकता है।

दूध परिक्रमा में श्रद्धालु हाथ में एक दूध का बर्तन, जिसके तल पर एक छोटा छेद होता है लेकर आगे बढ़ते हैं। इसमें बर्तन में पूरे परिक्रमा पथ पर दूध चढ़ता रहता है। परिक्रमा पथ पर चढ़ाये गये दूध की धार भी जगह-जगह पर दिखाई देती है।

परिक्रमा पथ पर आगे जतीपुरा नामक स्थान मिलता है, यहां मुखारविंद मंदिर है जहां एक विशाल प्रस्तर प्रतिमा है। श्रद्धालु यहां दूध चढ़ाते हैं। जतीपुरा का नाम श्रीनाथ जी की ज्योति होने से पड़ा बताते हैं।

इसके पास ही पर्वत की चोटी पर गोपालजी मंदिर है, कहा जाता है कि श्रीनाथ जी की मूर्ति पहले यही थी, इससे कुछ आगे श्री गिरिराज दंडवती शिला बतायी जाती है। कहा जाता है कि इसके 7 परिक्रमा से भी गोवर्धन पर्वत की पूरे 21 कि. मी की परिक्रमा पूरी मानी जाती है।

परिक्रमा मार्ग में जगह-जगह पर श्रद्धालु भजन कीर्तन करते हुए भी दिखाई देते हैं। इनमें सूरदास भी शामिल होते हैं। कई जगह पर

परिक्रमा में झाड़ू बेचने वाले भी दिखाई देते हैं। श्रद्धालु झाड़ू से परिक्रमा पथ की सफाई करते हैं। यह भी गोवर्धन परिक्रमा का एक हिस्सा है। कई दाम्पत्य लोग भी मिलकर परिक्रमा करते हैं।

इन परिक्रमा में पुरुषों के अलावा महिलाएं भी बढ़-चढ़ कर भाग लेती हैं। कई महिलाएं दण्डवत परिक्रमा के दौरान अपने पति के पैर हर एक दण्डवत में छूने के बाद आगे बढ़ती हैं।

बड़ी परिक्रमा पूरी करने के उपरांत छोटी परिक्रमा की जाती है। छोटी परिक्रमा में राधा कुंड व श्याम कुंड के दर्शन होते हैं। राधा कुंड के बारे में कहा जाता है कि इस कुंड का निर्माण राधा ने स्वयं अपने चूड़ी से किया था पर इसमें पानी नहीं था। इसमें श्याम कुंड से पानी आता है।

श्रद्धालु राधा श्याम कुंड की पूजा अर्चना करते हैं। इन कुंडों में पैर धोना वर्जित है। इस मार्ग में कई मालाओं, शंख इत्यादि की दुकानें भी हैं।

माना जाता है कि यहां गोवर्धन परिक्रमा मार्ग में 108 कुंड हैं। कहा यह भी जाता है कि यहां 250 से अधिक कुंड जगह-जगहों पर हैं, जिनमें गौरी कुंड, गोविन्द कुंड, इन्द्र कुंड, रुद्रा कुंड, ललिता कुंड, संकर्षण कुंड इत्यादि भी शामिल हैं। दाऊ बलराम को संकर्षण के नाम से भी जाना जाता है। यहां बलराम जी का मंदिर भी है। गौरी कुंड के बारे में कहा जाता है कि वहां पर चंद्रावली नामक गोपिका मां पार्वती यानि गौरी की आराधना, कृष्ण भगवान से मिलने की आस में करती थी। गोविंद कुंड के बारे में कहा जाता है कि यहां भगवान इंद्र



वृंदावन में गोवर्धन पर्वत का विहंगम दृश्य

ने श्रीकृष्ण भगवान का अभिषेक किया था। रूद्रा कुंड को भगवान रूद्र यानि शिव का, श्रीकृष्ण के दर्शन हेतु प्रार्थना स्थल से जोड़ा जाता है। इन्द्रा कुंड को भगवान इंद्र के श्रीकृष्ण के आराधना स्थल से जोड़ा जाता है।

इस प्रकार छोटी परिक्रमा के समाप्त होने पर सात कोस यानि 14 मील (21 कि.मी.) की परिक्रमा मार्ग तय होती है। आन्यौर पुछरी, जतिपुरा होते हुए वापस दानघाटी यानि गोवर्धन की परिक्रमा को बड़ी परिक्रमा कहते हैं। यह लगभग चार कोस यानि 12 कि.मी. की है। जबकि गोवर्धन राधाकुंड, कुसुम सरोवर होते हुए पुनः गोवर्धन वापस लौटने की 3 कोस (9 कि. मी.) की परिक्रमा को छोटी परिक्रमा कहा जाता है।

उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी में स्थित है। यह मेला मुडियो पूनो के नथत वरुणावत पर्वत की 15 कि.मी. की परिक्रमा भी इसी तरह होती है। इसे वारुणी पंचकोसी यात्रा कहा जाता है जो प्रतिवर्ष चैत्र मास में कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिन शुरू होती है। असी गंगा, वरुण गंगा व गंगा, भगीरथी से घिरे वरुणावत की तलहटी में उत्तरकाशी स्थित है। बांस, बुरांस, देवदार, चीड़ इत्यादि के घने जंगलों के बीच इस पौराणिक व धार्मिक यात्रा में श्रद्धालु 15 कि.मी.

पैदल यात्रा में वरुणावत पर्वत की परिक्रमा करते हैं। इस यात्रा मार्ग में व्यास कुंड, गौतम गंगा, तपलिनि ऋषि की गुफा के अलावा कई देवी देवताओं के दर्शन होते हैं।

पंचकोसी वारुणी माता मार्ग पर बड़ेणी संगम पर वरुणेश्वर महादेव, बसूंगा में बासू कंडार, साल्ड में जगन्नाथ एवं अष्टभुजा ज्वाला देवी, ज्ञाणजा में ज्ञानेश्वर महादेव एवं व्यास कुंड, वरुणावत शीर्ष पर शिखरेश्वर, राजराजेश्वरी एवं विमलेश्वर महादेव, संग्राली में कंडार देवता, पाटा में नर्मदेश्वर महादेव, गंगोरी त्रिवेणी घाट पर गंगेश्वर, लक्षेश्वर, उज्जवला देवी, महिषासुर मर्दिनी, कंडार देवता, परशुराम, अन्नपूर्णा, भैरव, गोपेश्वर महादेव, शक्ति मंदिर, हनुमान मंदिर, कीर्तेश्वर महादेव, काशी विश्वनाथ एवं मणिकर्णिका घाट

स्थित गंगा मंदिर के दर्शन होते हैं। पन्द्रह कि.मी. की इस यात्रा में मणिकर्णिका घाट एवं वडेथी चुंगी में वरुण गंगा और गंगा भगीरथी के संगम में स्नान के उपरांत पद यात्रा शुरू होती है। बसूंगा, साल्ड, ज्ञाणजा, वरुणावत के शीर्ष, संग्राली, पाटा होते हुए गंगोरी में उसी गंगा और भागीरथी के संगम पर स्नान होता है। तत्पश्चात् श्रद्धालु काशी विश्वनाथ मंदिर में पूजा अर्चना करते हैं। मान्यता है कि वरुणावत पर्वत में भगवान परशुराम एवं महर्षि वेदव्यास ने तपस्या की थी। यहां पदयात्रा से सौ यज्ञों का फल प्राप्त होना माना जाता है।

मथुरा के गोवर्धन में गुरुपूर्णिमा (जुलाई माह) को प्रतिवर्ष मुडिया पूर्णिमा मेला जुटाम से भी जाना जाता है।



वृंदावन में गोवर्धन परिक्रमा करते हुए भक्तगण

राष्ट्र के निर्माण में नारी का योगदान



सुश्री सं.ग. श्रीमती
सेवानिवृत्त हिंदी अधिकारी
नं. 135, एजीज लेआउट
न्यू बी.ई.एल. रोड, बेंगलुरु, कर्नाटक

भगवान ने मानव को दो तरह से बनाया है। प्रथम माध्यम से मानव का जीवन संभव हो पाता है और नारी के प्राकृतिक चक्र का संतुलन बना रहता है। दूसरा जिसे उन्होंने शारीरिक क्षमता के साथ भार उठाने की शक्ति दी अर्थात् पुरुष।

कोई भी राष्ट्ररूपी गाड़ी इन्हीं दो पहियों पर टिकी हुई होती है। एक राष्ट्र के निर्माण में नारी का योगदान महत्वपूर्ण है। अगर नारी के विकास को केन्द्र बिन्दु न रखा जाए तो वह राष्ट्र ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाएगा। अतः मनु ने कहा है —

*यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता
यतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया।*

जहां पर नारी की इज्जत होती है तथा उसे सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया जाता है, वहां हर प्रकार की समृद्धि तथा सुख रहता है। वहां पर भगवान का वास भी होता है। महिलाओं को भगवान ने पुरुषों से अधिक सहनशक्ति तथा संवेदना का भाव दिया है जिससे उनके लिए कठिन मुश्किलों को हल करना पुरुषों के मुकाबले आसान है। किसी भी नवजात शिशु की प्रथम गुरु उसकी माँ होती है। अर्थात् उसके जीवन का पूरा ताना-बाना उसकी माँ के संस्कारों और विचारों पर

निर्भर करता है। इसलिए राष्ट्र के निर्माण की इकाई एक महिला है।

भारतीय महिलाओं का योगदान इतिहास में अप्रतिम रहा है। सिर्फ स्वाधीनता संग्राम के समय को देखा जाए तो भारतीय महिलाओं का योगदान महान है। स्वाधीनता संग्राम के दौरान महारानी लक्ष्मीबाई, किन्नूर चेन्नम्मा, अब्बक्का, विजयलक्ष्मी, पंडित अरुणा आसफ अली, सरोजिनी नायडू, कमला नेहरू, सुचेता कृपलानी, मणिबेन पटेल, अमृत कौर जैसी स्त्रियों ने आगे जाकर अपना अप्रतिम योगदान दिया। प्राचीन भारत में सीता, सावित्री, द्रौपदी, अरुंधती, अनुसूइया जैसी महान स्त्रियों ने अपने ज्ञान के माध्यम से मानव समाज को एक सकारात्मक मार्ग दिखाया।

मध्य काल में मुगल तथा विदेशी लुटेरों की कुदृष्टि ने महिलाओं को बेहद संकुचित होने पर मजबूर कर दिया और लंबे समय तक इस भावना का समाज में बने रहना एक कुप्रथा के रूप में बदल गया।

आजादी के पश्चात महिलाओं ने सामाजिक तथा राजनीतिक व्यवस्था में अपनी स्थिति को लगातार बेहतर किया है। उदाहरण के लिए, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित दुनिया की प्रथम महिला थी जिन्हें



गगनदीप कंग आदि ने भारत के नाम को गौरवान्वित किया है।

भारत के आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान बहुत ही ज्यादा रहा है। चाहे चिकित्सा क्षेत्र हो, सुरक्षा क्षेत्र हो, चाहे इंजिनियरिंग तथा सिविल क्षेत्र हो, पुलिस या विज्ञान के क्षेत्र हो, प्रत्येक क्षेत्र में आज भारतीय स्त्रियां सम्मानित पद पर आसीन हैं। आधुनिक महिलाएं अपने परिश्रम से देश की आर्थिक परिस्थिति को मजबूत कर रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा का अध्यक्ष बनाया गया। सरोजिनी नायडू आजाद भारत की प्रथम राज्यपाल बनीं। सुचेता कृपलानी प्रथम महिला मुख्यमंत्री तथा इंदिरा गांधी भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री बनीं।

आधुनिक युग में भी ऐसी महिलाएं हुई हैं जिन्होंने लोगों की मानसिकता को बदलने का काम किया है। भारतीय महिलाओं ने सिर्फ भारत में ही नहीं, विदेशों में भी अपना झंडा फहराया है। उदाहरण के लिए, कल्पना चावला, रितु करिधाल, चंद्रिमा साहा, मुत्तय्या वनिता,

भारतीय गृहणियां दुनिया की सबसे कुशल परिवार संचालक के रूप में जानी जाती हैं। पिछड़े वर्ग की महिलाएं भी आज बुनाई जैसे छोटे उद्योग चलाकर देश के विकास को सुनिश्चित कर रही हैं। फिर भी आधुनिक समय में महिला सशक्तिकरण चर्चा का एक विशेष विषय बन गया है। राष्ट्र के विकास में महिलाओं का अधिकार तथा महत्व के बारे में, समाज में जागरूकता लाने के लिए मातृ दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आदि अनेक कार्यक्रम सरकार द्वारा



मनाए जाते हैं। नारी सशक्तिकरण का असली अर्थ तब समझ में आएगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जायेगी तथा वह हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर फैसला कर सकें।

भारत के शहरी क्षेत्रों की महिलाएं रोज़गार शील होती हैं। आंकड़ों के अनुसार, भारत के शहरों में सॉफ्टवेयर उद्योग में लगभग 30 प्रतिशत महिलाएं काम करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक संख्या में महिलाएं कृषि तथा इससे जुड़े क्षेत्रों में दैनिक मज़दूरी करती हैं।

भारत की लगभग 50 प्रतिशत जनसंख्या महिलाओं की होने के कारण, पूरे देश के विकास के लिए, हर क्षेत्र में महिलाओं का सशक्तिकरण अत्यन्त आवश्यक है। आज देश में नारी शक्ति को सभी दृष्टि से सशक्त बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। आज की महिला पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बड़े से बड़े कार्यक्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। फिर चाहे काम मज़दूरी का हो या अंतरिक्ष में जाने का। महिलाएं अपनी योग्यता हर क्षेत्र में साबित कर रही हैं।

महिला सशक्तिकरण के कारण महिलाओं के जीवन में अनेक बदलाव हुए हैं। बदलते युग के साथ आधुनिक नारी पढ़-लिखकर स्वतंत्र है। अब वह चारदीवारी से बाहर निकलकर देश के लिए महत्वपूर्ण कार्य करती है। यूरोप और अमेरिका ही नहीं, आज इज़रायल, मिस्र तथा छोटे-छोटे अरब देशों एवं अफ्रीका जैसे छोटे देशों की अनेक महिलाओं ने वायुयान संचालन एवं सेना, पुलिस तथा परिवहन के क्षेत्रों में भी कार्य करके पुरुषों की बराबरी करने का साहस दिखाया है।

भारतीय सेना ने देश की युवा महिलाओं पर प्रशंसनीय भरोसा जताया है। अब महिलाओं को भी सेना में लड़ाकू विमानों के संचालन जैसी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी जा रही हैं। संसार के विकसित तथा विकासशील देशों में नारी का अपने राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। सदियों से संघर्ष करके महिलाओं ने बड़ी कठिनाई से इस स्थिति को प्राप्त किया है। वह पुरुष के समान ही राष्ट्र निर्माण एवं विकास में भाग ले रही हैं। अब कामकाजी महिलाएं निश्चित होकर राष्ट्र के विकास में सहयोगिनी बनी हुई हैं।

कहा जाता है कि महिलाएं ही परिवार बनाती हैं। परिवार से घर बनता है तथा घर समाज का निर्माण करता है। समाज से ही देश का निर्माण होता है। अर्थात् महिलाओं के विकास के बिना देश और समाज का विकास संभव नहीं है। अतः महिलाओं की क्षमता को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे वह अपने सपने को साकार करके देश के विकास में योगदान दे सकें।



प्रकृति तथा मानव का संबंध



सुश्री राजकुमारी शर्मा
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (सेवानिवृत्त)
एम-143, सारुथ सिटी- I,
गुरुग्राम, हरियाणा-122001

प्रकृति तथा मानव का बहुत गहरा सम्बन्ध है। मानव जीवन में प्रकृति की कल्पना ईश्वर प्रदत्त एक अनमोल उपहार के रूप में की गई है। प्रकृति को माँ के समान माना गया है। जिस प्रकार माँ अपनी संतान का लालन-पालन निःस्वार्थ भाव से करती है उसी प्रकार प्रकृति का मानव जीवन में महत्व है। बिना प्रकृति के धरती पर मानव का अस्तित्व असंभव है। प्रकृति में सजीव तथा निर्जीव दोनों तरह के घटक शामिल हैं।

मानव जीवन में प्रकृति का महत्व

प्रकृति मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। मानव जीवन के अस्तित्व के लिए प्रकृति की भूमिका अहम है। इससे मानव जीवन में अनगिनत लाभ प्राप्त होते हैं।

उनमें से कुछेक का वर्णन नीचे किया गया है —

1. जीवित रहने के लिए पेड़-पौधों से ऑक्सीजन प्राप्त होना :—

हमारा जीवन पूर्णतया प्रकृति पर निर्भर करता है। सांस लेने के लिए जो ऑक्सीजन हमें चाहिए वह पेड़-पौधों से प्राप्त होती है। इस प्रकार मानव का श्वसन तंत्र प्रकृति द्वारा नियंत्रित होता है। ऑक्सीजन के बिना मानव-जीवन एक पल के लिए भी संभव नहीं है। इस प्रकार सांस लेने के लिए शुद्ध वायु प्रकृति द्वारा प्रदान किया गया उपहार है।

2. भोजन तथा पानी जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति

सांस लेने के बाद मानव की भोजन तथा पानी जैसी आवश्यकताएं भी प्रकृति द्वारा ही पूरी की जाती है।

खाने के लिए भांति-भांति के पदार्थ पेड़-पौधों से प्राप्त होते हैं चाहे वे फल, सब्जी, अनाज अथवा अन्य रूप में हों अथवा अन्य मांसाहारी जीवों के रूप में हों। इसी प्रकार नदियों, सरोवर, झरनों, समुद्र तथा अन्य स्रोतों से मानव को जल तथा अन्य खनिज प्राप्त होते हैं।

3. अनेक रोगों के उपचार में प्रकृति का योगदान

प्रकृति के साथ समय बिताने से चिंता तथा डिप्रेशन जैसी खतनाक बीमारियों से राहत मिलती है। इसका एक दृष्टांत इकोथेरेपी है जिसमें डिप्रेशन जैसी बीमारी को दूर करने में सहायता मिलती है। अनेकों प्रकार की जड़ी-बूटियों, नीम जैसे पौधों से त्वचा सम्बन्धी बीमारियों को ठीक किया जा सकता है। नेचुरोपैथी जैसी थेरेपी

से भी उपचार किया जाता है। आयुर्वेद चिकित्सा में जड़ी-बूटियों द्वारा रोगों का इलाज किया जाता है जो कई बीमारियों में काफी लाभप्रद हैं।

4. मानव के लिए प्रकृति एक सुरक्षा कवच के समान है

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि प्रकृति मानव के लिए सुरक्षा कवच प्रदान करती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव प्रकृति पर निर्भर करता है। प्रकृति की सुरक्षा करने से ही मानव का जीवन सुरक्षित है। मानव जीवन में संतुलन बनाए रखने में प्रकृति का बहुत बड़ा योगदान है। वह मानव की सहचरी है। जीवन में सामंजस्य बनाए रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रकृति की रक्षा करने से मानव की रक्षा संभव है।

प्रकृति से मानव को सीख

प्रकृति से मानव को अनेक सीख मिलती हैं। इसे मानव के लिए सबसे उत्तम आशीर्वाद के रूप में ईश्वर ने प्रदान किया है। यूँ तो प्रकृति में अनगिनत गुण हैं परंतु उनमें से कुछ गुण नीचे दिए गए हैं जिनसे मानव को सीख लेते हुए अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए :-

(i) **परोपकार** — प्रकृति से मानव परोपकार का गुण ग्रहण कर सकता है। परोपकार की भावना से प्रकृति ओत-प्रोत है। परोपकार करने के बदले वह किसी भी सजीव या निर्जीव प्राणी से कुछ नहीं मांगती।

(ii) **सहनशीलता** — सहनशीलता जैसा गुण शायद प्रकृति से अधिक किसी में भी नहीं मिलता। इतने प्राणियों, जीव-जंतुओं का भार उठाने की क्षमता रखने वाली प्रकृति सहनशीलता का एक जीता-जागता उदाहरण है जिससे मानव जीवन में उन्नति की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है।

(iii) **निःस्वार्थ भावना** — निःस्वार्थ भावना का गुण हमें प्रकृति ही सिखाती है। सभी का कल्याण तथा भला करते हुए प्रकृति कभी भी किसी से कुछ नहीं मांगती। इस निःस्वार्थ सेवा के लिए

पेड़-पौधे, नदियां, समुद्र आदि ज्वलंत उदाहरण हैं। पेड़ों से हमें शुद्ध हवा, फल इत्यादि खाद्य सामग्री प्राप्त होते हैं तथा नदियां, समुद्र आदि जल के बड़े स्रोत हैं परंतु इन सबको बदले में कुछ नहीं चाहिए। इस प्रकार की निःस्वार्थ भावना से मानव जीवन संवर सकता है अर्थात् अपना कार्य निःस्वार्थ भाव से करते हुए बदले में कुछ मिलने की भावना नहीं रखनी चाहिए।

(iv) **निरंतरता** — निरंतरता भी एक बहुत बड़ा गुण है। जिस प्रकार प्रकृति की दिनचर्या निरंतर चलती रहती है उसी प्रकार मानव जीवन में भी निरंतर आगे बढ़ने की भावना की सीख प्रकृति से ही मिलती है।

(v) **बलिदान** — बलिदान की भावना भी प्रकृति में पाई जाती है। पर्यावरण की स्वच्छता तथा पर्यावरण का संतुलन बनाए रखते



हुए प्रकृति के बलिदान का अहसास होता है। प्रकृति की बलिदान की भावना के कारण ही मानव अपने जीवन का आनंद उठाता है। वह जीवंत होता है तथा उसे सांत्वना और संतोष की अनुभूति होती है। इस बलिदान जैसे गुण को मानव को अपने जीवन में उतारना नितांत आवश्यक है।

(vi) मानव की उपलब्धियों में प्रकृति से सीख — मानव ने अपने जीवन में बहुत सी उपलब्धियां प्राप्त की हैं। उनमें प्रकृति का बहुत बड़ा हाथ है। महान वैज्ञानिक न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत प्रकृति से ही प्रेरित है। प्रकृति प्रेमी कवियों ने प्रकृति से प्रेरणा लेकर अनेकों सुंदर रचनाएं लिखी हैं जिनसे मानव जीवन को अनेकों प्रकार से प्रोत्साहन मिलता है।

(vii) विनम्रता — फलों से लदे हुए, झुके हुए वृक्ष हमें विनम्रता का गुण सिखाते हैं। कहने का तात्पर्य है कि प्रसिद्धि प्राप्त करने या सम्पन्नता होने पर भी मानव में विनम्रता होनी आवश्यक है। तभी मानव जाति की सफलता तथा कल्याण संभव है।

(ix) प्रकृति से मानव जीवन में

अन्य सीख — मानव जीवन में कई छोटी-छोटी परंतु महत्वपूर्ण बातें ध्यान देने योग्य होती हैं। उदाहरणार्थ पतझड़ में पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं परंतु कुछ समय के बाद नई पत्तियां, कोपलें आती हैं तथा वही पेड़ हरे-भरे हो जाते हैं। इससे यह सीख मिलती है कि मानव को असफलता से कभी निराश नहीं होना चाहिए। उसे सदैव प्रयासरत रहना चाहिए। प्रयास करते रहने से सफलता अवश्य हाथ लगती है। असफलता के बाद विचलित हुए बिना, मानव को प्रयत्न जारी रखने चाहिए तथा सकारात्मक सोच रखनी चाहिए तभी जीवन में प्रगति संभव है।

(x) भेदभाव रहित कार्य करना — प्रकृति से भेदभाव रहित कार्य करने की विशेषता ग्रहण की जा सकती है। छोटे से छोटा जीव भी प्रकृति के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि बड़ा जीव। सूर्य की रोशनी, हवा, पानी इत्यादि जैसी प्रकृति की वस्तुएं सभी को एक समान प्राप्त होती हैं। उनमें बड़े-छोटे, ऊंच-नीच का कोई भेदभाव नहीं किया जाता। भेदभावरहित भावना का गुण मानव को प्रकृति से ही सीख के तौर पर

मिला है। अपने जीवन में आत्मसात कर मानव जीवन प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

प्रकृति का संरक्षण

प्रकृति के संरक्षण से तात्पर्य है जैव विविधता की रक्षा, संरक्षण और पुनः स्थापना। पृथ्वी पर संसाधनों की उपलब्धता सीमित है। इन संसाधनों का दुरुपयोग करते हुए मानव इन संसाधनों को समाप्त करता जा रहा है। आज शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट किया जा रहा है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के कारण पर्यावरण प्रदूषण, वन्यजीवों का विनाश, ग्लोबल वार्मिंग जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं। पारिस्थितिकी असंतुलन जैसी समस्याओं के कारण पृथ्वी पर जैव विविधता और जीवन के लिए भी खतरा उत्पन्न होने लगा है। कहीं अत्यधिक बाढ़ जैसे हालात उत्पन्न हो रहे हैं तो कहीं फैक्टरियों, कल-कारखानों के अपशिष्ट को पानी में बहाने के कारण जल-प्रदूषण की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। जंगलों-पेड़ों के काटने के कारण कई वन्य जीवों की प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर हैं। प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा न करने के कारण मानव

जीवन का अस्तित्व भी खतरे में है। भावी पीढ़ियों को होने वाले नुकसान में शामिल हैं – पानी की कमी होना, सांस के लिए शुद्ध वायु की कमी, वनस्पति की कमी होने से ताजा भोजन का उपलब्ध न होना। प्रकृति की मिट्टी में भी कीटनाशकों, केमिकलयुक्त हानिकारक पदार्थों के प्रयोग से भूमि की उर्वरक क्षमता नष्ट हो रही है। खाद्य पदार्थों के ऊपर भी इनका प्रभाव पड़ रहा है तथा इनके उपयोग से अनेकों बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं।

प्रकृति के साथ मानव द्वारा खिलवाड़ किए जाने के कारण गंभीर परिणाम भुगतने पड़ते हैं। इसी का परिणाम है कि आज दुनियाभर में कहीं बाढ़ आ रही है तो कहीं सूखे की स्थिति उत्पन्न हो रही है। तूफान आना, भूकंप आना, जमीन खिसकना आदि सभी इन परिणामों में शामिल हैं। प्रकृति का संतुलन बिगड़ने का सीधा प्रभाव जलवायु चक्र और पोषक चक्र पर पड़ रहा है।

जो प्रकृति सुरक्षा कवच के समान है उसकी सम्पत्ति की रक्षा करना हमारा कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व है। प्रकृति का संरक्षण केवल मानव जीवन के लिए ही नहीं अपितु सभी जीवों के लिए आवश्यक है। प्रकृति

के संरक्षण और संतुलन की बढ़ती हुई आवश्यकता पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके लिए कठोर कदम उठाने आवश्यक है तथा ठोस उपाय किए जाने चाहिए। कुछ उपाय नीचे दिए गए हैं –

(i) पेड़ों की अंधाधुंध कटाई को रोका जाना चाहिए तथा नए पेड़ लगाए जाने चाहिए।

(ii) पांच आर का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि कचरा प्रबंधन को कम किया जा सके। ये पांच आर हैं : रिफ्यूज, रिड्यूस, रीयूज, रीपर्पज, रिसाईकिल।

(iii) भूमि की उर्वरकता को बनाए रखने के लिए कीटनाशकों तथा केमिकल्स के प्रयोग को हतोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके स्थान पर गोबर तथा अन्य जैविक खाद का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(iv) वर्षा के पानी को संचयन करके जल का संरक्षण किया जा सकता है।

(v) सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का विकास किया जाना चाहिए।

(vi) फैक्टरियों, कारखानों के अपशिष्ट का सही निपटान किया जाना चाहिए।

अंत में यह कहना उचित होगा कि मानव पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर है। प्रकृति के बिना पृथ्वी पर न केवल मानव बल्कि किसी भी प्रजाति का पनपना संभव नहीं है। सभी के छोटे-छोटे प्रयासों से प्रकृति के संरक्षण में सहायता मिल सकती है। भावी पीढ़ी के अस्तित्व के लिए पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है। यह केवल हम सबके संतुलित प्रयास से ही संभव हो सकता है।



मराठा नवजागरण और राष्ट्रीय प्रतिरोध

प्रदीप तिवारी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय वित्त एवं संचार, लेखापरीक्षा
आकाशवाणी चौक, नागपुर

भारतीय नवजागरण वेदान्त बौद्ध धर्म और भक्ति आंदोलन के बाद चौथी बड़ी घटना है, जिसने इस देश के भविष्य को दूर तक प्रभावित किया है। इसमें कई तरह के रंग विद्यमान हैं। इसका सबसे बड़ा योगदान बुद्धिसम्मत आलोचनात्मक सोच है। नवजागरण ने लौकिकता, स्वतंत्रता, बौद्धिक खुलापन, आत्मनिर्भरता जैसे मूल्य दिए। मूलतः भारतीय नवजागरण में औपनिवेशिक सोच का ठीक-ठाक समावेश था। भारत उदारवादी आंदोलनों से गुजर रहा था। अतः राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए यह सबसे कठिन दौर था। भारत में नवजागरण धर्म के परिसर से बाहर नहीं निकल पाया है। भारतीय शुरू से ही धार्मिक स्वभाव के रहे हैं। निश्चय ही धार्मिक होने और धर्मांध होने में फर्क है। किसी भी युग में धर्म के खिलाफ बोलना आसान है लेकिन आम लोगों को धार्मिक कुप्रथाओं, भेदभावों और अंधविश्वासों से मुक्त करना हर युग में चुनौतीपूर्ण रहा है। 21वीं सदी में सभ्यता के शिखर पर हम अनुभव कर सकते हैं कि यह काम कितना दुष्कर है। इस समय भी बड़े स्तर पर लोगों के दिमाग में गोला-बारूद भरा हुआ है तो इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है कि 19वीं सदी में हिंदू धर्मक्षेत्र को तर्कक्षेत्र बनाना कितना कठिन रहा होगा।

आज यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या एक साथ धार्मिक और तार्किक होना संभव है? 19वीं सदी के भारतीय को दोनों के सह-अस्तित्व में ही समझा जा सकता है।

भारतीय नवजागरण के अधिकांश सुधारक ऐसे थे जो ईश्वरीय बोध और तार्किक सोच दोनों को साथ लेकर चल रहे थे। इसीलिए अंग्रेजों के आक्रमण से पूर्व सिर्फ महाराष्ट्र प्रांत है जहां जातीय चेतना के आधार पर राज्य का निर्माण हुआ था। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र में 19वीं सदी के नवजागरण की कई अंतर्धाराएं हैं जिसके कारण उसमें विरोधी तत्व भी मौजूद हैं। इन तमाम विरोधाभासों के बीच जो समानता है वह यह कि यहां संत समाज सुधारकों के अतिरिक्त शिवाजी महाराज को उतना ही महत्व देते थे जितना राजनीतिक रूप से अपेक्षित था। बंगाल और दक्षिण के समाज सुधार में यह नदारद था। महाराष्ट्र क्षेत्र की भक्ति पर मुख्यतः बारकरी संप्रदाय के विचारकों का प्रभाव था। इसके अलावा महाराष्ट्र में भक्त और संत को विभाजित करके कभी नहीं देखा गया, जिस तरह हिंदी साहित्य के मूल्यांकन में किया गया। हिंदी में सगुण कवि भक्त हैं और निर्गुण कवि संत हैं। बारकरी संतों में उच्च वर्ग और दलित दोनों श्रेणियों के भक्त हैं। उनकी विशिष्टता और अखण्डता को समझने की जरूरत है। दरअसल मराठी भक्ति आंदोलन को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए।

औपनिवेशिक भारत में बुद्धिवाद की मात्रा अनंत काल के लिए सामाजिक सुधारों तक अटकी नहीं रह सकती थी। बौद्धिक तर्क की परंपरा का उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता की मंजिल तक पहुंचना ऐतिहासिक

अनिवार्यता थी। इस अहसास का तीव्र और विस्फोटक होना जरूरी था कि हम गुलाम हैं। तिलक को राष्ट्रीय स्वतंत्रता से कम कुछ भी नहीं चाहिए था। यहां यह बताना आवश्यक है कि बाल गंगाधर तिलक के दिमाग में भारतीय राष्ट्र का जो नक्शा था, वह आर्य समाजी लाला लाजपत राय और ब्रह्म समाजी विपिन चन्द्रपाल से अधिक व्यापक था। लाल-बाल-पाल के राजनीतिक दौर की बात सभी जानते हैं। ये तीनों स्वदेशी, स्वराज्य, राष्ट्रीय शिक्षा और क्रांतिकारी संघर्ष के समर्थक थे, लेकिन इन तीनों में तिलक का बौद्धिक फलक अपेक्षाकृत अधिक लोकोन्मुखी, समावेशी और प्रभावशाली था। भारतीय राष्ट्रवाद के साथ स्थानीय भाषा, कला-संस्कृति और सामाजिक विशिष्टता के स्तर पर प्रांतीय राष्ट्रीय जागरण भी स्वाभाविक था।

महाराष्ट्र के नवजागरण में अंग्रेजी शिक्षा का व्यापक असर पड़ा था। धार्मिक परंपराओं, सामाजिक प्रथाओं और पुराने आदर्शों में परिष्कार की प्रवृत्ति शिक्षित लोगों में जोर पकड़ रही थी। ऐसे व्यक्तियों में सबसे पहला महत्वपूर्ण नाम गोपालहरि देशमुख का था उन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं को निकाला एवं पुणे में एक पब्लिक लाइब्रेरी भी बनाई। बाद में इस सुधार में श्री गोपाल गणेश आगरकर एवं श्री विष्णुशास्त्री चिपलूणकर का नाम जुड़ा। इन सभी ने सामाजिक बुराई दूर करने के लिए अपने-अपने स्तर पर काम किया। सभी ने शिक्षा के माध्यम से अंधविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया। श्री विष्णुशास्त्री चिपलूणकर का तिलक के साथ मतभेद केवल इस बात पर हो गया क्योंकि तिलक 'सामाजिक सुधार बनाम राष्ट्रीय स्वतंत्रता' के मुद्दे पर अडिग थे।

आगे चलकर मराठा नवजागरण के केन्द्र में मराठी अस्मिता की जगह दलितों के अधिकारों का आंदोलन प्रमुखता में आया। 'अस्मिता की राजनीति' की खूबी

यही है कि यह एक स्थिर पहचान देती है जिसके सामने अन्य विमर्श बौने पड़ने लगते हैं। इस परिदृश्य में विचार किया जाना चाहिए कि अंबेडकर की विचारधारा भारतीय जीवन की दूसरी समस्याओं का कैसे सामना करती है और इसका जाति के विनाश से क्या संबंध है। अंबेडकर के व्यक्तित्व और सोच का निर्माण एक जटिल समय में हुआ था। वे दलित आंदोलन और जाति उत्पीड़न के खिलाफ लड़ाई के एक प्रभावशाली प्रतीक हैं। अंबेडकर और गांधी दोनों देश-प्रेमी थे, पर अंबेडकर का लक्ष्य गांधी के लक्ष्य से बिल्कुल अलग था। वे देश की राजनीतिक आजादी के पहले अस्पृश्यों के राजनीतिक अधिकार और सत्ता में अपनी हिस्सेदारी जल्दी तय कर लेना चाहते थे।

अंबेडकर की सीमा है कि वे सवर्ण समाज में फैली गरीबी वंचना और भेदभाव को नजर-अंदाज करते रहे। जिस समय समाज को एक करने की सबसे अधिक आवश्यकता थी उस समय उन्होंने सामाजिक विभाजन का अपना विमर्श प्रस्तुत किया। इसमें संदेह नहीं है कि हम महाराष्ट्र के नवजागरण की संकल्पना दादाभाई नैरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे की सुधारवादी परंपरा, फूले के दलित उभार और तिलक की राष्ट्रीय स्वातंत्र्य चेतना को जोड़कर ही कर सकते हैं।

21वीं सदी में हिंदू समाज द्वारा अपनी विविधता की लगातार रक्षा करते रहने के बावजूद एक बार फिर धार्मिक रूढ़ियों, अंधविश्वासों और भेदभावों की तरफ बड़े पैमाने पर झुकना एक बड़ी घटना है। इन बुराईयों ने राजनीति, बाजार और मीडिया में अपने आप को मजबूत किया है। ऐसे में यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि प्रखर राष्ट्रभक्ति के दौर में 'राष्ट्र' कितना मजबूत है।

ग्रीष्म ऋतु में पथ्य और अपथ्य भोजन



हीरा बल्लभ भट्ट, सलाहकार
भारत के नियंत्रक एवं
महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली

गर्मी के मौसम की शुरुआत हो गई है और ऐसे में आपको अपने खान-पान पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होती है। गर्मियों में खाई जाने वाली कुछ चीजें शरीर के अंदर गर्मी को बढ़ा देती हैं जो कब्ज, बदहजमी, पेट दर्द और नींद खराबी का कारण बनती है। ऐसे में आपको उल्टी, चक्कर आना भी आम बात हो जाती है इसलिए गर्मियों में आपको ऐसी चीजों का सेवन करना चाहिए जो शरीर को अंदर से ठंडक दें, तापमान के बढ़ने से शरीर की ऊर्जा भी कम हो जाती है इसलिए आपको ऐसे समय में अपनी सेहत का ख्याल रखना जरूरी हो जाता है, सेहत का ध्यान रखने के लिए सबसे पहले आपको अपने खाने का ध्यान रखना जरूरी है।

फल-सब्जियाँ

मौसमी फल और सब्जियों का सेवन करें, गर्मी में मौसमी फलों और सब्जियों का सेवन करने से शरीर चुस्त और तरोताजा रहता है, इसलिए तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, फालसा, अनानास, मौसमी व लीची खाना फायदेमंद होता है, इससे शरीर में पानी की कमी नहीं होगी,

इसके अलावा लौकी, तोरई, भिंडी, टिण्डे जैसी हरी सब्जियों को खाना चाहिए इससे गर्मियों में स्वस्थ रहने के लिए जरूरी पोषक तत्वों की भी पूर्ति हो जाती है।

सलाद

गर्मियों में हल्का भोजन ही करना चाहिए जिसमें सलाद को जरूर शामिल करना चाहिए, कुछ लोग



गर्मियों में भोजन की जगह सलाद खाना ही अधिक पसंद करते हैं। सलाद में हम खीरे, ककड़ी, टमाटर को शामिल कर सकते हैं।

विटामिन-बी

गर्मियों में विटामिन-बी से भरपूर आहार लेना चाहिए, जिससे शरीर चुस्त और दुरुस्त रहता है साथ ही मांसपेशियों के दर्द और थकान में आराम मिलता है।

स्प्राउट

गर्मी के मौसम में जितना ज्यादा फाइबर खाएंगे उतना ही आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। खाने में सलाद या स्प्राउट्स जरूर खाएं। इससे मांसपेशियां मजबूत होती हैं और पेट की समस्या भी नहीं होती है।

पेय पदार्थ

गर्मी के दुष्प्रभाव से बचने के लिए नारियल पानी पीना काफी फायदेमंद होता है। साथ ही शरीर में पानी की मात्रा को बनाए रखने के लिए नींबू पानी, गन्ने के रस का सेवन कर सकते हैं। शरीर में पानी की सही मात्रा बनी रहने से पर्याप्त मिनरल्स और विटामिन मिलते हैं।

गर्मियों में क्या न खाएं

गर्मियों में अधिक मसालेदार भोजन का सेवन शरीर में गर्मी पैदा करता है, जिससे आप कई बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। इसलिए गर्मी के मौसम में मिर्च, अदरक, काली मिर्च, दालचीनी और जीरा जैसे मसालों का सेवन या तो कम करें या फिर न करें।

इसके अलावा चाय या कॉफी पीने के शौकीन लोग तो इससे किसी मौसम में परहेज नहीं करते हैं। केफीन से शरीर में डिहाइड्रेशन बढ़ता है। गर्मियों में अगर आप स्वस्थ रहना चाहते हैं तो आज से ही इनसे दूरी बना लें।

बहुत से लोग गर्मी के मौसम में रेड मीट खाना पसंद करते हैं लेकिन यह आपकी सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है, इसका सेवन शरीर में गर्मी बढ़ा देता है।

सर्दी हो या गर्मी, जंक फूड का सेवन तो हर मौसम में शरीर के लिए हानिकारक होता है। मगर गर्मियों में इसका सेवन कब्ज और पेट खराब जैसी समस्याओं को ज्यादा पैदा करता है।

वैसे तो ड्राई फ्रूट्स का सेवन स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है लेकिन गर्मी में इसे जरूरत के अनुसार ही खाना चाहिए। ड्राई फ्रूट्स की तासीर गर्म होती है, इसलिए गर्मियों में इसका सेवन शरीर में गर्मी पैदा करता है।

गर्मियों में जितना हो सके नॉर्मल पानी पीने की कोशिश करें। फ्रिज के पानी की जगह घड़े, मटके या फिर सुराही का पानी पिएं। गर्मी में लू से बचने के लिए नॉर्मल पानी पीना चाहिए। ठंडा पानी पीने से वजन बढ़ने का भी डर रहता है।



भूत



संजय कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक— I)
मध्य प्रदेश, भोपाल

घोष बाबू से मेरी कई बातों पर नहीं बनती थी। वे एक बार चालू हो जाते थे तो कभी नहीं रुकते थे। उन्हें भूत प्रेतों पर जबर्दस्त विश्वास था और मैं इन्हें बकवास के किस्से मानता था। वे कभी-कभी जोश में आकर कह बैठते “देख लो संजय, अभी तो तुम भूत प्रेतों पर विश्वास नहीं करते, पर जिस दिन तुम्हारा पाला इनसे पड़ा तो देखूंगा, सारी हेकड़ी निकल जाएगी।” उनकी बातों को मैं हँसकर टाल देता था। हम सब भारतीय रेल में पश्चिम बंगाल में कार्यरत थे। घोष बाबू गुड्स गार्ड थे। मेरी नियुक्ति बतौर सहायक स्टेशन मास्टर कृष्णनगर में हुई थी। यह वाक्या 1971 का है। कृष्णनगर और उसके आस-पास के इलाके अभी भी जंगल का एहसास कराते थे। दूर-दूर तक

यहां सन्नाटा पसरा रहता था। शाम हो जाने के बाद बिना किसी रोशनी के सहारे यहां देख पाना भी मुश्किल हो जाता था। आबादी यहां बेहद कम थी। वहां एक बड़े से कमरे को जो कभी स्थानीय जमींदार का गोदाम हुआ करता था, मरम्मत करके स्टेशन मास्टर के कमरे का रूप दे दिया गया था। यहां शाम को हमारी महफिल खूब जमती थी। दूर-दूर से आने वाले गार्ड, ड्राइवर और टिकट कलेक्टर जब वहां इकट्ठे होते तो शाम को एक अलग रौनक आ जाती थी। इन सारी महफिलों का श्रेय जाता है अनिल दा को, जो मेरे वरिष्ठ और कृष्णनगर के मुख्य स्टेशन मास्टर थे। उन्हें ऐसी जमघटें बेहद पसंद थीं। ऐसे ही एक शाम एक महफिल में मेरा परिचय घोष बाबू से हुआ था। घोष बाबू मध्यम कद

के मस्तमौला व्यक्ति थे, हमेशा कुछ न कुछ कहानियां सुनाया करते थे। सबसे मजेदार होते थे उनके भूत, प्रेत, चुड़ैलों को लेकर कहानियां। कैसे कोई भूत रात को उनके पीछे पड़ा था। उनकी चाची से एक जिन्न प्रेम करता था, और जब चाची ने उस जिन्न से विवाह करने से मना कर दिया तो एक थप्पड़ में ही उस जिन्न ने चाची को यमपुरी भेज दिया था। रेल के सारे कर्मचारी बहुत शौक से इन किस्सों को सुनते थे, पर मैं इन सारे किस्सों को सिर्फ बकवास मानता था जिससे लोगों को बेवकूफ बनाया जा सके। एक बार ऐसे ही एक शाम को घोष बाबू अपना किस्सा सुनाने में व्यस्त थे। उस दिन मेरा सर दर्द से फटा जा रहा था। मुझसे जब नहीं सहा गया तो मैं अनायास बोल उठा “किसे

बेवकूफ बना रहे हैं घोष बाबू। यह भूत, प्रेत, चुड़ैल कुछ नहीं होते, यह मनगढ़ंत किस्से हैं जिससे सदियों से लोगों को बेवकूफ बनाया जा रहा है।” हालांकि मैंने यह बात घोष बाबू को लक्ष्य करके नहीं कही थी। मेरा इशारा उन सारे लोगों की तरफ था जो अपना कार्य छोड़कर बेकार की बातों में लगे रहते हैं, पर घोष बाबू को यह निजी अपमान महसूस हुआ। उनके समर्थकों को भी यह बात बुरी लगी। वे बोल उठे “तुम जैसे आजकल के तथाकथित विद्वान सिर्फ भारतीय संस्कृति का उपहास करते हैं। पर तुम्हें क्या मालूम भारतीय संस्कृति के बारे में जिसमें साँप से लेकर भूत-प्रेत सबको स्थान दिया गया है।” इस पर मैं भड़क गया। “घोष बाबू, यह सब इंसान की इजाद की हुई कहानियाँ हैं, यह जाहिलियत की निशानी है। भूत प्रेत कुछ नहीं होते।” इस बात पर घोष बाबू का चेहरा तमतमा गया। बोल पड़े “भूत प्रेत कुछ नहीं होते। ठीक है बेटा याद रखो, एक दिन तुम्हारा सामना जब किसी प्रेत से हुआ तब पूछूंगा कि साहब कितने पानी में हैं।”

इस घटना को घटे करीब 8 महीने हो गए, बात आई-गई सी हो गई। घोष बाबू और मेरे बीच जो

मनमुटाव की दीवार खड़ी हुई थी वह गिर गई थी। यद्यपि मैं घोष बाबू के विचारों से सहमत नहीं था और वे मुझे नौसिखिया ही समझते थे, फिर भी वे मेरे अंतरंग मित्रों में से थे। समय के साथ मेरी साख आसपास के इलाकों में फैलती जा रही थी। समय पर गाड़ियों को भेजना, यात्रियों के रुकने के लिए बेहतर इंतजाम करवाना मेरे द्वारा आरंभ किए गए कुछ ऐसे कार्य थे जिसने मुझे कृष्णनगर में काफी प्रसिद्धि दिलाई थी। मैं अब कृष्णनगर का मुख्य स्टेशन मास्टर था। अनिल दा को पदोन्नत करके नईहट्टी भेजा जा चुका था। गार्ड और ड्राइवरों के लिए सरकार ने विशेष रूप से रात को रुकने के लिए 2 कि.मी. की दूरी पर एक सराय का निर्माण करवाया था, जहां सारी सहूलियतों का इंतजाम था। अब स्टेशन पर ज्यादातर लोग नहीं रुकते थे। बस कुछ कूली, बॉक्स पार्टर और चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी ही स्टेशन मास्टर के कमरे में रुकते थे। यहां यह बता दूं कि स्टेशन मास्टर का कमरा काफी विशाल था।

ऐसे ही शायद दिसंबर की रात थी। तारीख मुझे याद नहीं। काफी ठंड पड़ी थी उस साल। उस रात को

शायद 10 बजे होंगे। मैं बाहर झबड़ा के साथ बैठा आग ताप रहा था। झबड़ा मेरा कुत्ता था जिसे मैं दार्जिलिंग से खरीद कर लाया था। सर्दी को बढ़ाते हुए काफी तेज हवा चल रही थी। मेरे कमरे में लगे बेंचों पर भी करीब 3 बॉक्स पार्टर सोए हुए थे। अगली गाड़ी सुबह 6 बजे आने वाली थी। मैं भी अपनी फाइलों में उलझा हुआ था कि अचानक से किसी के आने की आहट से मेरा ध्यान प्रवेश द्वार की तरफ चला गया। मैंने देखा तो सामने 18-19 साल की एक बेहद खूबसूरत लड़की, लाल रंग की साड़ी पहने खड़ी थी। हाथ में उसके एक छोटा सा सूटकेस था। वह कुछ सहमी-सहमी लग रही थी। माथे पर उसके तनाव के चिह्न थे। मेरी नजरों से नजर मिलते ही वह बिना रुके मेरे टेबल के पास आकर रुक गई। “दमदम जाने के लिए अगली ट्रेन कितने बजे है” उसने बहुत धीमी आवाज में पूछा। मैंने कहा “अगली ट्रेन तो सुबह 6 बजे है, अभी रुकने का कोई फायदा नहीं, क्योंकि अभी तो सिर्फ 10 बजे हैं।” इस पर वह बोली “मेरा कल सुबह से पहले दमदम पहुंचना बहुत जरूरी है। मेरी सासू मां की तबीयत बहुत

ज्यादा खराब है। शायद देर से पहुंचने पर उनके दर्शन ना हों। मेरे पति पहले से ही वहां मौजूद हैं।” ऐसा कहते-कहते उसकी आंखें छलक गईं। वह मेरी टेबल के एकदम पास खड़ी थी। मैं उसके यौवन को देखता रह गया। कितनी सुंदरता है इसके अंदर। रोने पर भी इसकी सुंदरता में तनिक भी कमी नहीं आ रही, और उम्र भी क्या होगी 19 साल? मैंने अपने विचारों में जैसे जीवनसाथी की कल्पना की थी उसकी साक्षात प्रतिमूर्ति थी वह। काश! यह शादीशुदा नहीं होती। लेकिन उसका रोना रुक ही नहीं रहा था। अंत में मैंने उसे ढाँढस बँधाया “देखिए घबराने की जरूरत नहीं है। आप अपने घर लौट जाइए, कल सुबह 6 बजे की गाड़ी पकड़कर चले जाइएगा।” इस पर वह रोते हुए बोली “मेरा घर यहां से बहुत दूर है, करीब 10 कि. मी.। वहाँ वापस जाकर लौटना संभव नहीं, मुझे आज यहीं रुकना होगा।” मुझे उसकी हालत पर दया आ गई। मैंने उसे कहा कि ठीक है, वह सुबह होने तक वहीं रुक कर इंतजार कर सकती है। मैंने उसे इशारे से सामने बेंच पर बैठने का इशारा किया। जिस बेंच पर वह बैठी थी उसके ठीक सामने 3-4

और बेंच लगे थे जिस पर कुछ बॉक्स पार्टर सो रहे थे। मुझे रात को देर से खाने की आदत है। रात के करीब 11 बजे होंगे, मैंने अपना टिफिन बक्सा खोला जिसमें माँ ने विशेष तौर पर रूई मछली और चावल भिजवाए थे। मैं जब खाने जा ही रहा था तो मेरा ध्यान उस लड़की की तरफ गया। मैंने औपचारिकता निभाते हुए उसे खाने की पेशकश की पर उसने इंकार कर दिया। खाने से निबटने के बाद, मैं वापस से अपने फाइलों में डूब गया। मुझे केवल इतना याद है कि मैं रात के करीब 1 बजे तक काम करता रहा। फिर कब नींद ने मुझे आगोश में ले लिया कुछ पता ही नहीं चला। करीब आधी रात बीत चुकी थी, मैंने नींद में ऐसा महसूस किया कि कुछ चीज या कोई मेरे सांसों को रोक रहा है।

मुझे घुटन जैसी महसूस होने लगी। मेरी सांस फूलने लगी, मैं उठना चाह रहा था लेकिन जैसे कोई अज्ञात शक्ति मुझे शिथिल बनाए दे रही थी। अंत में पूरा जोर लगाकर मैंने अपनी आंखें खोलीं। आंखें खोलने पर जो दृश्य मैंने देखा उसको मैं ताउम्र नहीं भूल पाऊँगा। मुझे पता चला कि क्यों मेरी आंख नहीं खुल पा रही थी। मैंने देखा कि वह लड़की तो मुझे बहुत दूर उस बेंच पर बैठी हुई है, लेकिन बेंच पर बैठे-बैठे ही उसकी गर्दन करीब 15 फुट लंबी होकर हवा में तैर रही है और लगातार हँसे जा रही है। मुझे मेरे बदन में एक हल्की सिहरन महसूस हुई। मेरे हाथ पाँव काँपने लगे, मन में देवी देवताओं का नाम जपने लगा। जो लड़की कुछ ही समय पहले सौम्यता की मूर्ति थी अचानक से



किसी पिशाच की आकृति में आ चुकी थी। उसकी आंखों में काली पुतलियों की जगह सिर्फ सफेदी थी और मुख विकराल हो चुका था। वह आकृति लगातार हवा में मेरे कुर्सी के अलग बगल चक्कर काटती, अपने भयंकर आंखों से मेरी तरफ धूरती, फिर मुँह ऊपर उठाकर हँसने लगती। अंत में मुझसे यह पिशाच लीला बर्दाश्त नहीं हुई, एक लंबी चीख मारकर मैं बेहोश हो गया।

पता नहीं मैं कितने घंटे बेहोश रहा। आँख खुली तो मैंने अपने आप को अस्पताल के बिस्तर पर पाया। मेरे अगल बगल भारी भीड़

जमा थी। सारे चिर-परिचित चेहरे थे। सारे चेहरों पर नजर दौड़ाते-दौड़ाते मेरी नजर घोष बाबू पर टिक गई जो मुझे देख कर मंद-मंद मुस्कराए जा रहे थे। धीरे-धीरे सारे लोग एक-एक करके मुझे देखकर चले गए। रह गए केवल घोष बाबू और अशोक। अशोक हमारा बॉक्स पार्टर था, जब मैं बेहोश हुआ था तो वही मुझे अस्पताल लेकर आया था। घोष बाबू ने हँसते हुए मुझसे कहा “क्यों संजय, आप अभी भी भूत प्रेतों पर विश्वास नहीं करते। क्या हुआ था उस रात।” मैंने विस्तार से उस रात का सारा वाक्या घोष बाबू को सुना

दिया, इस पर वे हँसते हुए बोले “वह सुकन्या थी, जिसे आपने देखा उस रात। करीब 80 साल हो गए गए उसे मरे हुए। उसकी कहानी तो जैसे यहां की दंतकथा है। इन 80 सालों में न जाने कितने लोगों ने उसे देखा है। उसने अपने परिवार के विरुद्ध जाकर अपने ही कॉलेज के सहपाठी सोमदत्त को अपना जीवनसाथी चुना था। सुकन्या के पिता पुरुलिया के बहुत बड़े जमींदार थे। सोमदत्त की वास्तविकता को सुकन्या नहीं समझ पाई। विवाह के पूर्व सोमदत्त और उसका परिवार सुकन्या की खूब आवभगत करते। विवाह के



बाद सोमदत्त और उसका परिवार का जैसे कायाकल्प हो गया। आए दिन मारपीट। सुकन्या को उसकी सास और ननद के ताने हर दिन सुनने पड़ते। उसकी कहानी का सबसे बड़ा खलनायक था सोमदत्त का जीजा। विवाह के 5 वर्ष पश्चात सुकन्या के पिता का देहांत हो गया। मृत्यु के पूर्व वह अपनी सारी जायदाद सुकन्या के नाम कर गए। सुकन्या उस जायदाद को कोलकाता के एक अनाथालय को दान करना चाहती थी, लेकिन सोमदत्त और उसका परिवार इसके विरुद्ध थे। कहते हैं कि सोमदत्त जायदाद की बात पर सुकन्या को पीटता भी था। जब यह पक्का हो गया कि सुकन्या नहीं मानने वाली, तो सोमदत्त ने उसे अपने रास्ते से हटाने के लिए षडयंत्र रचा। सोमदत्त ने एक रात अपने परिवारवालों और 4 दोस्तों के साथ मिलकर सुकन्या की गला घोटकर हत्या कर दी। अगल-बगल के लोगों से सोमदत्त ने कह दिया कि कल रात को तबियत ज्यादा खराब होने से उसकी पत्नी सुकन्या का देहांत हो गया। सुकन्या की लाश को बहुत जल्दबाजी में दफना दिया गया। जायदाद से मिले पैसों से सारे

लोग बहुत अमीर हो गए। कईयों ने तो कलकत्ता में कोठियां खरीद लीं। कहते हैं कि जिन-जिन लोगों ने सुकन्या की हत्या की थी उन सब की मृत्यु बहुत ही रहस्यमयी परिस्थितियों में हुई। सोमदत्त के 2 दोस्त जिन्होंने सुकन्या की हत्या में उसकी सहायता की थी, अपने कमरों में फाँसी से लटके पाए गए। बाकी के दोनों दोस्तों के शव अपने बिस्तरों में अकड़े पाए गए। उनका सारा शरीर अकड़ चुका था। भय के मारे उनकी आँखें बाहर की तरफ निकली हुई थीं। पुलिस पोस्टमार्टम रिपोर्ट में भी उनकी मौत के रहस्य पता नहीं लगा पाई। सोमदत्त का जीजा अपने घर से 1 कि.मी. दूर एक तालाब में मृत पाया गया। मृत्यु के समय भय से उसकी आंखें भी खुली हुई थीं। सोमदत्त की माँ और बहन की मृत्यु घर में आग लगने से हुई। यह कहकर घोष बाबू शांत हो गए। मेरी दिलचस्पी बढ़ती जा रही थी। मैंने पूछा, “सोमदत्त, घोष बाबू, सोमदत्त का क्या हुआ”? इस पर घोष बाबू हंसते हुए बोले, “जैसा कि हर एक बुरे व्यक्ति के साथ होता है, कुछ ऐसा ही सोमदत्त के साथ हुआ। सोमदत्त पागल हो गया। वह दिन रात जागता रहता। लोगों से

कहता कि उसे उसकी मृत पत्नी सुकन्या दिखाई देती है। लोगों से चीख चीखकर कहता कि उसे घर जाने से डर लगता है, क्योंकि सुकन्या की आत्मा हर समय उस घर में रहती है। एक दिन इसी पागलपन की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई। अपने अपराधियों से प्रतिशोध लेने के बाद भी सुकन्या की आत्मा को शांति नहीं मिली। उसकी आत्मा उन सारी जगहों के चक्कर काटती है जहां वे और सोमदत्त कभी मिले थे। सोमदत्त कृष्णनगर में ही रेलवे क्लर्क था। कल तुम्हारी मुलाकात सुकन्या से ही हुई थी”।

मैं घोष बाबू की कहानी सुनकर दंग था। तो क्या सचमुच भूत प्रेत होते हैं। क्या मैं सचमुच 100 साल पहले मर चुकी किसी लड़की से मिला था। मेरा सर चक्कर खाने लगा। घोष बाबू अपने आप को विजयी मानकर मुझे देखकर हंसे जा रहे थे। और मैं पराजित सा हुआ, चादर से अपने मुंह को ढककर सो गया। इतनी बड़ी वैचारिक शिकस्त मुझे कभी नहीं मिली थी। मेरा विज्ञान, मेरे तर्क वर्षों की मान्यताओं के आगे हार चुके थे। घोष बाबू की हंसी अब भी मेरे कानों में गूँज रही थी।

दुआ

संदीप भसीन
सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

आओ मिल यह दुआ मांगे,
ऊंचे पेड़ों से आती हुई खुशबू भरी हवा की इक फिज़ा मांगें॥
सुबह का सुनहरी सूरज देखें सभी,
और खो जायें सब ऐसा इक सूकून भरा लम्हा मांगें॥
शामों में सूकून हो न हो कहीं धुआं, ऐसा इक आसमां मांगें,
ना शोर हो बमों का, ना उड़ते हुए रॉकेट, मिसाइलें कहीं,
मनों में संगीत हो, प्यार हो दुआएं हों,
हर एक की कद्र करता इक जहाँ मांगें॥
मन है तो क्यों ना प्यार हो?
पाने से ज्यादा देने की इक शुभ भावना मांगें।
सुबह के सूरज से जीवन शक्ति,
चाँद से शीतलता, मधुरता, फूलों से खुशबू
बहते झरनों के संगीत में मदमस्त होकर,
धरती के हर एक प्राणी को, प्रेम, करुणा,
और सुख शांति की दुआ बांटें॥

वह कौन है?

राजकुमार
वरिष्ठ लेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

देखा नहीं था जिसने मुझको, ना बात हुई कुछ बोल कर।
जो संग मेरे आ गई है, अपना सब कुछ छोड़ कर।।

वह कौन है, वह कौन है?

हर रिश्ता नाता जिसने समझा, दो घरों की शान है।
लाडली थी जो पिता की, अब मेरी पहचान है।।

वह कौन है, वह कौन है?

कभी-कभी चेहरे पर गुस्सा, मन में जिसके प्यार है।
सात फेरों से जिसने मुझको, माना अपना संसार है।।

वह कौन है, वह कौन है?

ख्वाब देखा था जिसने कभी, आसमान छूने का।
मेरे लिए जमीन पर है, अपनी उड़ान छोड़ कर।।

वह कौन है, वह कौन है?

मेरे सपनों को अपना बना लिया, जिसने अपने सपने तोड़कर।
जो चलती है साथ मेरे, कदमों से कदमों को जोड़कर।।

वह कौन है, वह कौन है?

साथ छोड़ा जो उसने मेरा, टूट कर बिखर जाऊँगा मैं।
अब तक समेटे जिसने रखा, जो मेरा विश्वास है।।

वह कौन है, वह कौन है?

हर्ष-युग को पाला जिसने, राज को संभाला जिसने।
सुख-दुख में जो साथ निभाती, मेरे घर को स्वर्ग बनाती।।

वह कौन है, वह कौन है?

कुछ पल ठहर तो सही



पंकज अरोड़ा
लिपिक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
उड़ते पंछी से कहा;
कुछ पल ठहर तो सही
कितना सफर तय किया;
जान तो सही
क्या भूला; क्या छूटा;
जान तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
बहती नदी से कहा;
कुछ पल ठहर तो सही
बर्फ, पहाड़, जंगल छूटे
जान तो सही
गांव खलिहान छूटा
जान तो सही
शहर घाट छूटा
जान तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
भागती जिंदगी से पूछा;
कुछ पल ठहर तो सही
रिश्ते छूटे, रिश्ते टूटे;
जान तो सही
माता-पिता का लाड छूटा
भाई-बहन का प्यार छूटा
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
शहर छूटा, दोस्त रुठे
सखी सलोनी का बंधन टूटा
कुछ पल ठहर तो सही

कुछ पल ठहर तो सही
रिमझिम बरसात की
मस्ती भूली
बहती नाव भी कहीं
गुम हो ली
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
गुरु की डांट छूटी,
डंडे की मार छूटी;
किताबों का बस्ता छूटा
मस्ती का मैदान छूटा
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
आम की बोर,
कोयल की कूक;
खेत के ईख; खाना छूटा
मस्ती का आलम रुठा
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
जीवन की दौड़ ने
नए शहर में पटका
काम धंधे ने जीवन को
दौड़ना सिखलाया
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
नई-नवेली दुल्हन का थामा हाथ
फिर हो लिया बच्चों का कारवां साथ
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
अचानक जिंदगी को
यूँ लगा झटका

फिर बदन क्यूँ अकड़ा
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
बच्चे से बुढ़ापे का सफर
क्या छूटा, क्या पकड़ा?
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
अपना-अपना करता जीवन
अब तो कर लो कुछ सब्र
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
धरती समाज को
कुछ देकर जाएं
कहीं समय की डोर
हाथ से छूट न जाए
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही
आज लें कुछ प्रण, स्वयं से
करें वादा, बिना भूल
उस समाज को
जिसने दिया सब कुछ
दो उसे अब तुम भी कुछ
कुछ पल ठहर तो सही
कुछ पल ठहर तो सही

गजल



धर्मवीर भारती

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
दक्षिण-मध्य रेलवे, सिंकदराबाद

कोई दिल से नहीं मिलता, किसी से दिल नहीं मिलता,
आजकल कोई प्यार के, काबिल नहीं मिलता।
डूब जाती है जिंदगी, उलझनों के भँवर में,
गर आ जाए तूफ़ाँ तो, साहिल नहीं मिलता।
कहने को तो कितनी ही हैं, बातें हौसला अफ़जाई के,
गर मुकद्दर न हो तो, मंजिल नहीं मिलती।
जिसे देखा है सरेआम कत्ल, करते हुए सभी ने,
क्या अचंभा है कि वो, कातिल नहीं मिलता।
जमाने गुजर गए उसकी, कोई चिट्ठी मिले हुए,
अब तो बताने वाला उसका, कोई हाल-ए-दिल नहीं मिलता।
क्यूं बताएं गैरों को, हाल अपने जख्म का,
अपनों के लिए जख्म का, कोई मरहम नहीं मिलता
हर चेहरा है मायूस, एक मनहूसियत सी छाई है,
खिलखिला कर हंस सके, वो जिंदादिल नहीं मिलता।
डूब जाएँ सभी यारों के, साथ अपनी मस्ती में,
ऐसा कोई आज महफिल नहीं मिलता।

महारानी अहिल्या देवी



बनवारी लाल सोनी
73/318-ए, टैगोर लेन
मानसरोवर, जयपुर

उज्ज्वल मन, आत्मा उन्नत हो तो चमक और बढ़ जाती है।
परिलक्षित होती है अवश्य, सबके मन को भा जाती है।
अंतर का दर्पण मुख होता, सब ऐसे ही बतलाते हैं।
जिनमें पराग मधु गंध भरी, वे सुमन सदा मुस्काते हैं।
जो आलोकित गुण गरिमा से, वह नारी अहिल्या है भाई।
इन्दौर महारानी बनकर वह, तनिक नहीं है इतराई।
सादगी सरलता सेवा से, जिसने निज जीवन धन्य किया।
अपने जीवन की चिंता क्या? कितनों का जीवन धन्य किया।
एक 'पाथडरी' था नाम—गांव जो महाराष्ट्र में पड़ता है।
कोई न जान पाया अब तक, वह जगत पिता क्या करता है?
दो सौ से अधिक वर्ष बीते, तब जन्म अहिल्या ने पाया।
आंकलन न कोई कर पाया, जीवन भर ही दुख का साया।
तब पिता—नाम मनकोजी था सिंधिया अंत में लिखते थे।
वे मात्र व्यक्ति सामान्य नहीं, वे कुछ गरीब भी दिखते थे।
थोड़ी सी भूमि, बैल जोड़ी इक हल उनकी संपत्ति रही।
पीछा कब छोड़ा था उनका? निर्धनता बनी विपत्ति रही।
सूखे में नाव चले उनकी लेकिन मेहनत में कहाँ कमी?
संतोष—पूर्वक रहते वे, जो कुछ उपजाते मात जमीं।
भगवान—पूजते प्रतिदिन ही, दिनचर्या उनकी बहुत भली।
संसार—विकार छू न पाए, वे त्याग चुके थे मोह—गली।
जीवन—धारा पवित्र घुला वह बही जा रही मस्त—मस्त।
वे कहाँ प्रभावित लोभ—काम, वैसे भी कभी न अस्त—व्यस्त।

शारीरिक और मानसिक तप, दोनों ही उनमें भरे कूट।
संतान—रूप बस ये पुत्री, पुत्री में भी सदगुण अटूट।
यद्यपि वो न तो सुंदरी थी ना आकर्षक ना कलावती।
वह सीधी सरल और भोली, हाँ पूर्णरूप से सत्यवती।
बचपन से सरल स्वभाव रहा, संतोष वृत्ति, प्यारी—प्यारी।
यद्यपि गरीब पर अंतर से, वह रही चन्द्र की उजियारी।
मन में संतोष समाहित कर, प्रभु नाम जपा था पल—पल में।
भूले से भटका कभी न मन, दुनियाँदारी में छल—बल में,
भोलापन शांति आत्मा की, मन की पवित्रता क्या कहने?
पूजा में ही रमता था मन, धीरज—साहस उसके गहने।
था नियम नित्य—प्रति का उसका, शिव—मंदिर जाती पूजन को।
कठिनाई विरत न कर पाई, कब लगा ग्रहण उसके मन को?
मूसलाधार वर्षा हो या, वह शीतकाल—हिमपात रहा।
गर्मी का भी मौसम आया, पर एक रूप में सभी सहा।
वह रही अकंपित प्रतिमा सी, निर्वाह—नियम से मन प्रसन्न।
जप तप व्रत करती ही रहती, वैसे भी खाती सूक्ष्म अन्न।
अब छोटी पूजा विकसित हो, हो गई पूर्ण अति की विशाल।
वह देवी सी प्रतीत होती, वैसे भी उसका उच्च भाल।
आदर करते थे लोक सकल, वह भक्ति भाव में रही लीन।
जैसे गहरे जल के भीतर, गोता खाती हैं सकल मीन।
उसकी हर में अटूट निष्ठा, जल—फूल चढ़ाती थी प्रतिदिन।
वह सती अनगिनत जन्मों की, हर—वास रहा था उसके मन।

वर की अभिलाषा नहीं उसे, उसके मन लोभ नहीं लालच ।
छल—कपट उसे कब भाया था? उसके मन में बस सच ही सच ।
वह प्रतिमा मानो सरलता की, संतोष बसा हर बूंद—रक्त ।
जाने क्या से क्या कर देता? बदला करता है सदा वक्त ।
निष्काम भावना प्रबल बड़ी, हरि—हर लीला सबसे न्यारी ।
ये कथा सुहानी लगे हमें, कुछ और सुनाओ 'बनवारी'?
निज कर भगवान न देते हैं, निज कर से कभी न लेते हैं ।
बीच में निमित्त बना करता, उसके ही हाथों देते हैं ।
भगवान सदा रहते तटस्थ, माया सब काम कराती है ।
कोई दूल्हा बन जाता हैं, कोई तब बने बराती है ।
इंदौर राज्य के महाराजा, पूना की यात्रा में संलग्न ।
बीच में गांव था 'पाथडरी', जब लखा शिवालय हुए मग्न ।
वे ठहर गए थे शिव मंदिर, देखो कैसी प्रभु की माया?
पल भर में धूप करे व्याकुल अगले पल हो जाती छाया ।
नित पूजन करे अहिल्या, तहँ हर के दर्शन को आती थी ।
सीधी आती—सीधी जाती, सबके मन बड़ी सुहाती थी ।
फिर हुआ प्रभात, जगे पक्षी, कलरव की गूँज मचाई है ।
नूतन उत्साह भरा प्राची, ऊषा तब पड़ी दिखाई है ।
केसरिया आंचल विस्तृत हो, भर दिया रंग अवनी—नभ में ।
तालाबों में भी कमल खिले, इक जागृति सी आई सब में ।
कोमल सी मधुर लताओं में भी, खिलने लगे सुमन प्यारे ।
चल रहा पवित्र समीर भ्रात, अब अंधियारों में उजियारे ।
सब लोग जगे हर्षित मन से, नैमित्तिक कर्म करे प्राणी ।
हर—हर गंगे, हर—हर भोले, रट लगा रही कुछ की वाणी ।
मंदिर के चारों ओर भीड़, हाथी घोड़े रथ खड़े हुए ।
बहुमूल्य झूल हाथी—घोड़े, रथ—पदों मोती जड़ें हुए ।
तब गई अहिल्या भी मंदिर, सतपुरुषों के विचार जैसी ।
उपराम भाव चलकर आई, देखी न कहीं उसकी जैसी ।
उसने न निहारा किसी ओर, फिर किया यथावत हर पूजन ।
देखो क्या से क्या होता है? दे ध्यान सुनो सब ही सज्जन ।
पूजा की, जैसी नित्य करे, वह लौट चली थी अपने घर ।

भीड़ का प्रभाव न पड़ा तनिक, दुचित्ती हुई न वह पल भर ।
उसके मन भय—संकोच कहाँ? समझो वह पूरी निर्विकार ।
वह घाट न किसी कर्मयोगी, वह नित प्रति आती हर—द्वार ।
सब ओर बसा सूनापन था, सब ओर बसा था सन्नाटा ।
एकाग्र भाव से आई थी, हरि ने कुछ ज्ञान अधिक बाँटा ।
सबने देखा उसको आते, सबने ही जाते भी देखा ।
वह तो आत्मस्थ—अचंचल थी, उसको वह मंजर अनदेखा ।
मानसिक पूर्णता थी उसमें, उस पर ये दुनियाँ बलिहारी ।
उसके सद्गुण आभूषण थे, कुछ और कहो कवि 'बनवारी'?
महाराज 'मल्हार राव' लिखते, पुनि—पुनि करते मन में विचार ।
निर्लिप्त भाव इस कन्या में, हर के प्रति आदर और प्यार ।
इस प्रांगण हाथी झूम रहे, हिनहिना रहे घोड़े प्रति पल ।
सैनिक भी इधर—उधर भारी, कुछ रही फौज की भी हलचल ।
साधारण सी लड़की आयी, भय—विस्मय तनिक नहीं मन में ।
पूजा की, सीधी लौट गई, कंपन भी तनिक नहीं तन में ।
ये वैभवपूर्ण शिविर मेरा, बिखरा पग—पग राजत्व यहाँ ।
उसकी तटस्थता—तन्मयता, उसकी समता हो सके कहाँ?
बेचैन हो गए सोच—सोच, फिर—फिर मन में तूफान उठे ।
वह श्रद्धा बन कर बैठ गई, वे भूल न पाएँ कभी उसे ।
अब और विशाल हृदय उनका, गंभीर हुए वे महाबली ।
भूकम्प सरीखी स्थिति वह, जबसे देखी वह मधुर कली ।
वैभव मनुष्य के अंतस् में, इतना तो भूपति जान गए ।
बाह्याडंबर का मोल नहीं ये, बार—बार मन मान गए ।
हल लिया निकाल महाराजा ने, तब पिता—अहिल्या बुलवाए ।
तुम पिता सुलक्षण बेटी के, गुण अन्य भूप ने बतलाए ।
ये कन्या पुत्र—वधू बनकर, मेरे महलों में आनी है ।
शायद आपत्ति न हो तुमको, समझो अब शुरू कहानी है ।
राजा जी तो अति के गुण, उससे भी बढ़कर गुणवत्ता ।
कुछ बात और उनसे पूछीं, फिर पूछ रहे थे अता—पता ।
'नमकोजी' आपे में कब थे? क्या ऐसे क्षण आते जीवन?
कानों पर भी विश्वास कहाँ? अब धन्य—धन्य उसका जीवन ।

अब तारे दिखने लगे उन्हें वे छोटे से, सुख बहुत बड़ा।
 आलोक—पुंज था चमक रहा, अब उनसे बढ़कर कौन बढ़ा?
 विस्मय—विमूढ़ मनकोजी थे, सहसा कब उत्तर दे पाए?
 तब भूपति ने आश्वस्त किए, सिर हाथ फिराया समझाए।
 मनकोजी सिद्ध—समान हुए, हरि भजते—भजते घर आए।
 फिर गौरव से देखी कन्या, गोबर में हाथ सने पाए।
 धुलवाए हाथ पिताश्री ने, फिर गद्—गद् उनका कण्ठ हुआ।
 जो छोटा सा मकान उनका, बस वही आज वैकुण्ठ हुआ।
 हे सुता तुम्हारे हस्त कमल, गोबर को कभी न छू पाएं।
 अब द्वार तुम्हारे बंदीजन, नित प्रति ही विरुदावली गाएं।
 इंदौर राज सत्ता में अब, ये हाथ बनेंगे सहयोगी।
 पर कहाँ अहिल्या समझ सकी? वह बेचारी तो बस योगी।
 माता भी विस्मय से देखे, ये पिता तुम्हारे क्या बोले?
 हम पूरी बात न समझे हैं, क्यों बोल रहे हौले—हौले?
 मैं ठीक कह रहा हूँ देवी, मंदिर में आए हैं राजा।
 इंदौर राज्य के रक्षक वे, वे राजाओं में महाराजा
 तेरी पुत्री को वधू बना वे, महलों में ले जाएंगे।
 वे हाथ माँगते हैं उसका, अब भाग्य द्वार खुल जाएंगे।
 याचना कर रहे हैं मुझसे, देखो तो उनकी सज्जनता।
 अब शीघ्र पराई हो हमसे, देखो ये अपनी स्वर्णलता।
 सुनते ही कन्या भौंचक्की, कोठरी द्वार पर आई है।
 फिर भाग गई थी वह अंदर, तब हर से डोर लगाई है।
 कुछ बात विदाई की करते, तब बाहर से आवाज आई।
 मनकोजी कन्या को भेजो, अब बजने वाली शहनाई।
 सुनकर आवाज बाहर आए, तब द्वार पालकी खड़ी हुई।
 उसके चाँदी के डण्डे थे, हीरे मोती से जड़ी हुई।
 था खड़ा प्रबंधक भूपति का, साथ में सिपाही बहुतेरे।
 वे सबके सभी प्रतीक्षारत, देखो ईश्वर ने दिन फेरे।
 थे और वस्त्र कब कन्या पर, मोटे गाढ़े की धोती थी।
 उसको ही पहने थी पहले मन में प्रसन्न, पर, रोती थी।
 शिविका में उसे बिठाया था, सबकी आँखों से बहे नीर।

सिसकियाँ भर रही थी बाला, बिछुड़े, क्या मन में नहीं पीर?
 मनकोजी जीवनमुक्त हुए, उनको ऐसा आभास हुआ।
 महतारी बेचारी प्रसन्न उसका, मन बढ़ आकाश हुआ।
 महाराज होल्कर लौट चले, उनका भी मन प्रसन्न भारी।
 दूल्हा तब खण्डेराव बने, दुल्हिन मनकोजी की प्यारी।
 अब बनी अहिल्या युवरानी, इंदौर राज्य के भाग खुले।
 वह शील और अनुशासन प्रिय, समझो उन्नति के द्वार खुले।
 उस युवती में जितने भी गुण, क्या हम उनको गिन पाएंगे?
 सादगी सरलता बरकरार, ये रत्न कहाँ छिन पाएंगे?
 युवरानी पर, स्थैर्यवती व्यवहार—सरल—परित्याग नहीं।
 साधारण भोजन सहज वस्त्र, आभूषण से अनुराग नहीं।
 पति, सास, श्वसुर की सेवा में, वह कमी नहीं रख पाई थी।
 गुरुजन सेवा भी की उसने, पूरी कर दी भरपाई थी।
 वह बनी प्राण—प्यारी सबकी, शासन में भी नमी आई।
 अब स्नेह जन्य शीतलता थी, हठधर्मी कहीं नहीं पाई।
 सेवक, जो भी छोटे पद के, सबको करुणा का मिला दान।
 सब सजग और अनुशासित थे, सब रखें राज्य का अधिक ध्यान।
 पहले थी उसमें दया मात्र, अब दानशीलता भी आई।
 सात्विक गुण सकल सुशोभित थे, सुंदरता—शक्ति और आई।
 वह भूली कहाँ पूर्व जीवन? करुणा—ममता उसमें भारी।
 अक्षर—अक्षर लिखता जाए, जो लिख सकता है 'बनवारी'।
 जितने गरीब हैं दुनिया में, उसको सब लगेँ भ्रात जैसे।
 हैं बड़ी उमर के लोग सकल, वे लगते सभी तात जैसे।
 वृद्धा सबही माता जैसी, अति निर्मल बुद्धि रही उसकी।
 करती सहायता यथा साध्य, पीड़ा हरती इसकी—उसकी।
 था बरकरार पूजा का क्रम, बस जल—फल देव चढ़ाती थी।
 पहले भी उसका क्रम ये था, मन परमेश्वर—गुण गाती थी।
 धन—द्योतक वस्तु न की शामिल धन—संपत्ति का समुचित प्रयोग।
 व्यय करती वो परमार्थ—मार्ग भूखों को देती रही भोग।
 तब राजकोष से मिले वृत्ति, उसमें से भी कुछ बच जाता।
 परमार्थ—कार्य में लगे शेष, जो भी रानी के मन भाता।

जनता में बड़ी लोक प्रियता, श्रद्धा भी पाई जन-जन में।
 विद्या पढ़ने को समय कहाँ? यह बात खटकती थी मन में।
 पर जब अनुकूल समय आया, विद्या पाई महारानी ने।
 इक वृद्ध महाशय आते थे, उनसे सीखी कल्याणी ने।
 कुछ पति भी उसे पढाते थे, पर वे भी रहते कभी व्यस्त।
 वे नियमित कभी न रह पाते, वे राज-काज से अस्त-व्यस्त।
 गुरु के सम्मुख युवरानी बनकर, कहाँ अहिल्या आती थी।
 वह अपने को समझे छात्रा, शर्माती और लजाती थी।
 थी कूट-कूट शिष्टता भरी, तब जागृत होती सरस्वती।
 रोज का पाठ हो रोज याद, सचमुच में ही वह सत्यवती।
 शिक्षा-प्रकाश से चमक बढ़ी, गुण-गौरव भी चमके भाई।
 सेवा-दायित्व बढ़े थे कुछ, अब दूर हो कई कठिनाई।
 अब विद्यावती बन गई थी, पर रही सदा ही सौम्य-सरल।
 शालीन रही जीवन भर ही और, छू न सके उसको छल-बल।
 अब राज-काज की शिक्षा भी, राजाजी उसे प्रदान करे।
 पुत्र से अधिक उसको चाहा, वैसे अति ही सम्मान करें।
 समझो तो ये उपलब्धि बड़ी, शालीन अहिल्या बनी रही।
 उसकी कब उथली मनोभूमि? उस पर छाया भी घनी रही।
 था पारस्परिक प्रेम पति से, दोनों सुख-अनुभव करते थे।
 समझो निज जीवन प्याली में वे अमृत रस ही भरते थे।
 पति के प्रति आत्मसमर्पण भी, ईश्वर के प्रति श्रद्धा भारी।
 करती न विलंब काम में वह, वह नारी नहीं महारानी।
 छोटा हो चाहे बड़ा काम, तत्परता-लगन शीलता सम।
 अब राज-काज में दक्ष हुई, दीन को लखे तो आँखें नम।
 ये समय सदा बदला करता, संचालन करते असुरारी।
 पल में कुछ से कुछ होता है, तुम इतना समझो 'बनवारी'।
 उन दिनों मराठे वीर, भ्रात, सब चौथ वसूली करते थे।
 जो चौथ न दें वे दुख पाते-और बिना मौत ही मरते थे।
 जाटों ने चौथ न दी उनको तब, सेना सकल सजाई है।
 जाटों के शहर भरतपुर पर, दोनों ने करी चढ़ाई है।
 बेटा और बाप गए दोनों तब, राज अहिल्या पर छोड़ा।

दोनों सेनाएं लड़ी खूब, बाकी न बचा हाथी-घोड़ा।
 तब खंडेराव न बच पाए अतिशोक अहिल्याबाई को।
 बस दीनानाथ जानते हैं, कैसे झेला कठिनाई को?
 भावातिरेक में हो व्याकुल, रानी ने खूब विलाप किया।
 इतना निर्मम आघात लगा, जाने क्या ऐसा पाप किया?
 फिर समझाया अपने मन को, कोई न किसी के साथ मरे।
 ये दुनियाँ दुःख की नगरी है, बस कष्टों को रघुनाथ हरे।
 अपने दुख का चिंतन करते, दुर्दशा याद विधवाओं की।
 पति के मर जाने पर जग में, दयनीय दशा अबलाओं की।
 सब कुछ तो छीन लिया जाता, अधिकार कहाँ बच पाते हैं।
 बस पेट भरे जितना भोजन, लेकिन नर मौज उड़ाते हैं।
 पूरे कपड़े भी कहाँ मिलें? जूठा-छूटा दाना-पानी।
 उसके ऊपर भी तिरस्कार, उससे भी बढ़कर मनमानी।
 आयु के कठिन क्षण भी पूरे हो, तो जाते पर मौत भली।
 उसका मुख तक अपशकुन लगे, उत्सव से वंचित कमलकली।
 जो पात्र दया-करुणा की है, ठुकराई जाती द्वार-द्वार।
 जीत के काम करले कितने, अंत में प्राप्त बस एक-हार।
 केवल विह्वल हो रुदन करे, समझाए सास न ध्यान दिया।
 फिर निश्चय किया सती होना, घर के लोगों ने ज्ञान दिया।
 समझाए समझ न पाई वह, तब दुख का पारावार कहाँ?
 दृढ़ निश्चय मन में ठान लिया, तब सदा जीत, फिर हार कहाँ?
 युद्ध से लौट भूपति आए, तब पूरी बात सुनी कानों।
 तब पुत्र-शोक दो गुना हुआ, वे गिरे गगन से ये मानों।
 तू मेरी पुत्र-वधु न पुत्री, तू बेटे से भी ज्यादा है।
 तू मुझे छोड़कर जाएगी, तब मेरा जीवन आधा है।
 अब मैं भी वृद्ध हुआ बेटा, तेरे बिन मैं मर जाऊँगा।
 यदि मरा नहीं तो भी बेटा, मैं बहुत-बहुत पछताऊँगा।
 पति का वियोग अति असहनीय, तू पुत्री पतिव्रता नारी है।
 सम्माननीय है प्रेम सदा, क्या-क्या न कर सके नारी है?
 ये सती कर्म है आत्म घात, पति गौरव बढ़ा सदा प्यारी।
 तीनों लोकों में यश फैले, मैं जीवन भर ही आभारी।

ये परामर्श अति तर्कपूर्ण, सब बात अहिल्या मान गई।
ये आत्मघात है पाप बड़ा, इतना तो वह पहचान गई।
वह पुत्र-वधू पुत्र भी बनी, सेवा करती तब सास-ससुर।
कब ढील जरा भी डाली थी, सेवा में रहती थी तत्पर।
सेवा में श्रद्धा-भक्ति बढ़ी, गंभीर भावना का विकास।
यद्यपि पति तो परलोक बसे, पर आत्मा रहती आस-पास।
फिर एक और संकट आया, महाराजा स्वर्ग सिधार गए।
अवतारी नारी वह लेकिन, लगता मानों मंझधार बहे।
भगवान दिया साहस उसकी, तो बिगड़ी बात बना ली थी।
आश्रय दे रही अनाथों को, शासन की डोर संभाली थी।
पावन स्मृति सब काम किए, तब आश्रय दिया अपंगों को।
छात्रों में छात्रवृत्ति बांटी, धन बाँटा भूखे-नंगों को।
जिनको न जीविका का साधन, तब रोजगार की कहाँ कमी?
वर्षा भी होती उचित समय, अब सोना उपजे मात जमीं।
छोटे-मोटे धंधे चालू तब, बिना काम कोई न मिला।
कोई भी सुमन न ऐसा था, जो ऋतु वसंत में नहीं खिला।
हित साधन ससुर-आत्मा का, पति-आत्मा का भी हित साधा।
जब-जब होते शुभ काम जगत, तब पग-पग पर आती बाधा।
सुरलोक गए भूपति 'मल्हार', तो गद्दी चढ़ा धेवता था।
था मालीराव नाम उसका, वह अपनी नाव खेवता था।
वह बड़ा विलासी क्रूर और, उससे बढ़ कर अत्याचारी।
उसके आगे क्या हुआ तात? कुछ तो बतलाओ 'बनवारी'?
नौ महीने किया प्रजा-पीड़न, फिर पहुँच गया ईश्वर के घर।
अल्पायु मृत्यु होती आई - वह क्रूर कुकर्मि और निडर।
अब बागडोर रानी के कर, तब मंत्री उसके गंगाधर।
गंगाधर भी खोटा सोना, कहने का नर पर असली खर।
उसका चाचा रघुनाथ राव, सेना इंदौर चढ़ा लाया।
इंदौर शासिका अब रानी, हुए वह जोश देखकर घबरारा।
डर गया और बिन लड़े वह, अपने घर को चला गया।
गंगाधर राव कपूत बड़ा, वह उसके हाथों छला गया।

अब अस्त-व्यस्त सब राज हुआ, डाकू-चोरों के दल के दल।
ऐसे भी लोग बहुत सारे, जो करते रहते थे छल-बल।
कैसे हो दमन? बड़ी चिंता, रानी में बड़ी बुद्धिमत्ता।
अपने विवेक बल साहस से, फिर से हथिया ली थी सत्ता।
यशवंत राव साहसी युवक, उनको ब्याही अपनी कन्या।
हैं धन्य-धन्य यशवंत राव, पर रानी भी क्या कम धन्या?
मुक्ताबाई भी ज्ञान-खान वो, सुता अहिल्या माता की।
अब शांति-व्यवस्था हुई राज्य में, फिर कृपा हुई जगत्राता की।
प्रोत्साहन मिला सभी को तब, सेठों को, साहूकारों को,
व्यापारी और शिल्पियों को, सेना को, सब रखवारों को।
विकसित सब कृषक समाज हुआ तब, शिल्पों में भी वृद्धि हुई।
चरमरा गया था जो ढाँचा, उन सब में भी समृद्धि-हुई।
साधन-सुविधाएं बढ़ी खूब, व्यापार हुआ विकसित भारी।
अब विद्वानों के दिल बदले, कुल शांत हुई महामारी।
कवि वर्ग रचा साहित्य सुघड़, अब वाणी माँ भी मन प्रसन्न।
अनगिन कूलें खुदवाए थे, घर में न समाया, विपुल अन्न।
सब ओर शांति, सुख की वर्षा, लोगों के अधरों खुशी-गीत।
रानी ने धीरज कब त्यागा? तब सकल प्रजा ही बनी मीत।
परमार्थ ध्येय महारानी का, आत्मा को मित्र बनाया था।
जन-जन के मन में उसकी छवि, चरित्र पवित्र बनाया था।
पर अग्निपरीक्षा कहाँ अंत? रानी जी की मर गई सास।
वे ससुर मर गए थे पहले, अब मन रहता प्रति पल उदास।
तदनंतर मृत्यु सुता की भी, कुछ अंतर से दामाद मरे।
सर्वथा अकेली अब रानी तब, एक-एक कर याद करे।
पर धैर्य न छोड़ा था उसने, अपने कार्यों में सदा लीन।
जीवन तो जीना पड़ता है, पर जल बिन कैसे जिए मीन?
निष्क्रिय न एक भी पल को, वह आँसू आँखों की कोर बसे।
जब अपने चले गए सब ही, कब मन प्रसन्न? वह कहाँ हँसे?
अब सहचर उसके पुण्य कर्म, आत्मा को मित्र बनाया था।
नर के न हाथ में है कुछ भी, ऐसे मन को समझाया था।

साहस—उत्साह भरा मन में, शासन—दायित्व निभाया था।
 अब सब ही तो उसके अपने, उसको अब कौन पराया था?
 था प्रजा—भलाई लक्ष्य मात्र, मन, वचन, कर्म, सेवा—तत्पर।
 उलझनें आप ही दूर हुई उसके, मन—मंदिर बैठे—हर।
 था जीवन—लक्ष्य लोक—सेवा, परमार्थ—कार्य में लगी रही।
 वह मोक्ष—मार्ग की ओर चली, सोई कब? प्रतिपल जगी रही।
 फिर पूरे राज्य किया दौरा, आवश्यकता किस—किस की क्या—क्या?
 फिर पता लगाया था उसने, कठिनाई और समस्या क्या?
 विधवाओं की दयनीय दशा, समझो सब की सब ही अनाथ।
 जब जीवन दुर्दिन आ जाते तब, कोई देता नहीं—साथ।
 जब पति न रहे तब निराश्रिता, वंचित संपत्ति से भी नारी।
 नारी के जीवन दुख ही दुख, आँखों से देखे 'बनवारी'।
 कानून मानती बहन—बेटी सिर हाथ फिरा कर प्यार किया।
 अब जीवन—स्तर बदल गया, समझो पापों का हुआ शमन।
 जिसको जैसी आवश्यकता, सबकी झोली डाला था धन।
 तब सकल अनाथ—सनाथ बने, उसको ही दिया सहारा था।
 मंझदार—बीच कोई न रहा, सबको ही मिला किनारा था।
 स्त्री हो चाहे पुरुष—बाल, सबका ही हुआ बड़ा मंगल।
 सड़कों का भी निर्माण हुआ, लंबी—चौड़ी बिल्कुल समतल।
 सुविधा यात्रा—व्यापार हुई, जनता के कष्ट मिटे सारे।
 यदि गलत राह अपनाई तो, दण्डित होते थे रखवारे।
 सब चोर—लुटेरे गए जेल, भयभीत नहीं कोई भी जन।
 अब बचत, शक्ति की श्रम—धन की, दिखलाई पड़े कहाँ निर्धन?
 सड़कों के सकल किनारों पर, फल वाले वृक्षों के मेले।
 अब तक तो जनता दुखी रही, सबने ही भारी दुख झेले।
 गांवों में बनी अतिथिशाला, निर्माण धर्मशालाओं के।
 पक्के विद्यालय बने, खूब स्कूल बने बालाओं के।
 अति धर्मभावना का प्रचार फल—फूल बाग लगवाए थे।
 सब गांव अलंकृत से लगते जन—जन के मन को भाए थे।
 गौ शालाओं की प्रथा चली, हर घर में गैय्या का पूजन।

अब दूध—दही की कहाँ कमी? पवित्र भरा था सबके मन।
 औषधि घर भी खुलवाए थे, खुलवाई बहुत दानशाला।
 तब भूखा कोई नहीं बचा, मन—मस्त, जपें हर की माला।
 साहित्य कला—कौशल—विकास, इन पर भी जोर दिया भारी।
 अब पुरुष बढ़ गए थे आगे, पीछे भी कहाँ रही नारी?
 कठिनाई मिटी किसानों की, सब कुशल प्रबंधक लगवाए।
 सिंचन में कहाँ असुविधा थी? अनगिनत कूएं खुदवाए।
 सबको उपासना की सुविधा, बनवाए थे सुंदर मंदिर।
 भगवान राम—सीता—लक्ष्मण की, प्रतिमाएं जिनके अंदर।
 शिवशंकर—ब्रह्मा—विष्णु आदि, जिन—जिन की होती है पूजा।
 उन सबकी प्रतिमा लगी हुई, उनसे सुंदर न लगा दूजा।
 घी—दूध—दही का क्या घाटा? फल पके सुगंध उड़ाते थे।
 बालक हों, बूढ़े या जवान, सबके ही मन को भाते थे।
 तब सकल अलंकृत लगे गांव, शहरों—नगरों के क्या कहने?
 ऐसी कोई नारी न दिखी, तन जिसके सजे नहीं गहने।
 साधारण वस्त्र सजें तन पर, सोती धरती माँ की गोदी।
 तब अहंकार का नाम नहीं, सब उम्र पराए—हित खो दी।
 रानी करती मेहनत भारी, मन में कब रखती थी विकार?
 वह साध्वी, परम विरागी थी, प्रभु—भजती रहती बार—बार।
 नारी की महिमा बढ़ा रही, हम कह सकते हैं अद्वितीय।
 वह जीवन भर ही प्रथम रही, तब कैसे आ सकती द्वितीय?
 बात को समझना पाठकगण, ये अनुपम—अकथ कहानी है।
 ये वर्तमान की बात नहीं, ये दो सौ वर्ष पुरानी है।
 वह कर्मठ और सुयोग्य नारी, बचपन में घर था अति गरीब।
 पर ब्याही थी वह महलों में, इसको ही कहते हैं नसीब।
 उसका चरित्र, आदर्श सदा, दर्जा विशेष, पर साधारण।
 ऐसी नारी जो अनुपम है, कम पैदा करते नारायण।
 भगवान करें भारत भू पर, फिर से ऐसी देवी आए।
 दुनियाँ भर में चमके भारत, सिरमौर सभी का कहलाए।

गज़ल



सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चंडीगढ़

भर गए अब जख्म सारे, गम गुसारो को कहां।
मेरे यारों, राजदारों, जाँ निसारो हो कहां।

लड़कियों ने छेड़ दी है जंग अपनी आन की
ओ गँवारों, जुल्मकारों, दागदारों हो कहां।

चांद के पहलू में आकर रात नागिन सो गई
ऐ सितारों, राहदारों, होशियारों हो कहां।

इक नए शायर ने लूटी बज़्म पल में नज़्म की
लफ़्जकारों, छंदकारों, दामदारों हो कहां।

छीन लेंगी ये मशीनें हर हुनर इस हाथ का
दस्तकारों, काश्तकारों, कामगारों हो कहां।

एक मोबाइल है भारी जेहन—ओ—दिन पर आजकल
गुल्ली—डंडों, लूडो, कंचों के नज़ारों हो कहां।

बांट ली सारी विरासत छोड़कर सब वालिदैन
मां दुलारो, बाप प्यारो, ख्वास्तगारों हो कहां।



नवीन 'एकान्त' देया
निजी सचिव
भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

आओ खेलें होली

आओ खेलें होली, खुशियाँ मिल के बाँटें।
फाल्गुन रुत में प्रेम के पल इक दूजे संग बाँटे।।
आओ खेलें होली

कुछ गाल तुम रंगों हमारे, कुछ रंग हम भी बाँटे।
गुंजियों की मिठास चखाएँ, मठरी की नमकीन खिलायें।।
आओ खेलें होली

मेल मिलाप कराती होली, बैर भाव मिटाती होली।
ऊँच-नीच का भेद नहीं, ये भाव सिखाती होली।।
आओ खेलें होली

होली आई खुशियाँ लाई, रंगों की सौगात लाई।
अबीर गुलाल हवा उड़ाये, बसंत छोड़े नैनों से गोली।।
आओ खेलें होली

गली नुक्कड़ पे बच्चों की टोली, छुप के रंग लगायें।
फूफा ताऊ जी आज गले मिलके, भंग के रंग चढ़ायें।।
आओ खेलें होली

सजनी साजन संग खेले होली, भीगी है सजनी की चोली।
सैंया जी ने मारी पिचकारी, शर्म से लाल हो गई सजनी भोली।।
आओ खेलें होली आओ खेलें होली

आस्था अमात्य की



सुश्री आरती शर्मा
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन)
10, बहादुर शाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली

(यह काव्य रचना आधारित है प्राचीन भारत में मगध साम्राज्य के सक्षम और चतुर मंत्री अमात्य राक्षस पर, जो अपना राजधर्म, प्रजा हित के बजाय धूर्त सम्राट धनानंद के प्रति निष्ठा में समझता था। उस विनाशकारी निष्ठा का क्या परिणाम हुआ यह कविता उसे दर्शाती है)

मगध राज्य प्रति कटिबद्ध नहीं वो, क्योंकि
आस्था अमात्य की सम्राट के प्रति।

प्रजा कल्याण हेतु समर्पित नहीं वो, क्योंकि
निष्ठा अमात्य की सम्राट के प्रति।

विसर्जित कर दिया उसने अपना सामर्थ्य, क्योंकि
आसक्ति अमात्य की सम्राट के प्रति।

मुँह फेर लिया उसने जनाक्रोश से, क्योंकि
आसक्ति अमात्य की सम्राट के प्रति।

अवगुण भरे पड़े सम्राट में,
तनिक चेष्टा नहीं की उन्हें दूर करने की, क्योंकि
समर्पण अमात्य का सम्राट के प्रति।

है शत्रु खड़ा मगध द्वार पर,
चेष्टा नहीं सम्राट को चेताने की, क्योंकि
भाव अमात्य का सम्राट के प्रति।

बढ़ रहा था मगध विनाश की ओर,
नहीं रोक सका उस विनाश को वह, क्योंकि
समर्पित अमात्य सम्राट के प्रति।

पतंग



सुश्री मीना कुमारी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन)
10, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली

15 अगस्त पर पतंगों की बहार छाई है,
बाज़ारों में इक नई रौनक सी आई है,
हर रंग और आकृति की
पतंग दे रही दिखाई है,
दुकानदारों की खूब हो रही कमाई है,
छतों पर लोगों ने
अपनी चटाई बिछाई है,
डोर के साथ पतंग भी
ले रही अंगड़ाई है,
पतंगबाज़ी से खाने-पीने की
अपनी सुध-बुध भी बिसराई है,

आकाश पर टकटकी तो सबने लगाई है,
संगीत की धुन पर नाच रहे
सब बहनें और भाई है,
वो काटा, कट गई, कट गई की आवाज़
भी दे रही सुनाई है,
पतंग लूटने के चक्कर में,
बच्चों की हो रही कहीं लड़ाई है,
देखना इक न इक दिन हमारी भी,
डोर कटने को आई है,
ये पतंग सिखाती जीवन की
एक कड़वी सच्चाई है।।



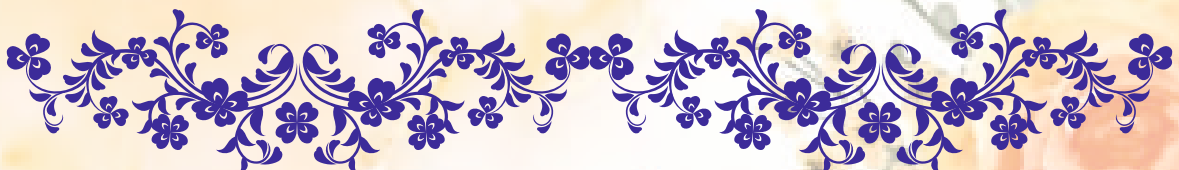
यादों के फूल



केदारनाथ प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (से.नि.)
जय महावीर कालोनी, संदलपुर,
पोस्ट महेन्दु, पटना

कौन कहता है कि आप चली गई,
आप जा नहीं सकती हैं मुझे छोड़कर।
अपनी यादों के सागर तट पर जब
मैं खड़ा होता हूँ
बरबस आपके पद-चिन्ह मिल जाते हैं।
खिल जाते हैं कमल,
पीपल के पत्ते और मौलसिरी के फूल,
बेलपत्र की टहनियां मुस्करा देती हैं,
केदली पत्र पर आपका नाम लिखकर
कोई रख जाता है भागवत के पृष्ठ पर।
माथे पर सरसराने लगते हैं चुंबन के फूल,
अधरों पर दस्तक देने लगती हैं गुदगुदाहट,
नाच जाता है सारा अतीत आंखों के आगे।
प्रेम की मांसलता, प्रेमिल सद्भाव।
आज भी देवदारु एवं अमलताश की
छाया में बीते आकुल दोपहरी
डाल देती है मन के गंगाजल में
गुलाब की पंखुड़ी।

जाने के बाद भी आप बची हुई हैं
जैसे हाथ पोंछ लेने के बाद भी
बची रह जाती है हथेलियों में नमी,
जैसे डालियों से टूट कर गिरने के बाद भी
बची रहती है फूलों में सुगंध।
इसलिये तो कहता हूँ कौन
कहता है आप चली गई।
मेरी वीणा के तारों से गुंजित
स्वर-लहरियों में गूंज रही हैं आप।
मैं आज भी देख रहा हूँ
हाथों में मेहंदी का गुंफन,
महावर से भीगे पांव,
सिंदूर की लालिमा में आरक्षित प्रीत पल्लव,
बनारस की रेशमी साड़ी,
गहराई रातों के कहकहे,
वातायन से झांकते चांद की मोहकता।
नहीं, आप नहीं जा सकती है मुझे छोड़कर।



मैं पिता



मुनीष भाटिया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(एएमजी-1 अनुभाग)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़-160020

आज मुझसे मेरी संतान,
करती प्रश्न यक्ष सा
मेरी ही परवरिश पर
किया क्या तुमने
हमारे लिए,
सिवाए देने के जन्म हमें!
सवाल वाजिब ही है
यूँ रात-रात भर जगना
और गीला बिस्तर
उठ-उठ देखने भर से
दायित्व माँ-बाप के
खत्म तो होते नहीं!
पेट अपना काट कर
ख्वाहिशों को
कभी आँख के तारों की
ना बुझने दिया,
... पर पेट तो बच्चों का अपने
पशु-पक्षी भी भरते हैं
लिहाजा हमने
कौन सा एहसान कर दिया,
बात सही है
यह भी लाडलों की
किया कुछ नहीं
सिवाए देने जन्म के तुम्हें...!
अपनी तमन्नाओं का दमन कर
हैसियत से बढ़ कर

हसरत उनकी
पूरी करने की
ताउम्र कोशिश की,
...पर ये बात तो कोई
जताने की ना थी!
हाँ... मैं पिता मजबूत था,
दर्द में बच्चों के रोने पर
आँख की नमी को अपनी,
कभी दुनिया को
ना दिखला सका,
तुम्हारे सुख की खातिर
हस्ती खुद की
मैं भूल गया,
क्योंकि... मैं पिता हूँ,
फर्ज था मेरा
मैं ही तो जिम्मेदार था!
क्या भला क्या बुरा,
सीखा जो कुछ भी
तुमने जीवन में,
मैं ही तो जिम्मेदार हूँ,
काश... बन जाता मैं भी
इक इन्सान मतलबी
जो सोच पाता
कभी अपने बारे में भी,
जिंदगी मिली है इक बार

उसको तो खुद जी जाता मैं!
जिस चेहरे की कान्ति पर छाई
आज अनगिनत
लकीरें शिकन की,
शिकायत करें वो
जीवन से मेरे
कभी तो महसूस करता
सुख को अपने
खुशनुमा जीवन में,
किया परवान जीवन अपना
बस जिगर के
टुकड़ों की खातिर ही!
सही है सवाल लाडलों का,
सब किया हमने
अपने मोह के कारण ही,
लाजिमी दोषी मात-पिता हैं,
क्यूँ करते कुर्बान
जीवन अपना,
अपनी संतान की
मीठी मुस्कान की खातिर,
अपने पैरों पर हो सको खड़े
ताकि फिर अभिमान बनो,
किन्तु था स्वार्थी मैं ही
जो देखा सुख अपना
उनके मुस्तकबिल में ही...!

मेरे पापा

सुश्री ज्योति यादव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
तमिलनाडु, चेन्नै

पापा ने उंगली पकड़कर चलना सिखाया,
इस पूरे जहां से मुझे वाकिफ कराया।
कभी प्यार दिखाया नहीं,
पर हमेशा दिल से निभाया,
उनके गले से निवाला भी न उतरा,
अगर मेरी आँख से आँसू जो आया।
फूलों की तरह पाला मुझे,
कली की तरह सहेज कर रखा,
अगर कभी कोई आई मुसीबत,
जो उसको मेरे से दूर ही रखा।
लोग कहते हैं कि मैं,
शक्ल में पापा से मिलती हूँ
पर मैं तो असल जिंदगी में भी,
उनके जैसा बनना चाहती हूँ।

जब—जब जिंदगी ने इम्तिहान लिया,
तो पापा ने हर इम्तिहान सीना तानकर दिया।
लेकिन जब मेरी विदाई की बारी थी आई,
तो खूब रोकने के बाद भी,
उनकी आँखें छलक ही आईं।
“बेटा जा तू हमेशा खुश रहे”
बस ये ही बात थी जो उनकी जुबां तक आई,
और फिर गले से लगाकर अपने,
कलेजे के टुकड़े की कर दी विदाई।
पापा—आप मेरी हिम्मत हो, विश्वास हो,
हौसला हो और ताकत हो,
आज मैं जहाँ हूँ जैसी हूँ
उसकी आप ही एक वजह हो।

दो बेटियों की माँ



सुश्री कुसुम लता
वरिष्ठ अनुवादक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली

जिंदगी के ग्यारह साल थे बीते,
माँ कहलाने का इंतजार करते-करते,
अपने मन को समझाते-समझाते,
कि कोई नहीं, थोड़ा सब्र और हैं करते।
जिंदगी के ग्यारह साल थे बीते,
माँ कहलाने का इंतजार करते-करते।।

सब्र पूरा हुआ, इंतजार खत्म हुआ,
दो नन्हीं परियों ने मेरे यहां जन्म लिया।
मेरे सूने पड़े आँगन को भर दिया
अपने रुदन-संगीत से, फूलों सी मुस्कान से,
और ग्यारह साल बाद,
मेरा माँ कहलाने का इंतजार पूरा हुआ।।

पर अब भी हर चेहरे पर ये उदासी क्यों,
आज बातें हो रही हैं तो शब्द इतने भारी क्यों,
पहले पहल तो यूँ लगा,
कि ये उदासी नहीं थकान है,
शब्द भारी नहीं, बल्कि सबके मन में
असीम खुशियों का उफान है।
पर नहीं, ये तो उदासी और क्रंदन ही है।
ओह! बेटा नहीं, बेटियाँ जो पैदा हो गई हैं।

और अगले ही पल, ग्यारह साल का मेरा सूनापन
एक और अधूरेपन में बदल गया
अभागी है, इतने साल बाद माँ बनी,
और फिर एक भी नहीं
दो-दो लड़कियों को जन्म दिया।
चिंता मत करना, दुखी मत होना,
भगवान की मर्जी है,
और भी ना जाने क्या-क्या कह दिया।
सैकड़ों कॉल और मैसेज बधाई के आए,
केवल 9 ने कहा हम आज बहुत खुश हैं
कि आपकी गोद भर गई,
कि आपके घर बेटियाँ आई।
बाकी ने बधाई तो दी,

पर एक 'काश' को बीच में ले आए।
अरे, दोनों नहीं तो
कम से कम एक बेटा हो जाता,
इतने साल बाद ही सही
परिवार तो पूरा हो जाता।

सुनें सब, मत जताओ मेरे सामने
कि बेटियाँ बोझ हैं, जिम्मेदारी हैं,
थालियाँ, ढोल भले ही मत बजाओ,
पर छुप-छुप कर यूँ आंसू भी मत बहाओ,
ना दुखी हो, ना इस 'काश' को बीच में लाओ।

क्योंकि
एक बेटा को अपनी दो बेटियों की
परवरिश करने के लिए सक्षम
बनाया है उसके माँ और पिता ने,
उसको कभी बोझ नहीं समझा,
इसलिए वो जानती है,
कि बेटियाँ बोझ नहीं, संजोग होती हैं।

मैं सौभाग्य मानती हूँ अपना
कि मैंने बेटियों को जन्म दिया,
सालों से सूनी पड़ी कोख से
मैंने अपने दो प्रतिरूप को जन्म दिया।
मैं पूरी हूँ, मेरा परिवार भी पूरा है,
और हाँ, बात बेटों या बेटियों की नहीं,
बस माँ कहलाना ही मेरी संपूर्णता है।

"दो बेटियों की माँ; एक सम्पूर्ण माँ"

संकल्प



श्रीमती सोनिया बाफिला
फ्लैट नं. जी-3, 905, भारत सिटी,
नियर टीला मोड थाना,
गाजियाबाद (लोनी)

संकल्प किया है, पूर्ण करें,
बढ़े हैं कदम, भरपूर चलें,
हर कदम आगे बढ़ें,
मंजिल का पता, खुद आप करें,
जो बीत गया, जीवन जिया,
थम गया, विचरण करें,
जीवन का सार ना अधूरा रहे
ठाना है अगर पूरा करें,
वासता है पहाड़ों से तेरा,
तो चट्टानों से क्या भय करें,
संकल्प किया है, पूर्ण करें,
बढ़े हैं कदम, भरपूर चलें।
फिर क्यों रुकें जिद पे अड़े
गिरने का ना संशय करें,
जो गिर गया, तो क्या गिला,
उठ कर नया संकल्प करें,
गढ़ गये हों पैर, जमी पे तो क्या?
बंधन में क्यों बंधे, उड़ने का दम भरें,
भार हो गया भारी तो क्या?
सपनों की चाह ऊँची करें,
संकल्प किया है, पूर्ण करें,
बढ़े हैं कदम भरपूर चलें।

गुम गई है राह तो
ढूढ़ने का भी ज्ञान लें,
आयेंगी अनगिनत मुश्किलें,
मुश्किल से ही पर हल करें,
खुद का मन ही खुद पर हावी रहे,
हावी नहीं प्रभावी करें,
है वही वो बाँटे है जो भी,
पर खुद का ना बाँट करें,
संकल्प किया है पूर्ण करें,
बढ़े हैं कदम, भरपूर चलें।
फिर लिखें एक दास्ताँ रोज नई
कल की कहानी पे ना नाज करें,
ताल एक और आगे करें,
पंक्तियों की कतार आरोह करें
संकल्प पूर्ण अगर किया नहीं,
यह जीवन व्यर्थ गया यूँ ही,
फिर हर क्षण दुःख ही पायेगा,
खिसियानी खंबा नोचता रह जाएगा,
संकल्प किया है पूर्ण करें,
बढ़े हैं कदम, भरपूर चलें,
कदम-कदम मंथन करें,
आगे ही और आगे बढ़ें।

बचपन

अंजीत कुमार

ऑकड़ा प्रविष्टि प्रचालक ग्रेड-बी
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
मध्य रेल, मुंबई छ.शि.म.ट., मुंबई-400001

जब-जब गुजरे उन गलियों से,
वो जमाना याद आता है ।
वो बचपन, वो सौँधी मिट्टी की खुशबू
वो कागज की नाव याद आता है ।।

वो बारिश की रिमझिम बूँदों की चमक,
वो नजारा याद आता है ।
जब-जब गुजरे उन गलियों से,
वो जमाना याद आता है ।।

वो गली की मोड़ पे पुराना मकान,
वो टूटी खिड़कियों और दरवाजे की ओट,
वो सिकड़ी की खड़खड़ाहट,
न जाने और क्या-क्या याद आता है,
वो मेरा शहर याद आता है,
जब-जब गुजरे उन गलियों से,
वो जमाना याद आता है ।।

माँ के आँचल से लिपटकर दो रुपये माँगना,
वो जिद करता बचपन याद आता है ।
माँ की रोटी जो कभी घटती नहीं,
वो जायका याद आता है ।।

क्या कहूँ क्या-क्या याद आता है,
वो शहर, वो वक्त, वो लम्हा याद आता है ।
जब-जब गुजरे उन गलियों से,
वो जमाना याद आता है ।।

शब्द असरदार होते हैं

सुमित कुमार—।।।

स.म.ले.प.अ., अंबाला मंडल
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
उत्तर रेलवे, बड़ौदा हाउस, नई दिल्ली

मत लेना इनको हल्के में,
जनाब शब्द असरदार होते हैं।
कुछ माधुर्य भरते जीवन में,
हर्षित, आह्लादित करते, कुछ चुभन पैदा करते
और कई तो नुकीले धारदार होते हैं।
जनाब शब्द

कुछ प्रेम से भरे हुए हैं
अंतरात्मा को सिंचित करके
इन्होंने बंजर दिल भी हरे किए हैं
आजकल ऐसे शब्दों में कम ही व्यवहार होते हैं।
जनाब शब्द

कुछ क्रोध, द्वेष रूपी विष से बुझे हुए
प्रतिशोध की अग्नि में तपे हुए
एकदम फफोलेदार होते हैं।
जनाब शब्द

वैसे ये दिखते हैं बेजान
पर ज़बान की प्रत्यंचा पर चढ़कर
मचा सकते हैं घमासान
ये स्वयं में पूरे किरदार होते हैं।
जनाब शब्द

इनके प्रयोग में न बने लापरवाह
कर सकते हैं ये जीवन तबाह
पहले तोलें फिर बोलें
ऐसे लोग सच में समझदार होते हैं।
जनाब शब्द असरदार होते हैं।

पंजीकरण सं.-2 एल (9)/8747177 / 87(90)



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124